# सच्चा दावा हर पहलू से चमकता है

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई पर जितनी भी बात की जाए कम है आज भी ज़मीन का एक बड़ा हिस्सा एक बड़ा समूह आप पर ईमान लाने से वंचित है, इसमें मायूसी की कोई बात नहीं दलीलों और तर्कों से मैदान हम जीत चुके हैं और विजय का यह मैदान 125 साल से हमारे पास है और हमेशा हमारे पास ही रहेगा। जहां तक संख्या के दृष्टि कोण से ग़ालिब होने का सवाल है वह दिन भी अब दूर नहीं। सैयदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जमाअत अहमदिया के संख्या के दृष्टिकोण से विजय की भविष्यवाणी भी की है और फरमाया है कि अल्लाह तआला इस जमाअत को समस्त देशों में फैला देगा और इज्जत और दलील के दृष्टिकोण से सब पर विजय प्रदान करेगा। इज्जत और दलील का विजय जैसा कि हम बता चुके हैं अभी हमें हासिल है संख्या की विजय के लिए जहां तक समय और अवधि का सवाल है कि कब तक हासिल होगा। यह भविष्यवाणी भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने की है। आपने फरमाया कि अभी तीसरी सदी आज के दिन से पूरी नहीं होगी कि ईसा की प्रतीक्षा करने वाले क्या मुसलमान और क्या ईसाई अत्यंत निराश और कुधारणायुक्त होकर इस झूठी आस्था को छोड़ देंगे और दुनिया में एक ही धर्म होगा और एक ही पेशवा मैं तो एक बीज बोने आया हूं सो मेरे हाथ से वह बीज बोया गया और अब वह बढ़ेगा और फ़ूलेगा और कोई नहीं जो उसको रोक सके। (तज़्किरतुश्शहादतैन, रूहानी ख़ज़ाइन जिल्द 20 पृष्ठ 67)

तज़्किरतुश्शहादतैन 1903 में लिखित है आज इस भविष्यवाणी को 115 साल बीत चुके हैं तीन शताब्दियां पूर्ण होने में 185 साल शेष रह गए हैं। 185 साल के बाद समस्त संसार में जमाअत अहमदिया का प्रभुत्व होगा। अल्लाह चाहे तो इससे कम समय में अहमियत दुनिया पर विजयी हो जाएगी। हम अल्लाह से यही उम्मीद रखते हैं और दुआएं करते हैं कि अल्लाह इस्लाम अहमदियत के प्रभुत्व को निकट से निकट कर दे। आमीन

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई की दलीलें बहुत हैं हम क्या बयान करें और क्या न करें जिस पहलू पर भी विचार करते हैं उनसे हज़रत साहिब की सच्चाई साफ नज़र आती है। वह गरीब और कमज़ोर आवाज़ जो क़ादियान की बस्ती से उठी थी आज दुनिया के 112 देशों में फैल चुकी है। दुनिया आज जमाअत को जानने लगी है और उसे बहुत ही सम्मान और क़दर की निगाह से देखती है। हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहब विभिन्न देशों के पार्लियामेंट में इस्लाम की सुंदर और शांति प्रिय शिक्षा पर बहुत से भाषण दे चुके हैं। दुनिया आपको 'शांति के दूत' के तौर पर जानने लगि है और यह स्वीकार करती है कि आज दुनिया को आपके नेतृत्व और आपकी शिक्षा और आपके मार्गदर्शन की आवश्यकता है। हजूर अनवर ने अभी अक्टूबर 2018 में अमेरिका और कोयटामाला की यात्रा की है। दिनांक 21 अक्टूबर 2018 इतवार के दिन हुजूर अनवर वाशिंगटन से ऐव्टन के लिए रवाना हुए 2:35 पर यूनाइटेड एयरलाइन की जहाज़ यू ए 484 वाशिंगटन के दुल्लास एयरपोर्ट से ह्योस्टन के जॉर्ज बुश इंटरनेशनल एयरपोर्ट के लिए प्रस्थान किया उड़ान भरने के थोड़ी देर बाद पायलट केबिन से यह ऐलान हुआ कि हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद हमारे जहाज़ में यात्रा कर रहे हैं और हम उनका स्वागत करते हैं साथ ही कहा गया कि हुज़ूर शांति के वैश्विक दूत (वर्ल्ड एंबेसडर ऑफ पीस) हैं और संसार में धार्मिक स्वतंत्रता, समभाव और शांति की स्थापना के लिए प्रयासरत हैं।

## साप्ताहिक हिन्दी बदर मसीह मौऊद[अ.] नम्बर


| क्रम | विषय सूची | पृष्ठ |
|---|---|---|
| 1 | संपादकीय एवं विषय सूची | 1 |
| 2 | अगर वह झूठा निकला तो निसंदेह उसका झूठ उसी पर पड़ेगा और अगर वह सच्चा हुआ तो जिन चीज़ों..... | 2 |
| 3 | तुम में से जो जीवित रहेगा वह ईसा इब्ने मरियम का ज़माना पाएगा वही इमाम महदी और हकम और अदल होगा..... | 3 |
| 4 | ख़ुदा तआला ने अपने वादे के अनुसार ऐसा ही किया और इस विनीत को चौदहवीं शताब्दी के सर पर भेजा..... | 4 |
| 5 | ख़ुत्बा जुम्अ: सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ | 05 |
| 6 | हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जीवनी घरेलु जीवन को बेहतरीन बनाने के लिए घटनाओं के आलोक में | 10 |
| 7 | हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की स्वीकृत दुआओं के ईमान वर्धक वृतांत | 16 |
| 8 | हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई, समय की मांग और ख़ुदाई सहायता के आलोक में | 21 |
| 9 | बा-शरह चन्दा और निज़ामे वसीयत का महत्व और बरकतें | 27 |


हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावा की सच्चाई के बारे में बयान कर रहे थे कि आप की सच्चाई के दलीलें बहुत हैं। क़ुरान और हदीस में वर्णित भविष्यवाणियों के दृष्टिकोण से, उम्मत के बुज़ुर्गों की बयान की हुई भविष्यवाणियों के दृष्टिकोण से, स्वयं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पूरी होने वाली भविष्यवाणियों और आपके द्वारा प्रकट होने वाले चमत्कार और निशानों के दृष्टिकोण से, आपके बाद खिलाफत अला मिनहाज ए नबूवत के क़याम के दृष्टिकोण से, आपके ख़लीफाओं के द्वारा पूरी होने वाली भविष्यवाणियों और चमत्कारों और निशानों के दृष्टिकोण से, जमाअत की तरक्की और फैलाव के दृष्टिकोण से, जमाअती प्रबंध के दृष्टिकोण से, प्रचार और प्रसार के दृष्टिकोण से, एक खिलाफत के हाथ में जमा होने के दृष्टिकोण से, मुबल्लिग़, मुअल्लिम, और दाईन इलल्लाह के दृष्टिकोण से, दुनिया के 20 देशों में जलसा सालाना के आयोजन और उसकी उन्नति और उसके प्रभाव के दृष्टिकोण से, इस्लाम के लिए अपने आप को वक़्फ़ करने के लिए वाकिफीने नौ की महान फौज तैयार होने के दृष्टिकोण से, चंदों और आर्थिक कुर्बानियां के दृष्टिकोण से, शत्रुओं के अपमान और रुसवाई, नाकामी और तबाही के दृष्टिकोण से आप की सच्चाई प्रकाशमान दिन के समान सिद्ध होती है।

## जिसने भी मसीह मौऊद के बारे में मौत का इल्हाम प्रकाशित किया वह मर गया

हज़रत मिर्जा साहब फरमाते हैं-

"कुछ मस्जिदों में मेरे मरने के लिए नाक रगड़ते रहे, कुछ ने जैसा कि मौलवी ग़ुलाम दस्तगीर क़सूरी ने अपनी पुस्तक में और मौलवी इस्माईल अलीगढ़ी ने मेरे बारे में अटल आदेश लगाया कि यदि वह झूठा

शेष पृष्ठ 32 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

# अगर वह झूठा निकला तो निसंदेह उसका झूठ उसी पर पड़ेगा और अगर वह सच्चा हुआ तो जिन चीज़ों से वह तुम्हें डराता है उनमें से कुछ अवश्य तुम्हें आ पकड़ेंगी

***(अल्लाह तआला के कथन)***

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۪ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِي ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا ○ يَعْبُدُوْنَنِيْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِيْ شَيْـًٔا ○ وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ○

(अन्नूर 56) तुम में से जो लोग ईमान लाए और नेक कर्म किए उनसे अल्लाह ने पक्का वादा किया है कि उन्हें अवश्य धरती पर ख़लीफा बनाएगा जैसा कि उसने उन से पहले लोगों को खलीफा बनाया और उनके लिए उनके धर्म को जो उसने उनके लिए पसंद किया अवश्य दृढ़ता प्रदान करेगा और उनके भय की अवस्था को अवश्य अमन की अवस्था में बदल देगा। वह मेरी उपासना करेंगे मेरे साथ किसी को भागीदार नहीं ठहराएंगे और जो उसके बाद भी नाशुक्री करें तो यही वे लोग हैं जो नाफरमान हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं हे प्यारो! जब कि अनादि काल से अल्लाह की सुन्नत यही है कि ख़ुदा तआला दो कुदरतें दिखाता है ताकि विरोधियों की दो झूठी खुशियों को मिट्टी में मिला दे। सो अब संभव नहीं है कि ख़ुदा तआला अपनी इस अनादि सुन्नत को छोड़ दे। इसलिए तुम मेरी इस बात से जो मैंने तुमसे कही है, दुखी मत हो और तुम्हारे दिल परेशान न हो जाएं क्योंकि तुम्हारे लिए दूसरी कुदरत का भी देखना आवश्यक है और उसका आना तुम्हारे लिए बेहतर है क्योंकि वह शाश्वत है जिस का सिलसिला क़यामत तक समाप्त नहीं होगा और वह दूसरी कुदरत नहीं आ सकती जब तक मैं ना जाऊं लेकिन मैं जब जाऊंगा तो फिर ख़ुदा उस दूसरी कुदरत को तुम्हारे लिए भेज देगा जो हमेशा तुम्हारे साथ रहेगी। (अल वसीयत, रूहानी ख़ज़ाइन जिल्द 20 पृष्ठ 305)

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ ○ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ○ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ ○ فَمَا مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ عَنْهُ حٰجِزِيْنَ ○

अल हाक्क: 45-48)

अनुवाद - और अगर वह कुछ बातें झूठ के तौर पर हमारी ओर संबंध कर देता तो हम उसे ज़रूर दाहिने हाथ से पकड़ लेते फिर निसंदेह हम उस की रगे जान काट देते फिर तुम में से कोई एक भी उससे (हमें) रोकने वाला न होता।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं- ख़ुदा तआला पवित्र क़ुर्आन में एक नंगी तलवार की भांति यह आदेश देता है कि यह नबी यदि मुझ पर झूठ बोलता और किसी बात में झूठ बनाता तो मैं उसकी हृदय को रक्त ले जाने वाली धमनी काट देता और वह इतने लम्बे समय तक जीवित न रह सकता। अत: अब जब हम अपने इस मसीह मौऊद को इस पैमाने से नापते हैं तो बराहीन अहमदिया के देखने से सिद्ध होता है कि यह दावा ख़ुदा की ओर से होने तथा ख़ुदा से वार्तआलाप का दावा लगभग तीस वर्ष से है और इक्कीस वर्ष से बराहीन अहमदिया प्रकाशित है। फिर यदि इस अवधि तक इस मसीह का मृत्यु से अमन में रहना उसके सच्चे होने पर प्रमाण नहीं है तो इस से अनिवार्य होता है कि नऊज़ुबिल्लाह नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तेईस वर्ष तक मृत्यु से सुरक्षित रहना आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सच्चा होने पर भी प्रमाण नहीं है, क्योंकि जबकि ख़ुदा तआला ने यहां एक झूठे तौर पर नबी का दावा करने वाले को तीस वर्ष तक ढील दी और

لَوْ لَقَوَّلَ عَلَيْنَا (अल हाक़्क़: - 45)

के वादे का कुछ ध्यान न रखा तो इसी प्रकार नऊज़ुबिल्लाह यह भी अनुमान के निकट है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी झूठा होने के बावजूद ढील दे दी हो, किन्तु आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का झूठा होना असंभव है। अत: जो बात असंभव को अनिवार्य करे वह भी असंभव है और स्पष्ट है कि यह क़ुर्आन का तर्क नितान्त स्पष्ट तभी ठहर सकता है जब कि वह व्यापक नियम (क़ाइद: कुल्लिय:) माना जाए कि ख़ुदा उस झूठ बनाने वाले को जो प्रजा को गुमराह करने के लिए ख़ुदा की ओर से मामूर होने का दावा करता हो कभी ढील नहीं देता। क्योंकि इस प्रकार से उसकी बादशाहत में गड़बड़ी पड़ जाती है तथा सच्चे और झूठे में अन्तर जाता रहता है। (रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 17 तोहफा गोलड़विया पृष्ठ 42)

وَقَالَ رَجُلٌ مُّؤْمِنٌ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ اِيْمَانَهٗٓ اَتَقْتُلُوْنَ رَجُلًا اَنْ يَّقُوْلَ رَبِّيَ اللّٰهُ وَقَدْ جَآءَكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ مِنْ رَّبِّكُمْ ؕ وَاِنْ يَّكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهٗ ۚ وَاِنْ يَّكُ صَادِقًا يُّصِبْكُمْ بَعْضُ الَّذِيْ يَعِدُكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ ○

(29 अल मोमिन)

अनुवाद- और फिरौन की कौम में से एक मोमिन मर्द ने कहा जो अपने ईमान को छुपाए हुए था कि क्या तुम केवल इसलिए इस व्यक्ति को कत्ल करोगे कि वह कहता है कि मेरा रब अल्लाह है और वह तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से खुले खुले निशान लेकर आया है। अगर वह झूठा निकला तो निसंदेह उसका झूठ उसी पर पड़ेगा और अगर वह सच्चा हुआ तो जिन चीजों से वह तुम्हें डराता है उनमें से कुछ अवश्य तुम्हें आ पकड़ेंगी। निसंदेह अल्लाह उसे हिदायत नहीं दिया करता जो हद से बढ़ा हुआ और अत्यंत झूठा हो।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं- "ख़ुदा तआला के नेक बन्दों और अवतारों के मुकाबले में हर प्रकार की कोशिशें उन को कमज़ोर करने के लिए की जाती हैं लेकिन ख़ुदा उनके साथ होता है वे समस्त कोशिशें मिट्टी में मिल जाती हैं। ऐसे अवसर पर कुछ अच्छे स्वभाव के लोग भी होते हैं जो कह देते हैं कि अर्थात

وَاِنْ يَّكُ صَادِقًا يُّصِبْكُمْ بَعْضُ الَّذِيْ يَعِدُكُمْ

(अगर यह सच्चा होगा तो जो यह कहता है वह तकलीफें तुम्हें अवश्य पहुंचेंगी। सच्चों की सच्चाई स्वयं उनके लिए एक ज़बरदस्त सबूत और दलील होता है और झूठे का झूठ ही उसको तबाह कर देता है। अत: उन लोगों को मेरे विरोध से पहले कम से कम इतना ही सोच लेना चाहिए था कि ख़ुदा तआला की किताब में यह एक रास्ता सच्चे की पहचान का रखा गया है परंतु अफसोस तो यह है कि यह लोग क़ुरआन पढ़ते हैं मगर उनके हलक से नीचे नहीं उतरता।" (तफसीर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जिल्द 3 तफसीर सूर: अल मोमिन पृष्ठ 199)

☆ ☆ ☆

# तुम में से जो जीवित रहेगा वह ईसा इब्ने मरियम का ज़माना पाएगा वही इमाम महदी और हकम और अदल होगा जो सलीब को तोड़ेगा और सूअर को कत्ल करेगा

## (उपदेश हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम)

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ : كَیْفَ اَنْتُمْ اِذَا نَزَلَ ابْنُ مَرْیَمَ فِیْكُمْ وَاِمَامُكُمْ مِنْكُمْ وَفِیْ رِوَایَةٍ فَاَمَّكُمْ مِنْكُمْ

(बुख़ारी किताबुल अम्बिया बाब नुज़ूल ईसा इब्ने मरियम)

अर्थात हज़रत अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया तुम्हारी हालत कैसी नाज़ुक होगी जब इब्ने मरियम अर्थात मसीह का समरूप तुम में अवतरित होगा जो तुम्हारा इमाम होगा और तुम में से होगा। एक और रिवायत में है कि तुम में से होने के कारण वह तुम्हारा इमाम होने के कर्तव्यों का निर्वाहन करेगा।

عَنْ نَافِعٍ قَالَ : ذَكَرَ النَّبِیُّ صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ ..... أَرَانِیْ اللَّیْلَةَ عِنْدَ الْكَعْبَةِ فِی الْمَنَامِ فَاِذَا رَجُلٌ اٰدَمُ كَاَحْسَنِ مَا یُرٰی مِنْ اُدْمِ الرِّجَالِ تَضْرِبُ لِمَّتُهٗ بَیْنَ مَنْكِبَیْهِ رَجِلُ الشَّعَرِ یَقْطُرُ رَأْسُهٗ مَاءً وَاضِعًا یَدَیْهِ عَلٰی مَنْكِبَیْ رَجُلَیْنِ وَهُوَ یَطُوْفُ بِالْبَیْتِ فَقُلْتُ مَنْ هٰذَا فَقَالُوْا هٰذَا الْمَسِیْحُ ابْنُ مَرْیَمَ ثُمَّ رَاَیْتُ رَجُلًا وَرَاءَهٗ جَعْدًا قَطَطًا اَعْوَرَ عَیْنِ الْیُمْنٰی كَاَشْبَهِ مَنْ رَاَیْتُ بِابْنِ قَطَنٍ وَاضِعًا یَدَیْهِ عَلٰی مَنْكِبَیْ رَجُلٍ یَطُوْفُ بِالْبَیْتِ فَقُلْتُ مَنْ هٰذَا فَقَالُوْا هٰذَا الْمَسِیْحُ الدَّجَّالُ

बुख़ारी किताबुल अम्बिया, मुस्नद अहमद, जिल्द 2) (पृष्ठ 39, हदीक़तुस्सालिहीन पृष्ठ 894

अर्थात हज़रत नाफ़ेअ वर्णन करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया एक रात मैंने स्वप्न में देखा कि मैं पवित्र काबा के पास हूं। क्या देखता हूं कि एक गेंहुए रंग का खूबसूरत आदमी है, बाल कंधों तक पहुंच रहे हैं और सीधे और साफ हैं जिनसे पानी के कतरे टपकते नज़र आते हैं। वह अपने हाथ दो आदमियों के कंधों पर रखे हुए अल्लाह के घर का तवाफ कर रहा है। मैंने पूछा यह कौन है लोगों ने बताया मसीह इब्ने मरियम है फिर मैंने उनके पीछे एक और आदमी देखा घुंघराले बाल, सख्त चमड़ी, दाएं आंख कानी, इब्ने क़तन से मिलती जुलती शक्ल है और एक आदमी के दोनों कंधों पर अपने हाथ रखे काबा के इर्द-गिर्द घूम रहा है। मैंने पूछा यह कौन है लोगों ने कहा यह मसीहुद्दज्जाल है। ( स्वप्न में हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जो दृश्य दिखाया गया उसमें काबे के तवाफ से अभिप्राय है कि मसीह अल्लाह के घर की सुरक्षा और उसकी शान को बुलंद करने के लिए प्रयत्न करता रहेगा और दज्जाल काबा की बर्बादी का प्रयत्न करेगा।)

عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ قَالَ : لَا الْمَهْدِیُّ اِلَّا عِیْسَی بْنُ مَرْیَمَ ۔

(इब्ने माज्जा बाब शिद्दतुज्ज़मान पृष्ठ 257, मिस्री कंज़ुल उम्माल जिल्द 7 पृष्ठ 186)

अर्थात- हज़रत अनस वर्णन करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया ईसा अलैहिस्सलाम के सिवा और कोई महदी नहीं (अर्थात् मसीह अलैहिस्सलाम ही महदी होंगे क्योंकि महदी का कोई अलग अस्तित्व नहीं है।)

یُوْشِكُ مَنْ عَاشَ مِنْكُمْ اَنْ یَّلْقٰی عِیْسَی بْنَ مَرْیَمَ اِمَامًا مَهْدِیًّا حَكَمًا عَدْلًا یَكْسِرُ الصَّلِیْبَ وَیَقْتُلُ الْخِنْزِیْرَ

मुस्नद अहमद, जिल्द 2 पृष्ठ 156)

अर्थात- तुम में से जो जीवित रहेगा वह (इंशा अल्लाह तआला) ईसा इब्ने मरियम का ज़माना पाएगा वहीं इमाम महदी और हकम और अदल होगा जो सलीब को तोड़ेगा और सूअर को क़त्ल करेगा।

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: لَا تَقُوْمُ السَّاعَةُ حَتّٰی یَنْزِلَ عِیْسَی بْنُ مَرْیَمَ حَكَمًا مُقْسِطًا وَاِمَامًا عَدْلًا فَیَكْسِرُ الصَّلِیْبَ وَیَقْتُلُ الْخِنْزِیْرَ وَیَضَعُ الْجِزْیَةَ ویفیض الْمَالَ حَتّٰی لَا یَقْبَلَهٗ اَحَدٌ۔

(सुनन इब्ने माजा किताबुल फितन बाब फितनतुद्दज्जाल व ख़ुरूज ईसा इब्ने मरियम)

अर्थात- हज़रत अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जब तक ईसा इब्ने मरियम जो न्यायप्रिय स्वभाव का शासक और अदल करने वाले इमाम होंगे, अवतरित होकर नहीं आते तब तक क़यामत नहीं आएगी। (जब वह अवतरित होंगे तो) वह सलीब को तोड़ेंगे, सूअर को क़त्ल करेंगे, जिज़िया के रिवाज को समाप्त करेंगे और ऐसा माल वितरित करेंगे जिसे लोग स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं होंगे।

عَنْ حُذَیْفَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ : تَكُوْنُ النُّبُوَّةُ فِیْكُمْ مَا شَآءَ اللهُ اَنْ تَكُوْنَ ثُمَّ یَرْفَعُهَا اللهُ تَعَالٰی ثُمَّ تَكُوْنُ خِلَافَةٌ عَلٰی مِنْهَاجِ النُّبُوَّةِ مَا شَآءَ اللهُ اَنْ تَكُوْنَ ثُمَّ یَرْفَعُهَا اللهُ تَعَالٰی ثُمَّ تَكُوْنُ مُلْكًا عَاضًّا فَتَكُوْنُ مَا شَآءَ اللهُ اَنْ تَكُوْنَ ثُمَّ یَرْفَعُهَا اللهُ تَعَالٰی ثُمَّ تَكُوْنُ مُلْكًا جَبْرِیَّةً فَیَكُوْنُ مَا شَآءَ اللهُ اَنْ یَكُوْنَ ثُمَّ یَرْفَعُهَا اللهُ تَعَالٰی ثُمَّ تَكُوْنُ خِلَافَةٌ عَلٰی مِنْهَاجِ النُّبُوَّةِ ثُمَّ سَكَتَ

मुस्नद अहमद, जिल्द 4) (पृष्ठ 273

अर्थात- हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि अल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया तुम में नबूवत क़ायम रहेगी जब तक अल्लाह चाहेगा फिर वह उसको उठा लेगा और ख़िलाफ़त अला मिनहाजे नबूवत क़ायम होगी। फिर अल्लाह तआला जब चाहेगा इस नेमत को भी उठा लेगा फिर उसकी तक़दीर के अनुसार कष्टदायक शासन स्थापित होगा जिससे लोग दुखी होंगे और कठिनाई महसूस करेंगे जब यह दौर समाप्त होगा तो उसकी दूसरी क़ुदरत के अनुसार उससे भी बढ़कर अत्याचारी बादशाहत स्थापित होगी। यहां तक कि अल्लाह तआला का रहम जोश में आएगा और उस ज़ुल्म और सितम (अत्याचार) के दौर को समाप्त कर देगा। उसके बाद फिर ख़िलाफ़त अला मिनहाजे नबूवत क़ायम होगी। यह फरमा कर आप खामोश हो गए।

عَنْ حُذَیْفَةَ بْنِ یَمَانٍ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ : اِذَا مَضَتْ اَلْفٌ وَ مِائَتَانِ وَاَرْبَعُوْنَ سَنَةً یَبْعَثُ اللهُ الْمَهْدِیَّ

(अन्नज्मुस्साकिब जिल्द 2 पृष्ठ 209)

अर्थात- हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ि अल्लाह अन्हु बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया 1240 (साल) के बाद अल्लाह तआला महदी को अवतरित करेगा।

☆ ☆ ☆

# ख़ुदा तआला ने अपने वादे के अनुसार ऐसा ही किया और इस विनीत को चौदहवीं शताब्दी के सर पर भेजा और वह आसमानी हथियार मुझे प्रदान किया जिससे मैं सलीबी धर्म को तोड़ सकूं

## (उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

### मेरा कोई अक़ीदा (आस्था) अल्लाह और रसूल के आदेश के विरुद्ध नहीं

मुझे अल्लाह तआला की क़सम कि मैं काफिर नहीं لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ (ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह) मेरा अक़ीदा है और لٰکِنْ رَّسُوْلَ اللّٰہِ وَخَاتَمَ النَّبِیّٖنَ (अर्थात लेकिन अल्लाह का रसूल और ख़ातमुन्नबीय्यीन हैं) पर आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में मेरा ईमान है। मैं अपने इस बयान की सच्चाई पर इतनी क़समें खाता हूं जितने कि अल्लाह तआला के पवित्र नाम हैं और जितने क़ुरआन करीम के वर्ण हैं और जितने ख़ुदा तआला के निकट आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कमालात हैं, मेरा कोई अक़ीदा अल्लाह और रसूल के आदेश के विरुद्ध नहीं और जो कोई ऐसा विचार करता है स्वयं उसकी ग़लतफहमी है और जो व्यक्ति मुझे अब भी काफ़िर समझता है और इंकार से बाज़ नहीं आता वह निसंदेह याद रखे कि मरने के बाद उससे पूछा जाएगा। मैं अल्लाह तआला की क़सम खाकर कहता हूं कि मेरा ख़ुदा और रसूल पर वह विश्वास है कि अगर इस ज़माने में तमाम ईमानों को तराज़ू के एक पल्ला में रखा जाए और मेरा ईमान दूसरे पल्ले में तो अल्लाह तआला के फज़ल से यही पल्ला भारी होगा। (करामातुस्सादिक़ीन रूहानी ख़ज़ाइन जिल्द 7 पृष्ठ 67)

### ख़ुदा तआला की क़सम खाकर कहता हूं कि मैं और मेरी जमाअत मुसलमान है

मैं सच कहता हूं और ख़ुदा तआला की क़सम खाकर कहता हूं कि मैं और मेरी जमाअत मुसलमान है। और वह आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और पवित्र क़ुर्आन पर उसी प्रकार ईमान लाती है जिस प्रकार से एक सच्चे मुसलमान को लाना चाहिए। मैं एक कण भर भी इस्लाम से बाहर क़दम रखना मौत का कारण विश्वास करता हूं और मेरा यही मत है कि कोई व्यक्ति जितने लाभ और बरकतें प्राप्त कर सकता है और जितना ख़ुदा का सानिध्य पा सकता है वह केवल और केवल आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चे आज्ञापालन तथा पूर्ण प्रेम से पा सकता है अन्यथा नहीं। आपके अतिरिक्त अब नेकी का कोई मार्ग नहीं।

(लेक्चर लुधियाना रूहानी ख़ज़ाइन जिल्द 20 पृष्ठ 260)

### ख़ुदा तआला ने अपने वादे कि अनुसार इस ख़ाकसार को चौदहवीं सदी के सर पर भेजा

ख़ुदा तआला ने ठीक गुमराही और उपद्रव के समय में इस ख़ाकसार को चौदहवीं सदी के सर पर ख़ुदा की प्रजा के सुधार के लिए मुजद्दिद बना कर भेजा और चूंकि इस सदी का भारी उपद्रव जिसने इस्लाम को इस सदी का भारी उपद्रव जिसने इस्लाम को हानि पहुंचाई थी, ईसाई पादरियों का उपद्रव था। इसलिए ख़ुदा तआना ने इस ख़ाकसार का नाम मसीह मौऊद रखा और यह नाम अर्थात् मसीह मौऊद वही नाम है जिसकी हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सूचना दी गयी थी और ख़ुदा तआला से वादा निर्धारित हो चुका था कि तस्लीस (तीन ख़ुदाओं की आस्था) के प्रभुत्व के युग में इन नाम पर एक मुजद्दिद आएगा जिसके द्वारा सलीब तोड़ना प्रारब्ध है। इसलिए सही बुख़ारी में उस मुजद्दिद की यही परिभाषा लिखी है कि वह उम्मते मुहम्मदिया में से उनका एक इमाम होगा और सलीब को तोड़ेगा। यह इस बात की ओर संकेत था कि वह सलीबी धर्म के प्रभुत्व के समय आएघा। अत: ख़ुदा तआला ने अपने वादे के अनुसार ऐसा ही किया और इस ख़ाकसार को चौदहवीं सदी के सर पर भेजा और मुझे वह आसमानी अस्त्र प्रदान किया जिस से मैं सलीबी धर्म का खण्डन कर सकूं।

(किताबुल बरिय्या, रूहानी ख़ज़ाइन जिल्द 13 पृष्ठ 358)

### ख़ुदा तआला की ओर से धर्म के नवीनीकरण के लिए आने वाला था वह मैं ही हूं

"ख़ुदा तआला ने ज़माने की वर्तमान हालत को देख कर और ज़मीन को विभिन्न प्रकार के दुराचार और गुनाह और गुमराही से भरा हुआ पाकर मुझे सत्य के प्रचार और सुधार के लिए अवतरित फरमाया और यह युग भी ऐसा था कि.... इस संसार के लोग तेरहवीं शताब्दी हिज्री को समाप्त करके चौदहवीं शताब्दी के आरम्भ में पहुँच गए थे। तब मैंने उस आदेश का पालन करते हुए सामान्य लोगों में लिखित विज्ञापनों और भाषणों के द्वारा यह ऐलान करना आरम्भ किया कि इस शताब्दी के आरम्भ में जो ख़ुदा तआला की ओर से धर्म के नवीनीकरण के लिए आने वाला था **वह मैं ही हूं** ताकि वह ईमान जो संसार से उठ गया है उस को पुन: स्थापित करूं और ख़ुदा से शक्ति पाकर उसी के हाथ के आकर्षण से दुनिया को सुधार, संयम और सत्यनिष्ठा की ओर खींचूं। और उन की आस्थिक एवं व्यावहारिक बुराइयों को दूर करूं। फिर जब इस पर कुछ वर्ष गुज़रे तो अल्लाह की वह्यी (ईशवाणी) के द्वारा मुझ पर विस्तार पूर्वक प्रकट किया गया कि वह मसीह जिस का इस उम्मत के लिए आरम्भ से वादा दिया गया था और वह आख़री महदी जो इस्लाम की अवनति के समय तथा गुमराही के फैलने के ज़माने में सीधे तौर पर ख़ुदा से हिदायत पाने वाला और उस आसमानी माइदा (नेमत) को नवीनता के साथ फिर से मनुष्यों के सामने प्रस्तुत करने वाला, ख़ुदा की तक़दीर में नियुक्त किया गया था, जिस की ख़ुशख़बरी आज से तेरह सौ वर्ष

शेष पृष्ठ 32 पर

# ख़ुत्बा जुम्अः

## हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कृतियों की दृष्टि से मसीह मौऊद के प्रादुर्भाव के उद्देश्य एवं आवश्यकता और स्थान का वर्णन और जमाअत के लोगों को नसीहत

**अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से वह आवाज़ जो एक छोटी सी बस्ती से उठी थी आज दुनिया के 120 देशों में फैली हुई है और यही आपके सच्चे होने की दलील भी है। दूर दराज़ के इलाक़े जहाँ 30-40 पहले तक भी अहमदियत के पहुँचने की कल्पना भी नहीं थी**

**न सिर्फ़ वहाँ पैग़ाम पहुँचा है बल्कि वहाँ ऐसे मज़्बूत ईमान वाले अल्लाह तआला पैदा कर रहा है कि आश्चर्य होता है।**

**हम में से हर एक को अपना जायज़ा लेना चाहिए कि यदि हम ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिल्लाम को माना है तो क्या उस मानने और बैअत करने का हक़ अदा करने वाले भी हैं**

**मसीह मौऊद नंबर के उपलक्ष में सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का ख़ुत्बः जुमअः दिनांक 23 मार्च 2018 ई० पाठकों की सेवा में प्रस्तुत है**

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّا كَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आज 23 मार्च है और यह दिन जमाअत में 'यौम-ए-मसीह मौऊद' के नाम से याद किया जाता है। इस दिन की याद में जमाअतें यौम-ए-मसीह मौऊद के नाम से जलसे भी आयोजित करती हैं। आगे दो दिनों में शनिवार रविवार WEEKEND आ रहा है। बहुत सी जमाअतें जलसा आयोजित करेंगी और उसमें इसके इतिहास और पृष्ठभूमि इत्यादि सब के बारे में बताया जाएगा।

इस समय मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कृतियों के कुछ उद्धरण प्रस्तुत करूँगा। जिनमें उन्होंने मसीह मौऊद के प्रादुर्भाव के उद्देश्य एवं आवश्यकता और स्थान को बयान फ़रमाया है। आप के दावा के बाद मुसलमानों के मूर्ख उलमा ने भोले-भाले मुसलमानों को आपके ख़िलाफ़ भड़काने के लिए एड़ी चोटी का ज़ोर लगाया और अनथक कोशिश की और जिस हद तक जा सकते थे गए अब तक भी यही कर रहे हैं। लेकिन अल्लाह तआला की सहायता से आपकी जमाअत दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है और स्वच्छ प्रकृति लोग हर दिन शामिल हो रहे हैं।

अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिल्लाम अपने ख़ुदाई वादों के अनुसार अपने आने की घोषणा करते हुए फ़रमाते हैं कि:-

" ख़ुदा के सच्चे एकत्व और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पवित्रता, प्रतिष्ठा और सत्यता एवं क़ुरआन के ख़ुदा की ओर से होने को झुठलाया गया, तो क्या ख़ुदा तआला की ग़ैरत का तक़ाज़ा नहीं होना चाहिए कि इस सलीबी विचारधारा को टुकड़े-टुकड़े करने वाला पैदा करे।" ( क्योंकि उस ज़माने में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईसाइयों की ओर से हमले हो रहे थे )फ़रमाते हैं "क्या ख़ुदा तआला अपने वादा اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحَافِظُوْنَ (अलहिज्र आयत 10) को भूल गया" नि:सन्देह याद रखो कि ख़ुदा के वादे सच्चे हैं। उसने अपने वादे के अनुसार दुनिया में एक नज़ीर (अर्थात् अवतार) भेजा। दुनिया ने उसको क़ुबूल न किया मगर ख़ुदा तआला उसको ज़रूर क़ुबूल करेगा और बड़े ज़ोर आवर हमलों से उसकी सच्चाई ज़ाहिर करेगा" आप फ़रमाते हैं कि मैं तुम्हें सच -सच कहता हूँ कि मैं ख़ुदा तआला के वादानुसार मसीह मौऊद होकर आया हूँ। चाहो तो मुझ पर ईमान लाओ, चाहो तो इन्कार कर दो। मगर तुम्हारे इन्कार करने से कुछ न होगा। ख़ुदा तआला ने जो चाहा है वह होकर रहेगा। क्योंकि ख़ुदा तआला ने पहले से बराहीन में फ़रमा दिया है कि صَدَقَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَكَانَ وَعْدًا مَّفْعُوْلًا (मलफ़ूज़ात जिल्द-1 पृ.206 संस्करण 1985 ई.) अर्थात् अल्लाह और उसके रसूल की बात सच्ची निकली और ख़ुदा का वादा पूरा हुआ।

फिर एक अवसर पर आपने फ़रमाया कि:-"मिनहाज-ए-नबूवत (नबूवत के पथ पर) इस सिलसिला को आज़माएँ और फिर देखें कि सच किसके साथ है। बनावटी उसूलों और निर्णयों से कुछ नहीं बनता और न मैं अपनी तस्दीक़ बनावटी बातों से पेश करता हूँ। फिर क्या कारण है कि उसी उसूल पर इसकी सच्चाई को न आज़माया जाय " फरमाते हैं कि "जो दिल खोलकर मेरी बातें सुनेंगे मुझे विश्वास है कि फ़ायदा उठाएँगे और मान लेंगे। लेकिन जिनके दिल में ईर्ष्या-द्वेष है उनको मेरी बातों से कोई लाभ न होगा। उनका उदाहरण अहवल व्यक्ति की भाँति है (अर्थात् वह व्यक्ति जो भेंगा होता है जिसको एक के दो नज़र आते हैं)उसको चाहे जितने प्रमाण

दिए जाएँ कि दो नहीं एक ही है वह मानेगा नहीं। कहते हैं कि एक भेंगा (टेरा) नौकर था मालिक ने उससे कहा कि अन्दर से शीशा ले आओ। वह अन्दर गया और वापिस आकर बोला कि अन्दर तो दो शीशे पड़े हैं कौन सा लाऊँ " मालिक ने कहा कि एक ही है दो नहीं। भेंगे ने कहा तो क्या मैं झूठा हूँ " उसके मालिक ने कहा अच्छा एक को तोड़ दे। जब टूट गया तो उसे ज्ञात हुआ कि असल में मेरी ग़लती थी। आप फ़रमाते हैं मैं इन भेंगों का क्या जवाब दूँ जो मेरे सामने हैं। हम देखते हैं कि यह लोग एक के बाद एक अगर कुछ पेश करते हैं तो हदीस का ढेर, जिसको ये ख़ुद गुमान के स्तर से बड़ी नहीं मानते। इनको मालूम नहीं कि एक समय आएगा कि इनकी सारी बातों पर लोग हँसी करेंगे (अर्थात् जो यह ऊट पटाँग की बातें करते हैं इस पर लोग हँसी उड़ाएँगे ) आप फ़रमाते हैं कि यह हर एक सत्याभिलाषी का अधिकार है कि वह हम से हमारे दावे का सुबूत माँगे। इसके लिए हम वही पेश करते हैं जो नबियों ने पेश किया। आप फ़रमाते हैं कि क़ुरआन की स्पष्ट आयतें और हदीसें ,बौद्धिक प्रमाण अर्थात वर्तमान आवश्यकताएँ एक सुधारक की माँग करती हैं। आप फ़रमाते हैं, वे निशान जो ख़ुदा ने मेरे हाथ पर ज़ाहिर किए मैंने उनकी एक सूची बना दी है जिसमें डेढ़ सौ के लगभग निशान क़लमबद्ध हैं जिनके एक तरह से करोड़ों लोग गवाह हैं। व्यर्थ बातें करना नेक आदमी का काम नहीं। फ़रमाया, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसीलिए फ़रमाया था कि वह हकम (न्यायक) होकर आएगा। उसका फ़ैसला स्वीकार कर (अर्थात् वह फ़ैसला करने वाला होगा, तुम उसका फ़ैसला स्वीकार करो) जिन लोगों के दिल में धृष्टता होती है वह मानना नहीं चाहते। इसीलिए निरर्थक बहसें और ऐतराज़ करते रहते हैं। लेकिन वे याद रखें कि अन्ततः ख़ुदा तआला अपने वादा के अनुसार बड़े ज़ोरदार हमलों से मेरी सच्चाई ज़ाहिर करेगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि अगर मैं झूठ बोलता तो वह मुझे तुरन्त तबाह कर देता। मगर मेरा सारा काम उसका अपना काम है और मैं उसी की ओर से आया हूँ मेरा झुठलाना उसका झुठलाना है। इसलिए वह स्वयं मेरी सच्चाई ज़ाहिर कर देगा। (मलफ़ूज़ात जिल्द-4 पृ. 34-35)

फिर इस बात को बयान करते हुए कि मसीह मौऊद को झुठलाने और उसके इन्कार का परिणाम तुम्हें अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इन्कार तक ले जाएगा। आप फ़रमाते हैं कि:-

"मेरा इन्कार, मेरा इन्कार नहीं है बल्कि यह अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इन्कार है। क्योंकि जो मुझे झुठलाता है वह मझे झुठलाने से पहले अल्लाह तआला को झूठा ठहरा लेता है। हालाँकि वह देखता है कि इस्लाम के अन्दर और बाहर ख़राबियाँ हद से बढ़ी हुई हैं तो क्या ख़ुदा ने अपने वादा إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ (इन्ना नहनु नज़्ज़लना ज़िक्रा व इन्ना लहू ल हाफ़िज़ून) के बावजूद उनको दूर करने का कोई प्रबन्ध न किया। जबकि वह प्रत्यक्षतः इस बात को मानता है कि ख़ुदा तआला ने आयत-ए-इस्तिख़्लाफ़ में वादा किया था कि मूसवी सिलसिला की तरह इस मुहम्मदी सिलसिला में भी ख़लीफ़ों के होने का सिलसिला क़ायम करेगा। मगर उसने नऊज़ुबिल्लाह उस वादे को पूरा न किया और इस समय इस उम्मत में कोई ख़लीफ़ा न पैदा किया। इतना ही नहीं बल्कि इस बात से भी इन्कार करना पड़ेगा कि क़ुरआन शरीफ़ ने जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मूसा के समान ठहराया है यह भी सही नहीं है। क्योंकि इस सिलसिला की पूर्ण समानता और सदृशता के लिए आवश्यक था कि इस चौदहवीं सदी पर इसी उम्मत में से एक मसीह पैदा होता। जिस तरह उस मूसवी उम्मत में से चौदहवीं सदी में एक मसीह आया था। इसी तरह क़ुरआन की इस आयत को भी झुठलाना पड़ेगा जो آخَرِينَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوا بِهِمْ आख़रीना मिनहुम लम्मा यल्हक़ू बिहिम (अल जुमा आयत नं. 04) में आने वाले एक अहमद के प्रतिरूप की ख़बर दी है और इसी तरह क़ुरआन की और भी बहुत सी आयतें हैं जिनको झुठलाना पड़ेगा। बल्कि मैं दावा से कहता हूँ कि अल्हम्दो से लेकर वन्नास तक सारा क़ुरआन छोड़ना पड़ेगा । अब सोचो कि क्या मेरा झुठलाना कोई आसान काम है" यह मैं अपनी तरफ़ से नहीं कहता बल्कि ख़ुदा तआला की क़सम खाकर कहता हूँ कि सच यही है कि जो मुझे छोड़ेगा और मुझे झुठलाएगा चाहे वह मुँह से भले ही न कहे मगर उसने अपने काम से सारे क़ुरआन को झुठला दिया और ख़ुदा को छोड़ दिया। इसकी ओर मेरे एक इल्हाम में भी संकेत है। (अल्लाह तआला ने आपको फ़रमाया कि)"اَنْتَ مِنِّیْ وَاَنَا مِنْكَ" (अन्ता मिन्नी व अना मिनका) आप फ़रमाते हैं "मुझे झुठलाने से ख़ुदा को झुठलाना अनिवार्य ठहरता है और मुझे स्वीकार करने से सर्वशक्तिमान ख़ुदा के मौजूद होने की तस्दीक़ होती है और उसकी हस्ती पर दृढ़ विश्वास बढ़ता है। मेरे झुठलाने से मेरा झुठलाना नहीं बल्कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का झुठलाना है। अब कोई मुझे झुठलाने और इन्कार करने की हिम्मत करने से पहले ज़रा अपने दिल में सोचे और उससे फ़त्वा पूछे कि वह किसको झुठलाता है "

इस बात को और स्पष्ट करते हुए कि मसीह मौऊद को झुठलाने से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का झुठलाना अनिवार्य ठहरता है। इसका कारण क्या है " और किस तरह मसीह मौऊद के इन्कार से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का झुठलाना अनिवार्य ठहरता है। आप फ़रमाते हैं कि:-

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का क्यों झुठलाना अनिवार्य ठहरता है। वह इस तरह पर कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो वादा किया था कि हर सदी के सर पर मुजद्दिद आएगा वह नऊज़ुबिल्लाह झूठा निकला। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो 'इमामकुम मिनकुम' फ़रमाया था वह भी नऊज़ुबिल्लाह ग़लत निकला। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो

अलैहि वसल्लम ने जो सलीबी फ़ित्ना के समय एक मसीह व महदी के आने की शुभसूचना दी थी वह भी नऊज़ुबिल्लाह ग़लत निकली क्योंकि फ़ित्ना तो पूरी तरह ज़ाहिर हो गया मगर वह आने वाला इमाम नऊज़ुबिल्लाह न आया। जब कोई इन बातों को स्वीकार करेगा तो क्या वह व्यवहारिक तौर पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को झुठलाने वाला ठहरेगा या नहीं "आप फ़रमाते हैं:- "मैं फिर खोलकर कहता हूँ कि मेरा झुठलाना आसान काम नहीं, मुझे काफ़िर कहने से पहले ख़ुद काफ़िर बनना होगा, मुझे बे दीन और गुमराह कहने से पहले अपनी गुमराही और बे दीनी को मान लेना पड़ेगा। मुझे क़ुरआन और हदीस का छोड़ने वाला कहने से पहले ख़ुद क़ुरआन और हदीस को छोड़ना पड़ेगा। और वही छोड़ेगा जो मुझे छोड़ने वाला कहता है। आप कहते हैं:- "मैं क़ुरआन और हदीस को मानता हूँ और इसका पात्र हूँ। मैं गुमराह नहीं बल्कि महदी हूँ। मैं काफ़िर नहीं बल्कि इस युग में मोमिनों में से सबसे पहले दर्जे का मोमिन कहलाने का पूर्ण पात्र हूँ और जो कुछ मैं कहता हूँ यह ख़ुदा ने मुझसे कहा है कि यह सच है। जिसको ख़ुदा पर यक़ीन है, जो क़ुरआन और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सच्चा समझता है उसके लिए यही दलील काफ़ी है कि मेरे मुँह से सुनकर ख़ामोश हो जाय। लेकिन जो दुस्साहसी और धृष्ट है उसका क्या इलाज। ख़ुदा ख़ुद उसको समझाएगा"। (आप यह सारी बातें एक आए हुए मेहमान को समझा रहे थे आपने फ़रमाया "मेरे मामले में जल्दबाज़ी से काम न लें बल्कि नेकनीयती और द्वेषरहित से सोचें।"

(मलफ़ूज़ात जिल्द-4 पृ. 14-16)

फिर एक अवसर पर फ़रमाते हैं कि:-

"अगर इन लोगों के दिल में ईर्ष्या-द्वेष और हठ नहीं तो मेरी बात सुनें और मेरे पीछे हो लें फिर देखें कि क्या ख़ुदा तआला उनको अन्धकार में छोड़ता है या ज्ञान की ओर ले जाता है " मुझे विश्वास है कि जो सब्र और सच्चे दिल से मेरा अनुसरण करता है वह तबाह न किया जाएगा बल्कि वह उसी ज़िन्दगी से हिस्सा लेगा जिसको कभी मौत नहीं "। (अर्थात् इस लोक में भी सम्मान पाने वाला है और परलोक में भी अल्लाह तआला उस पर इनाम करेगा )

आप फ़रमाते हैं " जिसका दिल साफ है और उसके दिल में ख़ुदा का डर है उसके सामने दोबारा आने के बारे में हज़रत ईसा ही का फैसला प्रस्तुत करता हूँ। वह मुझे समझावे कि यहूदियों के सवाल के जवाब में (कि मसीह से पहले ईलिया का आना ज़रूरी है ) जो कुछ मसीह ने कहा वह सही है या नहीं " यहूदी तो अपनी किताब पेश करते थे कि मलाकी नबी के सहीफ़: में ईलिया का आना लिखा है ईलिया के समरूप का नहीं। (अर्थात ईलिया के स्वयं आने का वर्णन है उसके आदर्शों पर आने वाले किसी समरूप का वर्णन नहीं)आप फ़रमाते हैं कि " मसीह यह कहते हैं कि आने वाला यही यूहन्ना है चाहो तो इसे मानो। अब किसी जज के सामने मामला रखो और देखो कि डिग्री किसको देता है" (ज़ाहिरी बात पर अगर फ़ैसला करवाना है तो किसी भी जज के सामने रख दो और देखो वह डिग्री किसको देता है) "वह नि:सन्देह यहूदियों के पक्ष में फ़ैसला देगा " ( क्योंकि ज़ाहिरी तौर पर लिखा हुआ है तो उसके अनुसार ही फ़ैसला होगा। लेकिन आप फ़रमाते हैं कि यह फ़ैसला सही नहीं है क्योंकि) " एक मोमिन जो ख़ुदा तआला पर ईमान लाता है और जानता है कि ख़ुदा के नबी किस तरह आते हैं वह इस बात पर विश्वास करेगा कि मसीह ने जो कुछ कहा और किया वही सही और सत्य है। आप फ़रमाते हैं कि अब इस समय वही मामला है या कुछ और " यदि ख़ुदा का डर हो तो फिर यह कहने से शरीर काँप जाय कि यह दावा झूठा है। अफ़सोस का मुक़ाम है कि इन लोगों में इतना भी ईमान नहीं जितना कि उस आदमी का था जो फ़िरऔन की क़ौम में से था और जिसने यह कहा था कि अगर यह झूठा है तो ख़ुद तबाह हो जाएगा। मेरे बारे में अगर तक़्वा से काम लिया जाता तो इतना ही कह देते और देखते कि क्या ख़ुदा तआला मेरा समर्थन और मेरी सहायताएँ कर रहा है या मेरे सिलसिला को मिटा रहा है।" (मलफ़ूज़ात जिल्द-4 पृ. 30-31)

आज अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से वह आवाज़ जो एक छोटी सी बस्ती से उठी थी दुनिया के 210 देशों में फैली हुई है और यही आपकी सच्चाई की दलील भी है। दूर दराज़ के इलाक़े जहाँ 30-40 पहले तक भी अहमदियत के पहुँचने की कल्पना भी नहीं थी न सिर्फ़ वहाँ पैग़ाम पहुँचा है बल्कि वहाँ ऐसे मज़्बूत ईमान वाले अल्लाह तआला पैदा कर रहा है कि आश्चर्य होता है। एक घटना बयान करता हूँ।

बेनिन अफ्रीक़ा का एक छोटा सा देश है वहाँ सन् 2012 ई. में एक जमाअत क़ायम हुई है। वहाँ के एक गाँव के एक अहमदी जिनका नाम इब्राहीम साहिब है उन्होंने अहमदियत क़ुबूल की। इससे पहले वह मुसलमान थे और काफ़ी ज्ञान रखते थे और अहमदियत क़ुबूल करने के बाद उन्होंने निष्ठा और वफ़ादारी में बढ़ना शुरू किया। अपने भाइयों और रिश्तेदारों इत्यादि को तब्लीग़ करनी शुरू की। उनके भाई ने उनकी तब्लीग़ से तंग आकर कि यह तब्लीग़ करके हमें हमारे दीन हटा रहा है, उनसे लड़ाई शुरू कर दी। लेकिन यह तब्लीग़ करते रहे, लोगों को अहमदियत अर्थात् सच्चे इस्लाम का पैग़ाम पहुँचाते रहे। इस तरह उनकी कोशिश और अल्लाह के फ़ज़्ल से उनके पास-पड़ोस के तीन गाँव अहमदियत में शामिल हो गए तो इब्राहीम साहिब के भाई ने अपने एक दोस्त के साथ मिलकर उनके क़त्ल की योजना बनाई कि यह तो अहमदियत को फैलाता जा रहा है इसलिए एक ही इलाज है कि इसको क़त्ल कर दिया जाए। इब्राहीम साहिब कहते हैं कि मैंने ख़्वाब में देखा उनका बड़ा भाई और उनका दोस्त कोई गढ़ा खोदकर उसमें कुछ डाल रहे हैं और कहते हैं कि ख़्वाब के तीन दिन बाद ही उनके भाई का दोस्त अचानक बीमार पड़ गया और उसकी मृत्यु हो गई। इस पर उनके भाई ने कहना शुरू कर दिया कि यह अहमदी जो है इसने मेरे दोस्त पर कोई जादू टोना किया है। कुछ समय के बाद यह कहते हैं कि मैंने फिर एक ख़्वाब

देखा कि उनका भाई एक पेड़ के तने के साथ खड़े होकर अपनी लम्बाई माप रहा है। उस इलाक़े में यह रिवाज है कि जब कोई मर जाता है तो उसकी क़ब्र खोदने के लिए एक पेड़ के तने की छाल से मुर्दे की लम्बाई मापी जाती है ताकि क़ब्र उसके साइज़ की बनाई जा सके। कहते हैं कि कुछ दिन के बाद उनके बड़े भाई की गर्भवती पत्नी बीमार पड़ गई और दो दिन के अन्दर उसकी मृत्यु हो गई। फिर उसके सारे बच्चे बीमार पड़ने शुरू हुए, कोई फ़र्क़ नहीं पड़ रहा था उसके भाई ने यह मशहूर कर दिया कि यह जादू टोना करने वाला आदमी है और वहाँ का जो स्थानीय चीफ़ अर्थात् बादशाह था उसके पास जाकर शिकायत की और उसको मदद के लिए कहा। उसने कुछ पैसे माँगे कि यह लेकर आओ तो मैं उसका इलाज करता हूँ। अत: उनके भाई ने बादशाह को दे दिए। बादशाह ने इब्राहीम साहिब को बुलाया। जब यह गए तो बड़े ग़ुस्से और जोश में आकर उसने कहा कि तुमने यह क्या तमाशा बनाया हुआ है। यह नया मज़हब अपनाया हुआ है नया दीन शुरू कर दिया है, इसको फौरन छोड़ दो और तौबा करो वर्ना कल का सूरज तुम नहीं देख सकोगे। इब्रहीम साहिब कहने लगे कि मज़हब तो मैंने सच समझकर क़ुबूल किया है। इसको तो मैं छोड़ नहीं सकता और रही बात मरने की तो ज़िन्दगी मौत अल्लाह के हाथ में है। इस पर उस बादशाह ने कहा कि इस इलाक़े का ख़ुदा मैं हूँ। मैं जो चाहता हूँ करता हूँ और तुम लोग यह अच्छी तरह जानते हो कि मैं क्या फ़ैसला करने वाला हूँ और जिसको मैं यह कह दूँ कि वह कल मर जाएगा तो वह ज़रूर मरता है। इब्राहीम साहिब ने कहा कि ठीक है तुम अपने रिवायती लोगों को कहते होगे, लेकिन मैं इस बात में तुम्हें कुछ नहीं कहता मगर मैं दीन नहीं छोड़ूँगा, क्योंकि सच्चाई यही है और सच्चा इस्लाम यही है। इस पर बादशाह और ग़ुस्सा हुआ और अपने लोगों से कहा कि इसको ले जाकर कमरे में बन्द कर दो। वे लेकर जाने लगे तो इब्राहीम साहिब ने उनसे कहा कि तुम मेरे बीच में न पड़ो और इस मामले को छोड़ो और मुझे बन्द करने के बजाय जाने दो। वे लोग तो लालची होते ही हैं कुछ पैसे लेकर उन्होंने उनको छोड़ दिया। उस बादशाह ने इब्राहीम साहिब पर सुबह का सूरज क्या रोकना था अगले ही दिन सूचना मिली कि उस बादशाह को लक़वा मार गया और वह हिलने-जुलने के क़ाबिल न रहा और दो दिन के बाद मर गया। यह देखकर उनके बड़े भाई जो उनके बहुत मुख़ालिफ़ थे ख़ानदान वालों से कहा कि हमारी सुलह करा दें। इब्राहीम साहिब ने कहा मेरी तो लड़ाई किसी से थी ही नहीं, हम तो हैं ही सुलहपसन्द और इस्लाम का असल पैग़ाम भी यही है। फिर उस बादशाह के मरने का यह निशान देखकर वहाँ उस इलाक़े में इसका बहुत असर पड़ा और बड़ी चर्चा हुई। अहमदियत की सच्चाई साबित हुई। तो यह निशान हैं जो आज भी अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के समर्थन में प्रकट हो रहे हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि:-

" देखो मैं ख़ुदा तआला की क़सम खाकर कहता हूँ कि हज़ारों निशान मेरी तसदीक़ के लिए ज़ाहिर हुए हैं और हो रहे हैं और आगे होते रहेंगे। यदि यह इन्सान का षड़यन्त्र होता तो इसका इतना समर्थन और इतनी सहायता कदापि न होती। "

(हक़ीक़तुल वह्यी, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-22 पृ. 48)

एक अवसर पर सुधारक की आवश्यकता और मसीह मौऊद की ज़रूरत के बारे में बयान करते हुए आप फ़रमाते हैं कि:-

"जैसा कि हर एक फ़सल के काटने का समय आता है उसी तरह अब बुराइयों के दूर करने का समय आ गया है। सच्चे की तौहीन और गुस्ताख़ी अपने चरम को पहुँच गयी है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की क़द्र नऊज़ुबिल्लाह मक्खी और ततैया जितनी भी नहीं समझी गई। ततैया से भी इन्सान डरता है और चींटी से भी ख़ौफ़ खाता है। लेकिन नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बुरा कहने में कोई नहीं झिझकता। كَذَّبُوْا بِاٰيَاتِنَا (कज़्ज़बू बि आयातिना) के पात्र हो रहे हैं। जितना मुँह उनका खुल सकता है उन्होंने खोला और मुँह फाड़-फ़ाड़कर गालियाँ दीं। अब सचमुच वह समय आ गया है कि ख़ुदा तआला उनको दूर करे। ऐसे समय में वह हमेशा एक आदमी को पैदा किया करता है जो उसकी प्रतिष्ठा और प्रताप के लिए बहुत उत्साह रखता है। ऐसे आदमी को अलौकिक मदद का सहारा होता है और यह सब कुछ अल्लाह तआला स्वयं ही करता है मगर उसका पैदा करना एक प्राकृतिक विधान को पूरा करना होता है। जैसा कि वह फ़रमाता है कि: وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا (वलन तजिदा लिसुन्नतिल्लाहि तब्दीला)" अब वह समय आ गया है कि अल्लाह तआला ने मुझे अपने प्राकृतिक विधान के अनुसार भेजा है। आप फ़रमाते हैं कि:-

"ख़ुदा तआला की किताब पर नज़र डालने से मालूम होता है कि जब बात हद से गुज़र जाती है तो आसमान पर तैयारी की जाती है। यही उसका निशान है कि यह तैयारी का समय आ गया है। सच्चे नबी व रसूल व मुजद्दिद की सबसे बड़ी निशानी यही है कि वह समय पर आवे और आवश्यकता के समय आवे। लोग क़सम खाकर कहें कि क्या यह समय नहीं कि आसमान पर कोई तैयारी हो"(आप लोगों से प्रश्न कर रहे हैं कि क़सम खाकर बताओ कि क्या यह समय नहीं। वह ज़माना भी था और आज भी लोग कह रहे हैं कि हमें किसी सुधारक की आवश्यकता है बल्कि पाकिस्तान में तो मौलवी ख़ुद यह कहते हैं लेकिन मसीह मौऊद का इन्कार है) आप फ़रमाते हैं " मगर याद रखो कि अल्लाह तआला सब कुछ आप ही किया करता है। हम और हमारी जमाअत अगर सब के सब घरों में बैठ जाएँ तब भी काम हो जाएगा और दज्जाल परास्त हो जाएगा تِلْكَ الْاَيَّامُ نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ (तिल्कल अय्यामो नुदाविलुहा बैनन्नासि) (अनुवाद- इस तरह दिन आपस में फिरा करते हैं।)

फ़रमाया:- "इसका चर्मोत्कर्ष को पहुँच जाना बताता है कि अब इसके पतन का समय निकट है " (जब कोई अपने चरमोत्कर्ष को पहुँच जाए और समझने लगे कि अब मैं सब ताक़तों का मालिक हो गया हूँ और सारी तरक़्क़ियाँ मेरे हाथ में आ गयी हैं यही उसका

चरमोत्कर्ष है और इस पर पहुँचने के बाद पतन शुरू हो जाता है। इसी तरह अब इन ताक़तों का पतन शुरू हो गया है चाहे वह इस्लाम के ख़िलाफ़ ताक़तें हों या वे लोग हों जो अहमदियत के ख़िलाफ़ या मसीह मौऊद के ख़िलाफ़ हों) आप फ़रमाते हैं कि:-"उसका अपने चरमोत्कर्ष को पहुँच जाना यह ज़ाहिर करता है कि अब वह नीचा देखेगा। उसकी आबादी उसकी बरबादी का निशान है।" (वह समझता है कि उसकी ताक़त और आबादी बहुत ज़्यादा है तो अब यह बरबादी का निशान बन जाएगी)। " हाँ ठण्डी हवा चल पड़ी है अल्लाह तआला के काम धीरे-धीरे होते हैं। अगर हमारे पास कोई भी दलील न होती फिर भी ज़माने के हालात देखकर मुसलमानों पर वाजिब था कि वे दीवानों की तरह फिरते और ढूँढ़ते कि मसीह अब तक सलीब के तोड़ने के लिए क्यों नहीं आया। उनको यह न चाहिए था कि उसे अपने झगड़ों के लिए बुलाते।" (अगर इस्लाम की ग़ैरत थी तो इस्लाम के बचाव के लिए बुलाते, मसीह को तलाश करते, न कि अपने झगड़ों को हल करने के लिए) फ़रमाया कि:- " उसका काम सलीब (अर्थात् सलीबी विचारधारा-अनुवादक) को तोड़ना है और इसी की ज़माने को ज़रूरत है।" (मलफ़ूज़ात जिल्द-1 पृ. 396-398)

इसी तरह एक जगह फ़रमाया कि:-

"नास्तिकता भी अधिक फैल रही है और मैं उसके भी रद्द करने के लिए आया हूँ।" (मलफ़ूज़ात जिल्द-7 पृ. 28)

आप फ़रमाते हैं कि:-"इसीलिए उसका नाम मसीह मौऊद है। अगर मुल्लाओं को लोगों की भलाई और कामयाबी मद्देनज़र होती तो वे हरगिज़ ऐसा न करते जैसा हम से कर रहे हैं। उनको सोचना चाहिए था कि उन्होंने हमारे ख़िलाफ़ फ़त्वा लिखकर क्या बना लिया है। जिसे ख़ुदा तआला ने कहा कि हो जा, उसे कौन कह सकता है कि न हो। " (फ़त्वा लिखा तो उसका क्या फ़ायदा हुआ। जमाअत तो उसी तरह तरक़्क़ी कर रही है क्योंकि अल्लाह तआला ने निर्णय किया कि हो जा तो वह हो जाता है। फिर कोई उसको रोक नहीं सकता )

आप फ़रमाते हैं:- "यह लोग जो हमारे मुख़ालिफ़ हैं ये भी हमारे नौकर चाकर हैं कि किसी न किसी रंग में हमारी बात पूरब और पश्चिम तक पहुँचा देते हैं। " (मल्फ़ूज़ात जिल्द-1 पृ. 398)

जो मुख़ालिफ़त कर रहे हैं वे भी वस्तुत: मुख़ालिफ़त के द्वारा अहमदियत अर्थात् सच्चे इस्लाम का पैग़ाम पहुँचा रहे हैं। क्योंकि इस तरह से भी लोगों का ध्यान आकर्षित होता है। बहुत सारे लोग पत्र लिखते हैं और सम्पर्क करते हैं कि अमुक मौलवी की मुख़ालिफ़त के कारण या अमुक जगह आपके ख़िलाफ़ बातें हो रही थीं उनको सुनकर हमारे अन्दर जिज्ञासा पैदा हुई तो हमने तहक़ीक़ करना शुरू कर दिया और अब तो इन्टरनेट के द्वारा हर जगह जमाअत का लिटरेचर भी उपलब्ध है जिससे बहुत सारी जानकारियाँ मिल जाती हैं, तुलना भी की जा सकती है, तो तहक़ीक़ करके अब हम जमाअत में शामिल होना चाहते हैं तो मौलवियों की मुख़ालिफ़त का यह काम भी तब्लीग़ का एक साधन बन रहा है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम कुछ लोगों के इस ऐतराज़ का जवाब देते हुए कि हम इस्लाम की शिक्षाओं पर अमल कर रहे हैं और पहले ही जो इतने फ़िर्क़े हैं तो फिर एक नया फ़िर्क़ा बनाने की क्या आवश्यकता है और आपकी जमाअत में शामिल होने की क्या आवश्यकता है- "आप फ़रमाते हैं कि कई बार हमारे अहमदी भी ऐतराज़ करने वालों की यह बातें सुनकर ख़ामोश हो जाते हैं, उस ज़माने में भी और आजकल भी कुछ ऐसे लोग हैं जो ख़ामोश हो जाते हैं कि क्या जवाब दें।

आप फ़रमाते हैं कि:- बहुत से ऐसे लोग हैं जो यह ऐतराज़ करते हैं कि इस सिलसिले क्या ज़रूरत है"। वे इस तरह पर धोखा देते हैं और कुछ आश्चर्य नहीं कि कुछ अनपढ़ लोग ऐसी बातों को सुनकर धोखा खा जाएँ और उनके साथ मिलकर यह कह दें कि जिस हालत में हम नमाज़ पढ़ते हैं, रोज़ा रखते हैं और वज़ीफ़े जपते हैं फिर क्यों यह फूट डाल दी" (कि नया फ़िर्क़ा बना दिया और फ़ूट डाल दी, हम नमाज़, रोज़ा के पहले से पाबन्द हैं फिर तुम्हारे अन्दर शामिल होने की और एक नया फ़ित्ना पैदा करने की क्या आवश्यकता है) आप फ़रमाते हैं कि:-

"याद रखो कि ऐसी बातें नासमझी और ज्ञान के अभाव का परिणाम हैं। मेरा अपना काम नहीं है। यह फूट अगर डाल दी है तो अल्लाह तआला ने डाली है जिसने इस सिलसिला को क़ायम किया है" (मैंने तो क़ायम नहीं किया यह तो अल्लाह तआला ने क़ायम किया है) "क्योंकि ईमानी हालत कमज़ोर होते-होते यहाँ तक पहुँच गई है कि ईमानी ताक़त बिल्कुल ही ख़त्म हो गई है और अल्लाह तआला चाहता है कि सच्चे ईमान की रूह फूँके जो इस सिलसिले के द्वारा अल्लाह ने चाहा है। इस हालत में उन लोगों का ऐतराज़ व्यर्थ और निराधार है। इसलिए याद रखो कि ऐसा भ्रम हरगिज़ किसी के दिल में नहीं आना चाहिए। यदि पूरे ग़ौर फ़िक्र से काम लिया जाए तो यह भ्रम पैदा ही नहीं हो सकता। ग़ौर से न देखने और न सोचने-समझने के कारण ही उन लोगों में ऐसा भ्रम पैदा होता है जो ज़ाहिरी हालत को देखकर कह देते हैं कि दूसरे भी मुसलमान हैं। इस प्रकार के भ्रमों से इन्सान जल्द गुमराह हो जाता है। फ़रमाया :-मैंने लोगों के कुछ पत्र इस प्रकार के देखे हैं जो प्रत्यक्षत: हमारे सिलसिले में हैं (अर्थात् बैअत की हुई है) और कहते हैं कि हम से जब यह कहा गया कि जब दूसरे मुसलमान भी नमाज़ पढ़ते हैं, कलिमा पढ़ते हैं, रोज़े रखते हैं और नेक काम करते हैं और नेक मालूम होते हैं तो फिर इस नए सिलसिले की क्या आवश्यकता है।"

आप फ़रमाते हैं:- ये लोग इसके बावजूद कि हमारी बैअत में दाख़िल हैं ऐसे भ्रम और ऐतराज़ सुनकर लिखते हैं कि हमको इसका जवाब नहीं आता। ऐसे पत्र पढ़कर मुझे ऐसे लोगों पर अफ़सोस होता है कि उन्होंने हमारे असल उद्देश्य को नहीं समझा। वे केवल यह देखते हैं कि रस्म के तौर पर यह लोग हमारी तरह इस्लामी तौर तरीक़ों पर चलते हैं और कलिमा, नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज की अदायगी करते हैं , हालाँकि यथार्थता उनमें नहीं पायी जाती"(केवल

शेष पृष्ठ 33 पर

# हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जीवनी
# घरेलु जीवन को बेहतरीन बनाने के लिए घटनाओं के आलोक में

**(मुनीर अहमद खादिम, एडिशनल नाज़िर इस्लाह व इरशाद जुनूबी हिन्द दक्षिण भारत)**
**(अनुवादक- फ़रहत अहमद आचार्य)**

आदरणीय सभापति महोदय एवं सम्माननीय श्रोतागण !

मेरे भाषण का विषय है "हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जीवनी- घरेलु जीवन को बेहतरीन बनाने के लिए घटनाओं के आलोक में"

हज़रत आयशा रज़ि० अल्लाह से किसी ने एक बार पूछा था कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जीवनी के बारे में कुछ बताइए। तो आप ने फरमाया था كَانَ خُلُقَهُ الْقُرْآن अगर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पवित्र जीवन को देखना हो तो क़ुरआन मजीद को देख लो। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जीवनी क़ुरआन मजीद के पूर्णता अनुसार थे। (मुस्तदरक हाकिम जिल्द 2 पृष्ठ 392)

ठीक इसी प्रकार अगर किसी ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पवित्र जीवनी को देखना हो तो आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जीवनी का अध्ययन करे क्योंकि आप की जीवनी अपने आका और मुताअ आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पवित्र जीवनी का समरूप नजर आएगी। आपने एक अवसर पर फरमाया कि من فرق بینی وبین المصطفیٰ ما عرفنی ومارای जिसने मेरे और मेरे आक़ा हज़रत मोहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मध्य अंतर किया तो उसने न मुझे पहचाना और न मेरी वास्तविकता को पहचाना। उम्मत के बुज़ुर्गों ने भी यही कहा था कि इमाम महदी आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पूर्ण समरूप होगा।

अत: हज़रत शाह वलीउल्लाह साहब मुहद्दिस देहलवी अपनी पुस्तक "अल खैरुल कसीर" में फरमाते हैं-

حق له ان ینعکس فیه انوار سید المرسلین صلی الله علیه وسلم ویزعم العامة انه اذا نزل الی الارض کان واحدمن الامة کلا بل هوشرح الاسم الجامع المحمدی ونسخة منتسخة منه فشتان بینه وبین الامة

(अल खैरुल कसीर पृष्ठ 72 प्रकाशित बिजनौर)

अर्थात उम्मते मोहम्मदिया में आने वाले मसीह का यह हक है कि उसमें आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनवार का अक्स हो। लोगों का विचार है कि मसीह मौऊद जब आएंगे तो वह केवल एक नबी होंगे ऐसा कदापि नहीं बल्कि वह तो मोहम्मदी नाम की पूर्व व्याख्या होगा और उसी की कॉपी होगा। अत: उसके और एक सामान्य उम्मती के मध्य बड़ा अंतर है।

इस दृष्टिकोण से घरेलू जीवन के हवाले से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जीवनी आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जीवनी का पूर्ण अक्स है, अगर क़ुरआन मजीद की यह शिक्षा है कि- عَاشِرُوْهُنَّ بِالْمَعْرُوْف अर्थात अपनी पत्नियों के साथ अच्छा व्यवहार करो तो आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाते हैं कि خیرکم خیرکم لاهله وانا خیرکم لاه तुम में से बेहतर वह है जो अपने परिवार के साथ अच्छा व्यवहार करता है और मैं इस मामले में तुम सबसे बेहतर हूँ। इस वास्तविकता के आलोक में जब हम घरेलू जीवन के हवाले से हज़रत मसीह मौऊद मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादियानी अलैहिस सलाम की घरेलू जीवन को देखते हैं तो वह पूर्णता आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उत्तम आदर्श के अनुसार हैं। आप अलैहिस्सलाम फरमाते हैं ख़ुदा ने मेरे परम अनुकरणीय सैयदना मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रूहानी, शाश्वत और पूरे जलाल और कमाल का यह सबूत दिया है कि मैंने उसका अनुसरण किया और उसकी मोहब्बत से आसमानी निशानों को अपने ऊपर उतरते हुए और दिल को विश्वास के नूर से भरते हुए पाया और परोक्ष के इतने निशान देखे कि उन नूरों के द्वारा मैंने अपने ख़ुदा को देख लिया।

क़मरुल अम्बिया (नबियों के चांद) हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम ए बयान करते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का तरीका यह था कि छोटी से छोटी बात में भी आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अनुसरण किया करते थे। (सीरतुल महदी भाग-2 पृष्ठ 492)

किसी व्यक्ति की घरेलू जिंदगी के हवाले से उसके निकट संबंधी ही बेहतर गवाही दे सकते हैं। अत: आप अलैहिस्सलाम के साले डॉक्टर अमीर मोहम्मद इस्माइल साहिब रज़ि अल्लाह फरमाते हैं कि मैंने अपने होश में न कभी हुज़ूर अलैहिस्सलाम को हज़रत उम्मुल मोमिनीन से नाराज़ देखा न सुना बल्कि हमेशा वह हालत देखी जो एक आदर्श जोड़े की होनी चाहिए। (सीरत हज़रत सैय्यदा नुसरत जहां बेगम साहिबा पृष्ठ 231)

माई इमाम बीबी साहिबा जो अपने पति हज़रत ठेकेदार मोहम्मद अकबर साहब की मृत्यु के बाद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के घर रहती थी, वह कहती हैं हमने कभी हज़रत उम्मुल मोमिनीन को नहीं देखा कि किसी बात पर भी हज़रत साहब से नाराज़ हुई हों। आप हमेशा हज़रत साहब का सम्मान करतीं और आप को खुश रखतीं। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का फरमान है-

انما الدنیا متاع ولیس من متاع الدنیاشئی افضل من المرءةالصالحة (इब्ने माज्जा)

अर्थात दुनिया तो खूबसूरती का सामान है और नेक औरत से बढ़कर कोई सामान खूबसूरती का नहीं। (हदीक़तुस्सालिहीन पृष्ठ 389)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का अपनी पत्नी से इतना अच्छा व्यवहार था और उम्मुल मोमिनीन रज़ि अल्लाह अन्हो को आप अलैहिस्सलाम के दावे पर इतना विश्वास था कि औरतें जो स्वयं के लिए सौत का आना कभी पसंद नहीं करती, हज़रत उम्मुल मोमिनीन मोहम्मदी बेगम के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की

भविष्यवाणी को पूरा करने के लिए हार्दिक इच्छा रखती थीं कि मोहम्मदी बेगम से आपका विवाह हो जाए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को भी हज़रत अम्मा जान रज़ि अल्लाह से एक विशेष प्रेम का संबंध था। और आप पवित्र हदीस कि وَاَنَاخَيْرُكُمْ لِاَهْلِي अर्थात मैं तुम में सबसे बेहतर हूं अपने परिवार से सब व्यवहार में, के अक्स थे। हज़रत अम्मा जान से इस मोहब्बत के कारण और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इस बार बार की नसीहत के कारण अपने परिवार से अच्छा व्यवहार करना चाहिए और आप के इस फरमान के कारण कि जो व्यक्ति अपने परिवार और उसके रिश्तेदारों से अच्छा व्यवहार नहीं करता वह मेरी जमाअत में से नहीं है। (कश्ती नूह पृष्ठ 19)

सहाबा किराम रिज़वानुल्ला अलैहिम अजमईन भी अपने घरों में अपनी पत्नियों के साथ अच्छे व्यवहार का विशेष ध्यान रखते थे।

अत: एक बार हज़रत मुफ्ती मोहम्मद सादिक साहिब रज़ि० का अपनी पत्नी के साथ किसी घरेलू मामले में कुछ मतभेद हो गया और हज़रत मुफ्ती साहब अपनी पत्नी पर कुछ नाराज़ हुए। मुफ्ती साहब की पत्नी ने इस नाराज़गी का वर्णन हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहब की पत्नी से किया। हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहब बहुत दूर अंदेश थे और आपके स्वभाव में मज़ाक भी था। आपने इस बारे में अपनी पत्नी से सुनकर मुफ्ती साहब से फरमाया मुफ्ती साहब जिस तरह भी हो अपनी पत्नी को मना लो। क्या आप जानते नहीं कि आजकल मल्लिका का राज है। हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहब रज़ि अल्लाह अन्हो का इशारा इस ओर था कि जहां हिंदुस्तान में एक औरत मलिका विक्टोरिया का शासन है वहां हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम घरेलू मामलों में हज़रत अम्मा जान की बात मानते हैं। हज़रत मुफ्ती साहब भी हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहेब की इस हिकमत भरी और मज़ाकिया कलाम को समझ गए और जाकर अपनी पत्नी को मना लिया और इस प्रकार घर का माहौल अच्छा हो गया। (जिक्रे हबीब लेखक हज़रत मुफ्ती मोहम्मद सादिक साहब)

श्रोतागण! इस अवसर पर याद रखना चाहिए आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में भी आपने औरतों को इतनी जायज़ आज़ादी दी थी कि उस ज़माने की पृष्ठभूमि में कुछ सहाबा इसको नाजायज़ समझते थे और वह खुलेतौर पर कहते थे कि अब तो वह ज़माना आ गया है कि औरतें हमारे कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी होती हैं जबकि एक ऐसा समय था कि औरतों को मर्दों की सोसाइटी में हिस्सा लेने और बात करने तक की हिम्मत ना थी। और अपने आका के नमूने के अनुसार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी पवित्र आदर्श प्रस्तुत किया कि सहाबा किराम उसे मल्लिका के राज से उपमा देते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का हज़रत उम्मुल मोमिनीन रज़ि अल्लाह के साथ व्यवहार इस ज़माने के दस्तूर और माहौल के इस कदर विपरीत था कि हज़रत अब्दुल करीम साहब के कथन के अनुसार इस बात को घर के अंदर की नौकरानी या जो सामान्य लोग हैं और स्वाभाविक रूप से सादगी और इंसानी जामा के सिवा कोई बनावट और चालाकी की शक्ति नहीं रखती बहुत अच्छी तरह महसूस करती हैं वे आश्चर्य से देखती हैं और ज़माने और अपने इर्द गिर्द के सामान्य बर्ताव के विपरीत पाकर बड़े आश्चर्य से कहती हैं और मैंने स्वयं भी कई बार उन्हें यह कहते हुए सुना है कि मिर्ज़ा बीवी कि गल बड़ी मन्नदा है (अर्थात मिर्ज़ा साहिब अपनी पत्नी की बात बहुत मानते हैं)।

पत्नी के साथ संबंधों के बारे में बात करते हुए नसीहत के तौर पर हज़रत मिर्ज़ा साहिब बयान करते हैं- हमें तो बहुत बेशर्मी मालूम होती है कि मर्द होकर औरत से जंग करे, हम को ख़ुदा ने मर्द बनाया है और यह वास्तव में हम पर नेमत को पूर्ण करना है। उसका धन्यवाद यह है कि औरतों से नर्मी का बर्ताव कर।

(सीरत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पृष्ठ 45)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अम्मा जान की कितनी दिलदारी फरमाते थे इस संबंध में हज़रत अम्मा जान का बयान किया हुआ एक वृतांत इस प्रकार है - कहती हैं मैं पहले पहल जब दिल्ली से आई तो मुझे मालूम हुआ कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम गुड़ के मीठे चावल पसंद करते हैं। अत: मैंने बहुत शौक से मीठे चावल पकाने का इंतज़ाम किया। थोड़े से चावल मंगवाए और उसमें चार गुना गुड़ डाल दिया तो वह बिल्कुल राब बन गई। जब पतीली चूल्हे से उतारी चावल बर्तन में निकाले तो देख कर बहुत दुख हुआ कि यह तो खराब हो गए। इधर खाने का समय हो गया था हैरान थी कि अब क्या करूं। इतने में हज़रत साहब अर्थात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आ गए मेरे चेहरे को देखा तो दु:ख और सदमे से रोने वालों का सा बना हुआ था। आप देखकर हंसे और फरमाया क्या चावल अच्छे न पकने का अफसोस है। फिर फरमाया यह तो बहुत अच्छे हैं, मेरे स्वभाव के अनुसार पके हैं ऐसे ज्यादा गुड़ वाले ही तो मुझे पसंद हैं। यह तो बहुत ही अच्छे हैं और फिर बहुत खुश हो कर खाए। हज़रत उम्मुल मोमिनीन फरमाती हैं हज़रत साहब ने मुझे खुश करने के लिए इतनी बातें कहीं तो मेरा दिल भी खुश हो गया। (सीरत हज़रत सैयदा नुसरत जहां बेगम साहिबा पृष्ठ 225)

श्रोतागण! हम में से कितने हैं जिनके लिए यह घटना अत्यंत शिक्षाप्रद है कि किस प्रकार कई बार हम खाने में ज़रा सा नमक अधिक हो जाने या कम हो जाने से बीवियों के साथ सख्ती कर बैठते हैं। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में हदीस में आता है कि आप कभी किसी खाने में कमी नहीं निकालते थे बल्कि खाने की और खाना पकाने वाले की हमेशा प्रशंसा और दिलजोई करते थे। हज़रत अम्मा जान रज़ि अल्लाह अन्हु यद्यपि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का बहुत ख्याल रखती थीं लेकिन मेहमानों के अधिक आने के कारण कई बार ना चाहते हुए भी कमी रह जाती थी और इस बात को हुज़ूर से मोहब्बत रखने वाले सहाबा भी महसूस किया करते थे कि हुज़ूर को बीमारियों और कठिन परिश्रम के कारण विशेष तवज्जो और अच्छे भोजन की आवश्यकता है। ऐसे ही एक अवसर का वर्णन करते हुए हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहब ने एक वृतांत लिखा है कि मुंशी अब्दुल हक़ साहेब लाहौर वाले ने जो बाद में मुर्तद हो गए थे एक अवसर पर हुज़ूर अलैहिस्सलाम से निवेदन किया- आपका काम बहुत नाज़ुक है और आपके सर पर भारी कर्तव्यों का बोझ है आपको चाहिए कि शरीर का भी ख्याल रखा करें और एक विशेष ताकतवर भोजन

अनिवार्य रूप से आपके लिए हर रोज़ तैयार होना चाहिए। उनकी इस बात के जवाब में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया बात तो सही है और हमने कभी कभी कहा भी है मगर औरतें कुछ अपने ही धंधों में ऐसी व्यस्त रहती हैं कि और बातों की कुछ परवाह नहीं करती। मुंशी अब्दुल हक साहब इस पर कहने लगे अजी हज़रत आप डांट-डपट कर नहीं कहते और रोब पैदा नहीं करते, मेरा यह हाल है कि मैं खाने के लिए खास प्रबंध किया करता हूं और असंभव है मेरा हुकुम टल जाए वरना हम दूसरी तरह ख़बर लेंगे। मोहब्बत के जोश में हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहब रज़ि० ने यह विचार करके कि यह हुज़ूर के हक में लाभदायक है बिना सोचे समझे इस बात का समर्थन कर दिया और निवेदन किया कि मुंशी साहेब की बात सही है हुज़ूर को भी चाहिए कि सख्ती से बलपूर्वक इस बात को मनवाएं, हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने मुस्कुराकर फरमाया हमारे दोस्तों को ऐसे व्यवहार से बचना चाहिए॥ हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहब फरमाते हैं कि बस ख़ुदा ही जानता है कि मैं इस समय कितना लज्जित हुआ। (सीरत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, लिखक मौलाना अब्दुल करीम 18-19)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी पुस्तक कश्ती नूह में उपदेश करते हुए फरमाते हैं जो व्यक्ति अपनी पत्नी और उसके संबंधियों से व्यवहार नहीं करता वह मेरी जमाअत में से नहीं है। यह मोहब्बत का व्यवहारिक आदर्श स्वयं हज़रत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने किस प्रकार प्रस्तुत किया वह निम्नलिखित घटना से ज्ञात होता है आप की पुत्री हज़रत नवाब मुबारका बेगम साहिबा कहती हैं कि किस तरह हुज़ूर ने अपनी सास साहिबा की दिलदारी की और एक अवसर पर मां बेटी में सुलह करवाई।

आपकी नज़र में हज़रत अम्मा जान की बेहद कद्रो कीमत थी और आप बहुत अधिक दिलदारी, बहुत ख्याल रखा करते थे। उसका नक्शा मेरे दिल पर अब तक है, मगर एक बार मैंने देखा कि जब आप ने ज़रूरी समझा तो हज़रत अम्मा जान की भी तरबियत की। एक घटना का वर्णन है यही एक बात देखी और कभी नहीं, और स्वयं हज़रत अम्मा जान भी तो एक उत्तम आदर्श थीं, कभी आवश्यकता भी पेश नहीं आई। मुझे वह दृश्य याद है नीचे के कमरे के सामने के दालान में नानी अम्मा बैठी थीं किसी नौकरानी ने उनका कहना न माना और कोई ऐसी बात कह दी जिससे ग़लतफहमी पैदा होकर नानी अम्मा हज़रत अम्मा जान से नाराज़ हो गई थीं, उस समय मुझे याद है कि हज़रत नानी अम्मा गुस्से में कह रही थीं कि लड़की (हज़रत अम्मा जान को नानी अम्मा लड़की कह कर संबोधित करती थीं) आखिर मेरी बेटी ही तो है। हां मेरे हज़रत मेरे सर का ताज हैं बेशक आदि आदि। इतने में देखा कि मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हज़रत अम्मा जान को अपने आगे आगे लिए चले आ रहे हैं, इस तरह कि हज़रत अम्मा जान के दोनों कन्धों पर आपने अपने हाथ रखे हुए हैं और हज़रत अम्मा जान की आंखो से आंसू की लड़ियां बह रही हैं। आप खामोशी से इसी प्रकार अम्मा जान को लेकर आगे बढ़े और इसी तरह अम्मा जान के कंधों पर हाथ रखे हुए नानी जान के कदमों पर आपका सर झुका दिया। फिर नानी जान ने हज़रत अम्मा जान को अपने हाथों में संभाल कर शायद गले भी लगाया था और आप वापस चले गए। कुछ सोचें इस ज़माने की औलाद अधिकतर वह होंगी जिन को माँओं की कदर नहीं। अहमदी बच्चियो और बहनो! यह दृश्य जो मैंने देखा और याद रहा उसको ज़रा अपनी कल्पनाओं में लाओ कि वह धर्म का बादशाह अपने ख़ुदा तआला की ओर से ख़दीजा का लक़ब पाई हुई पत्नी अम्मा जान को जिसका हित आपकी इच्छा थी और जिसका सम्मान बहुत अधिक आपके दिल में था उसकी मां की मामूली सी नाराज़गी सुनकर बर्दाश्त ना फरमा सका और स्वयं लाकर उसकी मां के कदमों में झुका दिया। मानो यह समझाया कि तुम्हारा रुतबा बड़ा है मगर यह मां है तुम्हारे लिए भी उसके कदमों तले जन्नत है।

اللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ وَعَلٰی عَبْدِكَ الْمَسِیْحِ الْمَوْعُوْد۔

(तहरीरात मुबारका पृष्ठ 214-15)

श्रोतागण! घरों में जब कभी-कभी सफर का अवसर हो तो वह अवसर भी अच्छे व्यवहार का होता है जल्दबाजी के कारण ऐसे अवसर पर कभी-कभी औरतों को दुष्ट मर्दों की कई बातें सुननी पड़ती हैं कि देर कर दी, जल्दी करो, तुम्हारी हमेशा ही ऐसी आदत है। लेकिन हमारे प्यारे आका हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की आदत अपने आका आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुसरण में यह थी कि आप सफ़र का सामान खुद तैयार करते और घरवालों की प्रतीक्षा करते और पहले उनको सवार कराते और हर तरह से ख़याल रखते। इस संबंध में हज़रत मुफ्ती मोहम्मद सादिक साहब अपनी पुस्तक 'जिक्रे हबीब' में वर्णन करते हैं कि जब सफर का अवसर आता तो हुज़ूर का तरीका यह था कि स्वयं साथ जाकर हज़रत अम्मा जान और जो स्त्रियां साथ होती उन्हें लेडीस डब्बे में सवार कराते और जिस स्टेशन पर उतरना होता लेडीज डिब्बे के पास जाकर अपने सामने हज़रत अम्मा जान को उतरवाते और दौरान ए सफर भी अपने साथ खुद्दाम के द्वारा हज़रत अम्मा जान का हाल पता करवाते रहते।

एक सफर के बारे में एक अजीब वृतांत हज़रत खलीफ़तुल मसीह अव्वल ने लिखा है। फरमाते हैं एक बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम किसी सफर में एक स्टेशन पर पहुंचे तो अभी गाड़ी आने में देर थी आप बीवी साहिबा अर्थात हज़रत उम्मुल मोमिनीन के साथ स्टेशन पर टहलने लगे। मौलवी अब्दुल करीम साहिब सियालकोटी का स्वभाव गैरतमंद और जोशीला था। मेरे पास आए और कहने लगे कि बहुत लोग हैं और फिर लोग इधर उधर फिरते हैं आप हज़रत साहिब से निवेदन करें कि बीवी साहिबा को कहीं अलग बैठा दिया जाए। मौलवी साहब फरमाते हैं कि मैंने कहा कि मैं तो नहीं कहता आप कह कर देख लें, विवश होकर मौलवी अब्दुल करीम साहब स्वयं हज़रत साहिब के पास गए और कहा कि हुज़ूर लोग बहुत हैं बीवी साहिबा को अलग एक जगह बैठा दें। हज़रत साहब ने फरमाया जाओ जी मैं ऐसे पर्दे का समर्थक नहीं हूं। मौलवी साहब फरमाते थे कि उसके बाद मौलवी अब्दुल करीम साहेब सर नीचे झुकाए मेरी ओर आए मैंने कहा मौलवी साहब जवाब ले आए।

(सीरत उल महदी भाग प्रथम रिवायत 77 पृष्ठ 55)

मियां बीवी में कड़वाहट का कारण कुछ ना कुछ एक दूसरे के

मिज़ाजों से परिचित न होना भी होता है। मर्द सामान्यता यह चाहता है कि बीवी उसके स्वभाव के अनुसार हो जाए और बीवी मर्द के मिज़ाज को बदलना चाहती हैं। इस संबंध में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का एक ईमान वर्धक वृतांत सुनें कि किस प्रकार अपनी बीवी के लिए आपने अपने स्वभाव में परिवर्तन किया कि आप रात को अंधेरे में सोने के आदी थे। आपने बीवी की ख़ातिर अंधेरे में सोने की आदत डाल ली।

हज़रत अम्मा जान वर्णन करती हैं - कि आप रोशनी में सोने की आदी थीं रोशनी के बगैर सो नहीं सकती थीं दूसरी ओर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अंधेरे में सोने के आदी थे। अम्मा जान के कारण हुज़ूर बत्ती जलती रखते थे, जब हज़रत अम्मा जान सो जाती तो रोशनी बुझा देते। हज़रत अम्मा जान फ़रमाती हैं जब मैं करवट लूं तो अंधेरा मालूम होता तो रोशनी के लिए कहती तो हुज़ूर अलैहिस्सलाम रोशनी कर देते। आखिरकार हुज़ूर को भी रोशनी में सोने की आदत पड़ गई और अम्मा जान के लिए हज़रत सारे घर को रोशन करने का प्रबंध करते। इस बारे में एक बार हज़रत अम्मा जान ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को संबोधित करके फरमाया हज़रत साहब का वह समय याद है जब आप को रोशनी में नींद नहीं आया करती थी और अब अगर कोने कोने में रोशनी ना हो तो आपको नींद नहीं आती। (सीरत हज़रत सैयद नुसरत जहां बेगम पृष्ठ 410)

श्रोतागण! इस्लामी समाज को सुंदर बनाने और घरों को जन्नत का नमूना बनाने की जिम्मेदारी सामान्य तौर पर मर्द औरत पर डाली गई है छोटी-छोटी बातों पर दिलों में कड़वाहट पैदा करना और छोटी-छोटी बातों को लंबा कर के घर के माहौल को गंदा कर देना अत्यंत मूर्खतापूर्ण है। शादी तो एक पवित्र संबंध है जिसको मोहब्बत और प्यार और आपसी सुकून और संतुष्टि के लिए स्थापित किया जाता है। इस सिलसिले में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश ध्यान देने योग्य है आप अलैहिस्सलाम ने फरमाया मेरे निकट यह नेमत अक्सर नेमतों की जड़ है और चूंकि मोमिन उत्तम श्रेणी के तक्वा का इच्छुक बल्कि आशिक और लोलुप होता है इसलिए मेरी राय में वह घर जन्नत की तरह पवित्र और बरकतों से भरा हुआ होता है जिसमें मर्द औरतों में मोहब्बत, प्यार और परस्पर सद व्यवहार हो। (मक्तूबात अहमद जिल्द 2 पत्र 37, पृष्ठ 50)

आदरणीय श्रोतागण! हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने इल्हाम خزوا الرفق خزوا الرفق فإنّ الرفق رأس الخيرات कि नरमी करो, नरमी करो कि तमाम नेकियों की जड़ नरमी है फरमाते हैं इस्लाम में समस्त जमाअत के लिए शिक्षा है कि अपनी पत्नियों से नरमी के साथ व्यवहार करें, वह उनकी नौकरानियाँ नहीं हैं, वास्तव में निकाह मर्द और औरत का परस्पर एक मुआहिदा है। अत: कोशिश करो कि अपने मुआहिदा में धोखेबाज़ ना ठहरो। अल्लाह तआला क़ुरआन शरीफ में फरमाता है-وَعَاشِرُوْهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ अर्थात अपनी पत्नियों के साथ अच्छे सलूक के साथ जीवन व्यतीत करो और हदीस में है خَيْرُكُمْ خَيْرُكُمْ لِاَهْلِهٖ तुम में से अच्छा वही है जो अपनी पत्नी के साथ अच्छा व्यवहार करता है। अत: रूहानी और जिस्मानी तौर पर अपनी पत्नियों से नेकी करो और उनके लिए दुआ करते रहो और तलाक से बचो क्योंकि अल्लाह के निकट बहुत बुरा है वह व्यक्ति जो तलाक देने में जल्दी करता है जिसको ख़ुदा ने जोड़ा है उसको गंदे बर्तन की तरह मत तोड़ो। (परिशिष्ट तोहफा गोलड़विया, रूहानी ख़ज़ाइन जिल्द 17 पृष्ठ 75, हाशिया)

फिर फरमाया इसी प्रकार औरतों और बच्चों के साथ संबंध और व्यवहार में लोगों ने गलतियां की हैं और सीधे रास्ते से बहक गए हैं, सीधे रास्ते से हट गए हैं। क़ुरआन करीम में लिखा है कि وَعَاشِرُوْهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ मगर अब इसके विपरीत अमल हो रहा है। फरमाया कि दो प्रकार के लोग इसके बारे में भी पाए जाते हैं एक समूह तो ऐसा है कि उन्होंने औरतों को बेहयाई करने की खुली छुट्टी दे दी है, धर्म का उन पर कोई प्रभाव ही नहीं होता और वह खुले तौर पर इस्लाम के विपरीत करती हैं और कोई उनसे नहीं पूछता। कुछ ऐसे हैं उन्होंने खुली छूट तो नहीं दी परंतु उसके मुकाबले पर ऐसी सख्ती और पाबंदी की है कि उनमें और जानवरों में कोई अंतर नहीं किया जा सकता और नौकरानी तथा जानवरों से भी बुरा व्यवहार उनसे होता है, मारते हैं तो ऐसे बेदर्द हो कर कि कुछ पता ही नहीं कि आगे कोई जानदार चीज़ है या नहीं। अत: बहुत ही बुरी तरह सलूक करते हैं। यहां पंजाब में मशहूर है कि औरत को पांव की जूती के साथ उपमा देते हैं कि एक उतार दी और दूसरे पहन ली। यह बड़ी खतरनाक बात है और इस्लाम के शिक्षा के विरुद्ध है। रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सारी बातों में उत्तम आदर्श हैं आप का जीवन देखो कि आप औरतों से कैसे व्यवहार करते थे। मेरे निकट वह व्यक्ति बुज़दिल और नामर्द है जो औरतों के मुकाबले में खड़ा होता है। (मल्फूज़ात जिल्द 2 पृष्ठ 396)

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि- "चाहिए कि पत्नियों से पतियों का ऐसा संबंध हो जैसे दो सच्चे और वास्तविक मित्रों का होता है इंसान के सदव्यवहार और ख़ुदा तआला से संबंध की पहली गवाह तो यही औरतें होती हैं अगर उन्हीं से उसके संबंध अच्छे नहीं होते हैं तो फिर किस तरह संभव है कि ख़ुदा तआला से सुलह हो, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया है خَيْرُكُمْ خَيْرُكُمْ لِاَهْلِهٖ तुम में से अच्छा वह है जो अपने पत्नी के साथ अच्छा है। (मल्फूज़ात जिल्द 3 पृष्ठ 300-301)

आदरणीय श्रोतागण! घरेलू जीवन को शान्तिमय बनाने का एक दूसरा पहलू औलाद की तरबियत भी है अगर पति पत्नी में मोहब्बत और मेल मिलाप हो और एक दूसरे के लिए दिल में सम्मान की भावना हो और दीनदारी हो तो निसंदेह औलाद पर भी इसका प्रभाव पड़ता है। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का फरमान है-اَكْرِمُوْا اَوْلَادَكُمْ وَاَحْسِنُوْا اَدَبَهُمْ औलाद की इज़्ज़त करो और उनको अच्छा अदब सिखाओ।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया - स्वयं नेक बनो और औलाद के लिए एक अच्छा आदर्श नेकी और तक्वा का हो जाओ और उसको मुत्तक़ी और दिलदार बनाने के लिए प्रयत्न और दुआ करो। जितनी कोशिश तुम उनके लिए माल जमा करने के लिए करते हो उतनी कोशिश इस बात में भी करो कि वह काम करो जो औलाद के लिए बेहतरीन आदर्श और सबक हो और उसके लिए आवश्यक है कि

सबसे पहले स्वयं अपना सुधार करो और अगर तुम उत्तम श्रेणी के मुत्तक़ी और परहेज़गार बन जाओगे और ख़ुदा तआला को राज़ी कर लोगे तो निसंदेह विश्वास किया जाता है कि अल्लाह तआला तुम्हारी औलाद के साथ भी अच्छा मामला करेगा।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 8, पृष्ठ 109-110, एडिशन 1985)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जीवनी का यह सुंदर पहलू है कि आप बच्चों में हमेशा सच्चाई और ईमानदारी पैदा करते थे और उनकी तरबियत में सख्ती के बजाय दुआ और व्यवहारिक आदर्श को ज़रूरी समझते थे। अत: एक छोटा सा घरेलू वृतांत इस बात पर खूब प्रकाश डालता है- हज़रत मुंशी ज़फर अहमद साहब कपूरथला बयान करते हैं कि एक बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम लेटे हुए थे और सैयद फज़ल अहमद शाह साहब हजूर के पांव दबा रहे थे और हज़रत साहब कुछ सो गए थे। फज़ल अहमद शाह साहब ने इशारा करके मुझे कहा कि यहां पर जेब में कुछ सख्त चीज़ बड़ी है। मैंने हाथ डाल कर निकाल ली तो हुज़ूर अलैहिस्सलाम की आंख खुल गई, आधी टूटी हुई घड़े की चपटी और दो ठीकरे थे मैं फेकने लगा तो हुजूर ने फरमाया- "यह मियां महमूद ने खेलते हुए मेरी जेब में डाल दिए आप फेंकें नहीं मेरी जेब में ही डाल दें क्योंकि उन्होंने हमें अमानत दार समझकर अपने खेलने की चीज़ रखी थी वह मांगेंगे तो हम कहां से देंगे।"

फिर वह जेब में ही डाल लिए यह छोटी सी मामूली सी घटना बताती है कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम अपने व्यवहारिक आदर्श से अपने बच्चों के अंदर बचपन से ही सच्चाई और ईमानदारी पैदा करने के कितने इच्छुक थे। इसी प्रकार आपके जीवन का एक सुंदर पहलू यह भी था कि बच्चों के बार-बार तंग करने पर भी अत्यंत व्यस्त होने के बावजूद आप परेशान नहीं होते थे। हज़रत डॉक्टर अमीर मोहम्मद इस्माईल साहिब बयान करते हैं कि मियां बशीर अहमद साहब जब छोटे थे तो उनको एक ज़माने में चीनी खाने की बहुत आदत हो गई थी। हमेशा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पास पहुंचते और हाथ फैलाकर कहते अब्बा चट्टी। हज़रत साहिब किताब लिखने में व्यस्त होते तो काम छोड़ कर तुरंत उठते, कोठरी में जाते चीनी निकाल कर उनको दे देते और फिर किताब लिखने में व्यस्त हो जाते थोड़ी देर बाद मियां साहब फिर आकर मांगने लगते और कहते अब्बा चट्टी। अभिप्राय था कि सफेद रंग की शक्कर चाहिए, हज़रत साहिब फिर उठ कर उनकी आवश्यकता की पूर्ति करते थे। अत: इस प्रकार उन दिनों में प्रतिदिन कई-कई बार यह हेराफेरी होती रहती थी। परंतु हज़रत साहिब पुस्तक लिखने में व्यस्त होने के बावजूद कुछ न कहते बल्कि हर बार उनके लिए उठते थे। (सीरतुल महदी पृष्ठ 823-824)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बच्चों को शारीरिक दंड देने के भी अत्यंत विरोधी थे। आप अलैहिस्सलाम का फरमान था कि नेक नमूना और मोहब्बत से बच्चों की तरबियत करनी चाहिए। इस बारे में क़मरुल अंबिया हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब बयान करते हैं कि मौलवी शेर अली साहब ने मुझसे बयान किया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बच्चों को शारीरिक दंड देने के बहुत विरोधी थे और जिस अध्यापक के बारे में यह शिकायत आपको पहुंचती कि वह बच्चों को मारता है तो उस पर बहुत नाराज़ होते थे और फरमाते थे "समझदार और बुद्धिमान उस्ताद जो काम हिकमत से ले लेता है वह काम नालायक और मूर्ख अध्यापक मारने से लेना चाहता है।" एक बार मदरसे के एक उस्ताद ने एक बच्चे को कुछ सज़ा दी तो आप ने सख्ती से फरमाया कि फिर ऐसा हुआ तो हम उस उस्ताद को मदरसे से अलग कर देंगे।

(सीरतुल महदी भाग 2 पृष्ठ 398)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक अवसर पर यह भी फरमाया के मेरे निकट बच्चों को यों मारना शिर्क में सम्मिलित है (कभी कभी कुछ पिताओं को सज़ाएं देने का बहुत शौक होता है) मानो अशिष्ट मारने वाला हिदायत और तरबियत में स्वयं हिस्सेदार बनना चाहता है। एक जोश वाला आदमी जब किसी बात पर दंड देता है तो जोश में बढ़ते बढ़ते दुश्मन का रूप अपना लेता है और जुर्म की हद में सज़ा से कोसों दूर निकल जाता है। अगर कोई व्यक्ति खुद्दार और अपने नफ्स की लगाम को काबू से न देने वाला हो और पूरा धेर्यवान और बर्दाश्त करने वाला और विनम्र हो तो उसे अधिकार है। (कि अगर अपराजित न हो, गुस्से में न हो बल्कि अगर सुधार के लिए सज़ा देनी हो तो उसको अधिकार है) कि किसी समय उचित तौर पर किसी सीमा तक बच्चे को सज़ा दे या आँखें दिखाए (या उसको माफ कर दे) परंतु गुस्से की हालत में हरगिज़ सज़ावार नहीं कि बच्चों की तरबीयत का ज़िम्मेदार हो।

फिर फरमाया कि जिस प्रकार और जितनी सज़ा देने में कोशिश की जाती है काश दुआ में लग जाएं और बच्चों के लिए दर्दे दिल से दुआ करने को एक आवश्यक अंग ठहरा लें इसलिए कि माता-पिता की दुआ को बच्चों के हक में विशेष रूप से कुबूल किया गया है। (मल्फ़ूज़ात जिल्द प्रथम पृष्ठ 308-309)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जीवनी का यह भी सुंदर पहलू था कि आप किसी सामान्य नुकसान के हो जाने पर बच्चों को दंड नहीं देते थे बल्कि क्षमा कर देते थे। हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहब रज़ि० अलहकम में लिखते हैं महमूद (हज़रत ख़लीफा सानी) 4 वर्ष के थे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आदत के अनुसार अंदर बैठे लिख रहे थे। मियां महमूद माचिस लेकर वहां आए और आपके साथ बच्चों का एक झुंड भी था पहले तो कुछ देर तक आपस में खेलते झगड़ते रहे फिर कुछ दिल में आया उन कागज़ों को आग लगा दी और लगे खुश होने और तालियां बजाने और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम लिखने में व्यस्त थे, सर उठा कर देखते भी नहीं कि क्या हो रहा है। इतने में आग बुझ गई और कीमती कागज़ राख का ढेर हो गए और बच्चों को किसी और काम ने अपनी तरफ खींच लिया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अगली-पिछली इबारत को मिलाने के लिए किसी पिछले कागज़ को देखने की आवश्यकता पड़ी उससे पूछते हैं खामोश, इससे पूछते हैं छुपा जाता है। आखिर एक बच्चा बोल उठा कि मियां साहब ने कागज़ जला दिए हैं। औरतें, बच्चे और घर के सब लोग हैरान और दांतो तले उंगली दबा ली कि अब क्या होगा और वास्तव में स्वाभाविक रूप से एक

बहुत बुरे दृश्य के सम्मुख आने का अनुमान और प्रतीक्षा थी और होना भी चाहिए था परंतु हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मुस्कुराकर फरमाते हैं- "खूब हुआ इसमें अल्लाह तआला की कोई मर्ज़ी और मस्लिहत होगी और अब ख़ुदा तआला चाहता है कि उससे बेहतर लेख हमें समझाए। (सीरत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा शेख याकूब अली साहिब)

हज़रत मिर्ज़ा साहिब जहां सांसारिक शिक्षा और प्रतिदिन की पढ़ाई में शारीरिक दंड को अनुचित समझते थे वहीं धर्म के सम्मान आदि के अवसर पर आप ने शारीरिक दंड दिया भी है ताकि बचपन से ही बच्चों में धर्म का सम्मान और धार्मिक स्वाभिमान क़ायम रहे।

हज़रत उम्मुल मोमिनीन ऐसी ही एक घटना हज़रत मियां बशीर अहमद साहब की बयान करती हैं कि एक बार तुम्हारे भाई मुबारक अहमद मरहूम से बचपन की बे ध्यानी में क़ुरआन शरीफ का कोई अपमान हो गया उस पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को इतना गुस्सा आया कि आप का चेहरा लाल हो गया और आपने बड़े गुस्से में मुबारक अहमद के कंधे पर एक थप्पड़ मारा जिससे उसके कोमल शरीर पर आपकी उंगलियों का निशान छप गया और आपने गुस्सा की हालत में फरमाया कि इसको इस समय मेरे सामने से ले जाओ। हज़रत मियां बशीर अहमद साहब फरमाते हैं कि मुबारक अहमद मरहूम हम सब भाइयों में से उम्र में छोटा था और हज़रत साहिब की जिंदगी में ही उसका देहांत हो गया। हज़रत साहब को उससे बहुत मुहब्बत थी। अत: उस के देहांत पर जो शेर आपने क़त्बे में लिखे जाने के लिए कहे उसका एक शेर यह भी है-

जिगर का टुकड़ा मुबारक अहमद जो पाक शक्ल और पाक ख़ू था,
वह आज हमसे जुदा हुआ है हमारे दिल को हज़ीं बनाकर।।

लेकिन इस अवसर पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने क़ुरआन शरीफ की बेहुरमती को बर्दाश्त न किया और दंड देना आवश्यक समझा। (सीरत उल महदी भाग 2 पृष्ठ 325)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जीवनी का एक सुंदर पहलू यह भी था कि आप आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत की रोशनी में कुछ अवसरों पर शिक्षाप्रद कहानियां सुना सुना कर अपने परिवार की तरबियत किया करते थे। अत: एक अवसर पर मेहमानों की अधिकता को देखकर जब घर में कुछ परेशानी के लक्षण आपने देखे तो आपने परिवार को यह शिक्षाप्रद कहानी सुनाई हज़रत मुफ्ती मोहम्मद सादिक साहब रज़ि० वर्णन करते हैं-

जब मैं 1901 ई० में हिजरत करके क़ादियान चला आया और अपनी पत्नी और बच्चों को साथ लाया। एक रात का वर्णन है कि कुछ मेहमान आए जिनके लिए जगह के प्रबंध के लिए हज़रत उम्मुल मोमिनीन हैरान हो रही थीं कि सारा मकान तो पहले ही घिरा हुआ है अब उनको कहां ठहराया जाए, उस समय हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अतिथियों के सत्कार का वर्णन करते हुए हज़रत बीबी साहिबा को परिंदों का एक किस्सा सुनाया चूंकि वह बिल्कुल जुड़ा हुआ कमरा था और दीवारों के चौखट पुराने ढंग की थी जिनके अंदर से आवाज़ आसानी से दूसरी ओर आती रहती है इसलिए मैंने सारे किस्से को सुना। फरमाया देखो एक बार जंगल में एक मुसाफिर को शाम हो गई, रात अंधेरी थी निकट कोई बस्ती उसे दिखाई न दी और वह बेचारा एक वृक्ष के नीचे रात गुज़ारने के लिए बैठा। उस वृक्ष के ऊपर एक पक्षी का घोसला था। परिंदा अपनी मादा के साथ बातें करने लगा कि देखो यह मुसाफिर हमारे घोंसले के नीचे ज़मीन पर बैठा है यह आज रात हमारा मेहमान है और हमारा कर्तव्य है कि उसकी मेहमान नवाज़ी करें। मादा ने उसके साथ सहमति जताई। दोनों ने मशवरा करके यह तय किया के ठंडी रात है और उस मेहमान को आग तापने की आवश्यकता है और तो कुछ हमारे पास नहीं हम अपना घोंसला ही तोड़कर नीचे फैंक दें ताकि वो इन को जलाकर आग ताप ले। अत: उन्होंने ऐसा ही किया और अपना सारा घोंसला तिनका तिनका कर के नीचे फेंक दिया उसको मुसाफिर ने भाग्य जाना और सब लकड़ियों को तिनकों को जमा करके आग जलाई और तापने लगा। तब वृक्ष पर बैठे परिंदों के जोड़े ने फिर परामर्श किया कि आग तो हमने अपने मेहमान को पहुंचाई और उस के वास्ते सेकने का सामान किया अब हमें चाहिए कि उसे कुछ खाने को भी दें और तो हमारे पास कुछ नहीं हम स्वयं ही उस आग में जा गिरें और मुसाफिर भूनकर हमारा गोश्त खा ले। अत: उन परिंदों ने ऐसा ही किया और अतिथि सत्कार का हक अदा किया। (ज़िक्रे हबीब पृष्ठ 85-87) तो यह है अपने परिवार के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का तरीक और नसीहत।

हज़रत मिर्ज़ा साहेब की जीवनी का एक सुंदर पहलू यह है कि बच्चों से आपकी मोहब्बत केवल अल्लाह तआला की प्रशंसा प्राप्त करने के लिए होती थी। हज़रत मौलाना अब्दुल करीम साहब रज़ि० बयान करते हैं कि आप बच्चों की देखभाल और परवरिश इस प्रकार करते थे कि एक सरसरी निगाह से देखने वाला हनुमान करे कि आप से ज्यादा औलाद की मोहब्बत किसी को न होगी और बीमारी में इतना ध्यान देते थे और देखभाल और इलाज में इतना डूब जाते थे कि मानो और कोई चिंता ही नहीं परंतु कोई बारीक नज़र से देख सकता है कि आप सब कुछ अल्लाह तआला के लिए है और ख़ुदा तआला के लिए उसके कमजोर सृष्टि की रियायत और देखभाल आधारित है आप की बड़ी बेटी इसमत साहिबा लुधियाना में हैज़ा से बीमार हुई आप अलैहिस्सलाम उसके इलाज में ऐसे दवा दारू करते कि मानो उसके बगैर जिंदगी असंभव है और एक दुनियादार दुनिया के परिभाषा में औलाद का भूखा और अत्यंत इच्छुक इससे अधिक कठिनाई उठा ही नहीं सकता। परंतु वह मर गई। इस पर आप इस सदमे से यों अलग हो गए कि मानो कोई चीज़ थी ही नहीं और जब से कभी ज़िक्र तक नहीं किया कि कोई लड़की थी।

इसी प्रकार साहिबज़ादा मिर्ज़ा मुबारक अहमद की बीमारी के दिनों में आप अलैहिस्सलाम ने दिन रात अपने कर्म से दिखाया कि औलाद की परवरिश और सेहत के लिए हमारे क्या कर्तव्य हैं। (सीरत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, शेख याकूब अली साहब इरफानी द्वारा लिखित)

बच्चों की तरबीयत के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उन्हें बचपन में ही क़ुरआन मजीद सिखाने और छोटी आयु में क़ुरआन

शेष पृष्ठ 26 पर

# हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की स्वीकृत दुआओं के ईमान वर्धक वृतांत

मुहम्मद हमीद कौसर, नाज़िर दावत इलल्लाह मर्कज़िया क़ादियान
अनुवादक: नसीरुल हक़ आचार्य

خُذْ مِنْ أَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيهِم بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ ۖ إِنَّ صَلَاتَكَ سَكَنٌ لَّهُمْ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ (सूरत अत्तौबा :103)

ग़ैर मुमकिन को यह मुमकिन में बदल देती है,
ऐ मेरे फ़लसफ़ीयो ज़ोरे दुआ देखो तो।

(कलाम महमूद)

आदरणीय सदर इज्लास एवं सम्मानित श्रोतागण!

ख़ाकसार की तक़रीर का विषय है "**हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की स्वीकृत दुआओं के ईमान वर्धक वृतांत**।"

श्रोतागण!! जो आयत आपने सुनी उसका अर्थ यह है कि हे रसूल उनके बाहुल्य में से सदक़ा (दान पुन्य) ले ताकि तू उन्हें पवित्र करे और उनके उत्थान के मार्ग प्रदान करे और उनके लिए दुआएं भी करता रह। क्योंकि तेरी दुआ उनकी संतुष्टि का पात्र है। अल्लाह तआला तेरी दुआओं को बहुत सुनने वाला और परिस्थितियों को जानने वाला है।

वर्णित आयत में अल्लाह तआला ने हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह आदेश दिया कि وَصَلِّ عَلَيْهِمْ ۖ إِنَّ صَلَاتَكَ سَكَنٌ لَّهُمْ तू उनके लिए दुआएं भी करता रह क्योंकि तेरी दुआ उनकी संतुष्टि का पात्र है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सल्लम वर्णन करते हैं: "ख़लीफ़ा वास्तव में रसूल का प्रारूप होता है। किसी मनुष्य के लिए हमेशा के लिए स्थायित्व नहीं। इसलिए ख़ुदा तआला ने इरादा किया कि रसूलों के वजूद को जो समस्त संसार के वजुदों से प्रतिष्ठित एवं प्रथम हैं प्रारूप के रूप में क़यामत तक सदैव के लिए स्थापित रखे। अत: इसी उद्देश्य से ख़िलाफ़त को निर्धारित किया ताकि संसार कभी किसी युग में रिसालत की बरकतों से वंचित न रहे"।

(शहादतुल क़ुरआन, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 6 पृष्ठ 353)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सल्लम फ़रमाते हैं:- सानिध्यप्राप्त के साथ ख़ुदा तआला का मित्रता पूर्वक संबंध है। कभी वह उनकी दुआएं स्वीकार कर लेता है और कभी अपनी इच्छा उनसे मनवाता है । जैसा कि तुम देखते हो मित्रता में ऐसा ही होता है ,किसी समय एक मित्र अपने मित्र की बात को मानता है और उसकी इच्छा अनुसार कार्य करता है और फिर दूसरा समय ऐसा भी आता है कि अपनी बात उससे मनवाना चाहता है।

पवित्र क़ुरआन के एक स्थान पर मोमिनों की दुआओं की स्वीकारिता का वादा करता है और फ़रमाता है (اُدْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ अर्थात तुम मुझसे दुआ करो मैं तुम्हारी दुआ स्वीकार करूँगा और अन्य स्थान पर अपने द्वारा अवतरित भाग्य पर ख़ुश एवं संतुष्ट रहने की शिक्षा देता है जैसा कि फ़रमाया।

وَلَنَبْلُوَنَّكُم بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْأَمْوَالِ وَالْأَنفُسِ وَالثَّمَرَاتِ ۗ وَبَشِّرِ الصَّابِرِينَ

अत: इन दोनों आयतों को एक स्थान पर पढ़ने से स्पष्ट ज्ञात हो जाएगा कि दुआओं के विषय में क्या सुन्नातुल्लाह है । और रब्ब और सेवक का क्या सामान्य संबंध है। (हक़ीक़तुल वह्यी, पृष्ठ 18-19, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 22 पृष्ठ 21)

फिर फ़रमाते हैं : لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ أَلَّا يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ (सूरत अशशुअरा : 4) अर्थात क्या तू इस शोक से स्वयं को नष्ट करेगा कि यह लोग क्यों ईमान नहीं लाते। इस आयत से ज्ञात होता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कुफ़्फ़ार के ईमान लाने हेतु इस क़दर प्राण त्याग देने वाली भावनाओं की गहराई से दुआ करते थे भय था कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस शोक से स्वयं विनष्ट न हो जाएँ। इस लिए अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि इन लोगों के लिए इतना शोक न कर इस कद्र अपने दिल को दर्दों का निशाना मत बना क्योंकि यह लोग ईमान से ला परवा हैं । और इनके अभिप्राय और उद्देष्य भिन्न हैं। (ज़मीमा बराहीन-ए-अहमदिया, भाग पंचम, पृष्ठ 62 रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 21, पृष्ठ 226)

यहाँ पर यह स्पष्टीकरण भी आवश्यक है कई बार हमारे भाई और बहनें हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ बि की सेवा में अपने किसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए दुआ की दुआ का निवेदन करते हैं और वह दुआ उनकी इच्छा अनुसार पूर्ण नहीं होती। ऐसे लोगों से निवेदन है की उनको चाहिए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की सेवा में दुआ का निवेदन करते चले जाएँ और स्वयं भी दर्दे दिल से दुआ करते रहें और फिर मामला अल्लाह तआला के सुपुर्द कर दें और अल्लाह तआला जो हम सब का प्रियतम है उसे पुकारते हुए यह दुआ करते रहें कि हे हमारी दुआओं को सुनने वाले ख़ुदा-

हो फ़ज़ल तेरा या रब्ब या कोई इब्तेला हो
राज़ी हैं हम उसी में जिसमें तेरी रज़ा हो।

श्रोतागण!! इस ब्रह्माण्ड की पूरा संचालन अल्लाह तआला के आदेश से चल रहा है। हवाएं और आँधियाँ, बारिशें सब अल्लाह तआला के आदेश से ही चलती है। किसी क़ौम या इलाक़े के लिए बारिश रहमत बन कर बरसती है। और किसी के लिए नूह की क़ौम की भांति यातना बन जाती है। अल्लाह तआला के आदेश से हवाएँ चलती भी हैं और रूकती भी हैं। संसार की कोई शक्ति हवाओं, आँधियों, बारिशों को न चलाने पर प्रभावशाली है और न रोकने पर। बड़े बड़े शक्तिशाली देशों में विनाशकारी सैलाब और आंधियां आती हैं और उनके समक्ष सरकार के समस्त प्रबंध बेबस हो जाते हैं और उनकी समस्त योजनाएं विफ़ल हो जाती हैं।

कई बार जमाअत अहमदिया को भी इन्हीं कुदरती एवं मौसमी हालतों का सामना करना पड़ता है और प्रबन्धकर्ता यह समझते हैं कि बारिश, आंधी या तूफ़ान के कारण उनका जमाअती प्रोग्राम चरमोत्कर्ष को न पहुँच सकेंगे। ऐसी परिस्तिथि में वह अपने प्रिय इमाम हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिन-स्त्रिहिल अज़ीज़ की सेवा में अपनी कठिनाई को व्यक्त करते हुए दुआ याचिका करते हैं। और अल्लाह तआला हुज़ूर अनवर की दुआओं को स्वीकात करता है। और उन आँधियों और बारिशों को जमाअत अहमदिया के उत्सवों में उल्लंघन डालने से रोक देता है। और अल्लाह तआला इन आँधियों को उसी प्रकार आदेश देता है जिस प्रकार उसने अग्नि को आदेश दिया था जिसमें हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को डाला जाना था, हे अग्नि तू ठंडी हो और उसके लिए हितकारी बन जा।

आँधियों और बारिशों के विषय में हुज़ूर अनवर अय्यदहु-ल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की दुआओं की स्वीकृति की कुछ घटनाओं का वर्णन किया जाता है।

(1) 2004 ई. में अफ्रीका के दौरे के समय हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ नाइजीरिया से बेनिन पहुंचे और मिशन हाउस में आगमन हुआ तो असर का समय था प्रचंड मूसलाधार वर्षा हो रही थी नमाज़ के लिए सहन में मार्की लगाई गई थी जो चारों ओर से खुली हुई थी और बारिश के कारण वहां नमाज़ पढ़ना अत्यंत कठिन बल्कि खड़े होना भी असंभव था।

हुज़ूर बाहर आए और नमाज़ के समय के संबंध में पूछा। बताया कि इस समय तो अत्यंत बारिश बरस रही है और नमाज़ के लिए बाहर मार्की लगाई हुई है। किंतु वर्षा के कारण कठिनाई हो रही है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने आसमान की ओर दृष्टि उठाई और फ़रमाया 10 मिनट बाद नमाज़ पढ़ेंगे। उसके पश्चात हुज़ूर अंदर चले गए। अभी दो-तीन मिनट ही गुज़रे थे कि अचानक बारिश थम गई। आसमान साफ़ हो गया देखते ही देखते धूप निकल आई और उसी मार्की के नीचे नमाज़ की व्यवस्था हो गई। स्थानीय लोग इस निशान पर बहुत अचंभित हुए उनका कहना था कि यहां वर्षा शुरू हो जाए तो कई कई घंटे चलती है। हुज़ूर अनवर ने 10 मिनट कहा तो यह 3 मिनट में ही समाप्त हो गई और न केवल समाप्त हुई बल्कि बादल भी गायब हो गए।

(2) इसी प्रकार कैनेडा के दौरे के समय जब कैलगिरी मस्जिद का नींव पत्थर रखा जाना था एक दिन पूर्व अमीर साहिब कैनेडा ने हुज़ूर अनवर की सेवा में निवेदन किया कि मौसम विभाग ने सूचना दी है कि मौसम अत्यंत खराब रहेगा। बड़ी तेज़ बारिश है और तूफानी हवाएं चलेंगी। और कल सुबह मस्जिद का नींव पत्थर रखा जाना है। अतिथि गण भी आ रहे हैं। अमीर साहब ने दुआ का निवेदन किया।

इस पर हुज़ूर अनवर कुछ विराम किया। और फिर फ़रमाया "जिस मस्जिद का नींव पत्थर हम रखने जा रहे हैं वह भी ख़ुदा ही का घर है और मौसम भी ख़ुदा के हाथ में है। इसलिए ख़ुदा पर छोड़ दें। अल्लाह फ़ज़ल फ़रमाएगा।

अत: अगले दिन सुबह बारिश का कोई नामोनिशान नहीं था। बड़ा सुहाना मौसम था नींव पत्थर समारोह का आयोजन हुआ। लगभग 2 घंटे का प्रोग्राम क प्रोग्राम था। आयोजन से विमुक्त होकर हुज़ूर अनवर जैसे ही अपनी कार में बैठे तो कार का दरवाज़ा बंद होते ही अचानक तेज़ बारिश आरंभ हो गई और साथ उग्र एवं तेज़ हवाएं चलने लगीं जो लगातार तीन चार घंटे तक जारी रहीं। यह एक निशान था जो हुज़ूर अनवर की दुआ से वहाँ प्रकट हुआ और प्रत्येक व्यक्ति का दिल इस निशान को देखकर अल्लाह तआला के सामने सजदा में गिरा हुआ था। (अल फ़ज़ल दुआ नम्बर 28,दिसम्बर 2015ई, पृष्ठ 43-45)

(3) 2008 ई. में कुछ कारणों से जलसा सालाना क़ादियान दिसंबर में अपनी निर्धारित तिथियों में आयोजित नहीं हो सका था बल्कि 25, 26, 27 मई 2009 ई. को आयोजित हुआ। अंतिम दिन हुज़ूर अनवर होना था समापनीय भाषण होना था। मई का महीना पंजाब में धूल से भरी आंधियों का होता है। अंतिम इज्लास (सत्र) आरंभ होते ही तेज़ आंधी चलनी आरंभ हुई। मौसम विभाग ने भी आंधी चलने एवं पर बारिश होने की सूचना दी थी। जलसा गाह में अहमदी लोगों के अन्यथा हिंदू, सिख, ईसाई मित्र भी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का भाषण सुनने के लिए एकत्रित थे। आंधी तेज़ से तेज़ होती चली जा रही थी ऐसा लगता था जलसा गाह कि प्रत्येक वस्तु को उड़ा देगी। सबसे बड़ी शंका यह थी कि यदि बिजली और एम.टी.ए की व्यवस्था में रुकावट उत्पन्न हो जाएगी। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की सेवा में सारी परिस्थिति लिख कर मौसम के सुखद होने के लिए दुआ याचिका की गई। तिलावत एवं नज़्म के पश्चात हुज़ूर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने अपने सम्बोधन के आरम्भ में फ़रमाया कि "क़ादियान से सूचना मिली है कि अभी वहां पर तेज़ हवाएं चल रही हैं दुआ करें कि कुशलतापूर्वक जलसे का समापन हो"।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की यह दुआ अल्लाह तआला ने स्वीकार की और दो-तीन मिनट में आंधी रुक गई। मौसम जो गर्म था सुहाना हो गया और श्रोतागणन ने संतोष एवं सुकून से हुज़ूर का भाषण सुना। अलहमदुलिल्ला अला ज़ालिक। अपनों के अन्यथा हिंदू, सिख, मित्रों ने भी इस बात को स्वीकार किया कि यह हुज़ूर की दुआ की स्वीकृति का एक निशान है। हज़रत ख़ली-फ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह की दुआ की स्वीकृति की एक ईमानवर्धक घटना घाना से संबंध रखती है। हुज़ूर अनवर जब 2004ई. में जब घाना गए तो यात्रा के अवसर पर हुज़ूर ने घाना के निवासियों को खुशखबरी दी कि घाना की ज़मीन से तेल निकलेगा। अत: जब 2008ई. में हुज़ूर ख़िलाफ़त जुबली के अवसर पर पुन: घाना गए तो घाना के राष्ट्रपति ने हुज़ूर से मुलाकात के अवसर पर कहा कि हमारे देश के लिए दुआएं स्वीकार हो रही हैं। हुज़ूर ने अपनी पिछली यात्रा के अवसर पर फ़रमाया था कि घाना की ज़मीन में तेल है और यहाँ से तेल निकलेगा। हुज़ूर अनवर की यह दुआ अत्यंत शान से स्वीकार हुई और पिछले वर्ष घाना से तेल निकल आया।

इस संदर्भ में घाना के प्रसिद्ध नेशनल अखबार डेली ग्राफिक्स

ने अपने 17 अप्रैल 2008 ई. के अंक के पहले पृष्ठ पर हुज़ूर अनवर और राष्ट्रपति घाना की मुलाकात की रिपोर्ट प्रकाशित करते हुए लिखा "ख़लीफ़तुल मसीह ने अपनी यात्रा घाना के 2004 ई.के अवसर पर घाना में तेल के पूछे जाने पर बड़े ज़ोरदार तरीके से अपने विश्वास का प्रकटन किया था और यही विश्वास पिछले वर्ष वास्तविकता में बदल गया और घाना की ज़मीन से तेल निकल आया। (अल फ़ज़ल दुआ नंबर 28, दिसम्बर 2015 ई., पृष्ठ 43-45)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "यदि मुर्दे जीवित हो सकते हैं तो दुआओं से और यदि क़ैदी रिहाई पा सकते हैं तो दुआओं से"(लेक्चर सियालकोट,रूहानी ख़ज़ायन,जिल्द 20,पृष्ठ 234)

श्रोतागण! अल्लाह तआला ने हुज़ूर अनवर की दुआओं से बंदियों और कैदियों की रिहाई के सामान पैदा कर दिए। इस विषय में वर्णन है कि: एक मित्र मुज़फ्फरुस्सईद त्युन्स के रहने वाले हैं, उन्हें धार्मिक रुझान रखने के कारण आतंकवाद की धाराएं लगाकर जेल में डाल दिया गया और फिर बार-बार जेल से रिहाई एवं क़ैद का सिलसिला जारी रहा जिसके दौरान उन्होंने अहमदियत के विषय में सुना और खोजबीन के पश्चात मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर ईमान ले लाए। अंतिम बार जब उन्हें जेल हुई तो यह दिल से अहमदी हो चुके थे अत: जेल जाते समय हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहु-ल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बिनस्रिहिल अज़ीज़ की सेवा में पत्र लिखकर भेज दिया कि यद्यपि आरोप बहुत संगीन है किंतु दुआ करें कि अल्लाह तआला अपनी विशेष कृपा से रिहाई के सामान पैदा फ़रमाए। ख़ुदा की कुदरत देखें कि केवल 7 हफ्तों के भीतर त्युन्स में वह इंकलाब आया जिसके बाद राष्ट्रपति त्युन्स को देश से फरार होना पड़ा। इस अवसर पर समस्त कैदियों ने बगावत कर दी। उन पर जेल के संरक्षकों अंधाधुंध फायरिंग की। यह सिलसिला आठ घंटे तक जारी रहा जिसके परिणाम स्वरूप सैकड़ों की संख्या में कैदी मारे गए। मुज़फ्फरुस्सईद साहिब वर्णन करते हैं कि मेरी जेल में रात किसी क़यामत से कम न थी। सुबह होने पर सिपाहियों ने जेल के दरवाज़े खोल दिए और जिंदा बच जाने वाले कैदियों को कहा कि तुम स्वतंत्र हो।

3 महीने के बाद देश की परिस्थिति अचानक बदल गयी और एक सरकारी आदेश के अंतर्गत समस्त राजनितिक क़ैदियों की माफी का ऐलान कर दिया गया। इस प्रकार केवल ख़ुदा के फ़ज़ल से मैं भी बिना किसी भय के आज़ादी के हवाओं में सांस लेने लगा। शायद किसी के मन में यह विचार उत्पन्न हो कि मेरी रिहाई और मेरी आज़ादी इन देश के इंकलाब के कारण हुई किंतु मेरी राय इससे विपरीत है। मैं पूर्ण विश्वास से कह सकता हूं कि मेरी रिहाई हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की दुआ से हुई है। मैंने गिरफ्तारी और जेल जाते समय हुज़ूर अनवर की सेवा में दुआ का पत्र लिखा था। अत: एक तो अल्लाह तआला ने चमत्कारिक रूप से जेल में होने वाली अंधाधुंध फायरिंग से मुझे सुरक्षित रखा, अत: जेल के दरवाज़े भी खुल गए। रिहाई के पश्चात जब मैं घर पहुंचा तो वहां हुज़ूर अनवर की ओर से मेरे पत्र का उत्तर आया हुआ था। मैंने खोलकर पढ़ा हुज़ूर अनवर ने लिखा था कि अल्लाह तआला चमत्कारिक रूप से रिहाई प्रदान करे। यह पत्र पढ़ते ही मुझे विश्वास हो गया कि मेरी आज़ादी ख़लीफ़ा-ए-वक्त की दुआओं की स्वीकृति के कारण से हुई है, न किसी और कारण से।

श्रोतागण !! क़मरी महीनों (चंद्र मास) एवं वर्षों को इस्लाम में विशेषमहत्व प्राप्त है क़मरी महीनों के अनुसार चौदहवीं सदी हिजरी के 26 वें साल में क़ुरआन मजीद और सय्यदना मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल-ल्लाहो अलैहिवस्सल्लम की भविष्यवाणियों के अनुसार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की मृत्यु के पश्चात क़ादियान में 25 रबिउस्सानी सन 1326 हिज्री क़मरी को ख़िलाफ़त-ए-इस्लामिया अहमदिया का आरम्भ हुआ था। 1426 हिज्री क़मरी में इस भव्य ऐतिहासिक घटना पर एक शताब्दी पूर्ण होने वाली थी। अत: सन 1426 हिज्री क़मरी अनुसार 2005ई. के आरंभ में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने क़ादियान जलसा सालाना में भाग लेने का निर्णय किया और प्रोग्राम के अनुसार हुज़ूर अय्यदहु-ल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने क़ादियान में एक महीना रुकना था और हुज़ूर अनवर ने यह निर्देश दिया था कि समस्त ख़िताबात और ख़ुत्बात एम.टी.ए क़ादियान द्वारा सीधा प्रसारित होंगे। उस समय तक क़ादियान से सीधा प्रसारण होने का न कोई प्रबंध था और न ही उसकी कोई संकल्पना थी।

हुज़ूर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ द्वारा निर्देश प्राप्त होने के पश्चात जमाअत के प्रबंधकों ने नई दिल्ली के निकट स्थित शहर "नोएडा" में एक टीवी ब्रॉडकास्टिंग कंपनी से प्रोग्राम प्रसारण के विषय में अनुबंध तो कर लिया। परन्तु यह प्रसारण के हिंदुस्तानी सरकार की ब्रॉडकास्टिंग मिनिस्ट्री (सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय) की अनुमति के बिना संभव नहीं था इसलिए जुलाई 2005ई. में ही अनुमति के लिए याचिका दी जा चुकी थी। कार्रवाई और विनती करते हुए 6 महीने से अधिक समय बीत गया किंतु कोई उम्मीद नज़र न आई थी। अंत हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ क़ादियान से दिल्ली पहुंच गए और 15 दिसंबर 2005 ई. को हुज़ूर अनवर ने नई दिल्ली से क़ादियान के लिए आना था। उस समय तक सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ने अनुमति नहीं दी थी। यह समस्त परिस्थिति हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ज्ञान में लाई गई। हुज़ूर अनवर ने क़ादियान प्रस्थान से एक दिन पहले फ़रमाया "मैं उस समय तक क़ादियान नहीं जब तक प्रोग्राम लाइव प्रसारण करने की अनुमति नहीं हो जाती"।

अल्लाह तआला जो देशों का स्वामी है और वकील एवं समस्त कार्यों का प्रबंध करने वाला है हुज़ूर अनवर की दुआ को स्वीकार किया। उसने ऐसे अवसर उत्पन्न कर दिए कि उसी दिन शाम 5 बजे अनुमति पत्र मिल गया एवं समस्त ख़िताबात और ख़ुत्बात एम.टी.ए क़ादियान द्वारा सीधा प्रसारित हुए। अनुमति देने वालों के दिलों में अनुमति पत्र देने की प्रेरणा उत्पन्न करना किसी के बस की बात नहीं थी ऐसा केवल हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की दुआओं और अल्लाह तआला के फ़ज़ल कारण ही संभव हो सका। अल्हम्दुल्लिल्लाह

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की दुआओं से रोगियों की रोगों से मुक्ति: अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का यह वचन वर्णन किया है कि وَاِذَا مَرِضْتُ فَهُوَيَشْفِين सुरत अशशु-अरा :81) जब मैं रोगी होता हूं तो वह मुझे स्वास्थ्यप्रद करता है। संसार के डाक्टर, चिकित्सक और इलाज करने वाले और दवा तो दे सकते हैं किन्तु शिफ़ा देना उनके बस की बात नहीं। शिफ़ा केवल और केवल अल्लाह तआला ही की ज़ात ही दे सकती है। घटनाएं साक्षी हैं डॉक्टरों ने कुछ मरीज़ों को ला इलाज घोषित कर दिया किन्तु अल्लाह तआला की कृपा से हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की दुआओं के स्वरूप वह स्वास्थ्यप्रद हो गए।

श्रोतागण!! फ़िलिस्तीन के उम्र अबू अर्क़ूब साहिब ने बताया कि 5 डॉक्टरों ने उनकी बीमारी के विषय में जांच की और इस परिणाम में पहुंचे कि उन्हें कैंसर हो गया है। जो आंतड़ियों से मेदे में और फेफड़ों तक फैल गया है और डॉक्टरों ने बताया केवल 3 माह तक जीवित रहने के लक्षण हैं।

उम्र अबू अर्क़ूब साहिब वर्णन करते हैं जब उनकी बेटी को इस भयानक बीमारी का ज्ञान हुआ उसने आदरणीय मोहम्मद शरीफ औदय साहिब से जो के कबाबीर से लंदन गए हुए थे टेलिफ़ोन द्वारा संपर्क किया और उन्होंने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की सेवा में निवेदन हेतु विनम्रता पूर्वक पत्र दिया और प्यारे आक़ा ने मेरे के स्वास्थ्यप्रद होने के लिए दुआ की।

इधर डॉक्टरों ने मुझे ज़ाहिरिया फ़िलिस्तीन के स्थान से अलक़ुदुस के एक फ्रांसीसी अस्पताल में कैंसर स्पेशलिस्ट डॉक्टर के पास भिजवा दिया । उन्होंने आवश्यक चेकअप करवाए और रिपोर्ट देखने के बाद कहा कि आप पूर्ण रुप से स्वास्थ्यप्रद हो गए हैं और कैंसर का कोई नामोनिशान बाकी नहीं रहा।

उम्र अबू अर्क़ूब साहिब ने बताया कि अल्लाह तआला ने हमारे आक़ा हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की दुआओं को मेरे संबंध में स्वीकृत किया और मुझे पूर्ण शिफा एवं जीवन प्रदान किया।

अफ्रीक़ा के देश नाईजीरिया में हमारे मुरब्बी सगीर अहमद साहिब क़मर अत्यंत बीमार हो गए। उनके मस्तिष्क में क्लाट आने के कारण बीमारी इस हद तक बढ़ गयी कि कौमा में चले गए। इसी अवस्था में तीन चार दिन गुज़र गए। उनके स्वास्थ्य के विषय में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की सेवा में प्रतिदिन रिपोर्ट प्रस्तुत होती। हुज़ूर अनवर उनके पूर्ण स्वास्थ्य हेतु दुआएं कर रहे थे। एक दिन हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि उनको एक होम्योपैथिक दवाई शीघ्र दी जाए। अत: पड़ोसी मुल्क बुर्किना फासो से हमारे एक डॉक्टर यह दवाई लेकर वहां पहुंचे और यह दवाई आई.सी.यू वार्ड में जाकर उनके होठों पर लगाई।

डॉक्टर साहीब वर्णन करते हैं कि जैसे ही दवाई उनके होठों पर लगाई तो उनके शरीर ने हरकत की। फिर कुछ समय के बाद आंखें खोल दीं और अगले दिन पूर्णता होश में आ गए और उठ कर बैठ गए अल हमदुलिल्ला। खलीफ़ा-ए-वक्त की दुआओं से एक मुर्दा जीवित हो गया।

मुसलमानों की एक बहुत बड़ी संख्या यह विश्वास रखती है वर्तमान दौर में अल्लाह तआला दुआएं स्वीकृत नहीं करता ऐसा विश्वास रखने वालों को चाहिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आपके खलीफ़ा-ए-वक्त की दुआ ओं से स्वास्थ्यप्रद होने वालों की घटनाओं का अध्ययन करें तो उन्हें ज्ञात हो जाएगा जिन रोगियों को डॉक्टरों ने ला इलाज घोषित कर दिया था और कह दिया था कि यह कुछ दिनों के मेहमान हैं अल्लाह तआला ने अपने ख़लीफ़ा अय्यदहुल्लाह की दुआओं को उनके संबंध में स्वीकृत किया और एक प्रकार से मुर्दों को पुन: जीवन प्रदान किया।

## दुआ की स्वीकृति का निशान

जलसा सालाना जर्मनी में बुल्गारिया के एक मुख्लिस नव अहमदी दोस्त मित्र एटम साहिब अपनी फैमिली के साथ सम्मिलित हुए। आदरणीय ने कुछ दिन पहले ही ईसाईयत को त्याग कर इस्लाम कुबूल किया था। परन्तु उनकी बीवी ने बैअत नहीं की थी उनकी बीवी का कहना था कि मेरी तीन बेटियां हैं यदि मुझे बेटा मिल जाए तो फिर मैं भी अहमदी हो जाऊंगी। मौसुफ़ा ने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की सेवा में दुआ के लिए लिखा। अगले वर्ष जब पुन: जलसा सालाना में आईं तो सात महीने की गर्भवती थीं। मुलाकात के समय उन्होंने बच्चे का नाम रखने का प्रार्थना की तो हुज़ूर अनवर ने केवल लड़के का नाम "जाहिद" निर्धारित फ़रमाया।

जलसा सालाना से वापस जाकर महोदया ने मुरब्बी साहिब से कहा कि डॉक्टरज़ ने बताया है कि लड़की है इसलिए हुज़ूर अनवर की सेवा में पुन: निवेदन करें कि लड़की का नाम निर्धारित करें।
इस पर मुरब्बी साहिब ने कहा कि आपने तो कहा था कि यदि बेटा हो तो अहमदी हो जाऊंगी और हुज़ूर अनवर ने भी केवल बेटे का नाम निर्धारित किया है इसलिए इंशाअल्लाह तआला बेटा ही होगा। डाक्टर जो चाहें कहें। उनकी मशीन जो चाहे प्रकट करें किंतु अब आपका पुत्र ही होगा क्योंकि ख़लीफ़तुल मसीह ने पुत्र का नाम रखा है।

अत: जब बच्चे का जन्म हुआ तो अल्लाह तआला ने उन्हें बेटा ही प्रदान किया। वह जलसा सालाना के अवसर पर उस बेटे को साथ लेकर आई थीं और लोगों को बता रही थीं कि देखो यह ख़लीफ़ा-ए-वक्त की दुआओं की स्वीकृति का एक निशान है। (अलफ़ज़ल दुआ नंबर, 28 दिसंबर 2015 पृष्ठ 43-45)

श्रोतागण!! देश के विभाजन के समय पूर्वी पंजाब से जमाअत अहमदिया का एक बहुत बड़ा भाग पलायन करके पश्चिमी पंजाब की ओर जाने पर विवश हो गया जिसके कारण पूर्वी पंजाब में स्थित जमाअत के कुछ पवित्र एवं ऐतिहासिक स्थान अहमदी आबादियों से अस्थायी रूप से खाली हो गए। उन्हीं में से एक दारुल बैअत लुधियाना था। वह ऐतिहासिक एवं पवित्र स्थान है जिसमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने 23 मार्च 1889 ई. को जमाअत अहमदिया की नींव रखी थी। यह

ऐतिहासिक मकान सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान की संपत्ति थी और है। किन्तु जब वहाँ कोई अहमदी आबादी न रही तो यह मकान भी खाली रह गया। कुछ समय के पश्चात एक ग़ैर मुस्लिम मित्र को उनके निवेदन पर दारुल बैअत कुछ किराए पर आवास के लिए इस शर्त पर दे दिया गया कि वह अपने निवास का शीघ्र अति शीघ्र प्रबंध कर लें। और दारुल बैअत को खाली करके जमाअत के सुपुर्द कर दें, किंतु उन्होंने अपने वादे का उल्लंघन किया और ऐसा न किया ,विवश होकर सदर अंजुमन अहमदिया को खाली निकास हेतु अदालत की ओर जाना पड़ा और लगभग (30) वर्ष तक यह मुकदमा चल रहा था और अदालत की ओर से निर्णय न होने के कारण जमाअत दारुल बैअत से वंचित थी। दिसंबर 2005 के अंत पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ क़ादियान आए हुज़ूर अनवर से एक व्यक्ति-गत मुलाकात के अवसर पर ख़ाकसार (मोहम्मद हमीद कौसर) ने दारुल बैअत के निकास के लिए दुआ का निवेदन किया और कहा हुज़ूर! अब तो परिस्थिति यहाँ तक पहुंच गई है उसमें रहने वाले जमाअत के लोगों को भी दुआ करने के लिए अंदर जाने की अनुमति नहीं देते। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया मुझसे पहले भी कुछ मित्रों ने इस विषय में बात की है। इसके पश्चात हुज़ूर अनवर कुछ देर खामोश रहे और फ़रमाया :

"इंशाअल्लाह तआला, अल्लाह तआला फ़ज़ल फ़रमाएगा"

हुज़ूर अनवर की पवित्र जिह्वा से निकले हुए यह दुआया शब्द ख़ुदा तआला के दरबार में स्वीकृत हुए और ख़ुदा तआला के फ़ज़्लों का सिलसिला आरंभ हुआ और निकासी के रास्ते में रास्ते में जो रुकावटें थी एक के बाद दूसरी दूर होनी आरम्भ हो गईं। दूसरा समूह मुकदमा हार गया। इसके बावजूद जमाअत ने उनके साथ एहसान का बर्ताव किया और एक बड़ी रक़म उनको ताकि वह कहीं और अपने निवास का प्रबंध कर लें और यह प्रयास किया कि वह नाराज़ होकर दारुल बैअत से न निकलें। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की दुआओं एवं ध्यान से अल्लाह तआला ने उनके दिलों को सुलह की ओर आमंत्रित किया और वह अपनी इच्छा से शुक्रिया अदा करते हुए दारुल बैअत से चले गए और उनके लिए भी अल्लाह तआला ने आवास का एक उच्च प्रबंध कर दिया।

यह बात वर्णन योग्य है कि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ तिथि 15 जनवरी 2006ई. को क़ादियान से लौटे और प्रस्थान के एक महीने के पश्चात 15 फरवरी 2006 ई. को दारुल बैअत का क़ब्जा लेने के लिए बात आरंभ हो गई और फिर शीघ्र ही सदर अंजुमन अहमदिया को दारुल बैअत मिल गया। यह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की दुआओं का ही परिणाम था कि 59 वर्ष के पश्चात दारुल बैअत जमाअत को मिल गया और उसे आगुन्तकों के लिए दुआएं करने और नमाज़ों के पढ़ने के लिए खोल दिया गया और अलहमदुलिल्ला अब तक यह सिलसिला जारी है।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने ख़िलाफ़त के मसनद (आसन) पर विराजमान होने से पहले दुआ की स्वीकृति का वर्णन फ़रमाया है उनमें से एक यह है हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं कि मेरी उम्र उस समय 17 वर्ष की होगी कि मुझे अपने पिता स्वर्गीय मिर्ज़ा मंसूर अहमद साहिब से कुछ चाहिए था किंतु प्रत्यक्ष रूप से में उनसे मांगना नहीं चाहता था। अत: मैंने अल्लाह तआला के समक्ष दुआ की कि वह मेरे पिता श्री के दिल में यह विचार पैदा कर दे कि वह मेरे अनुरोध को पूर्ण कर दें। अल्लाह तआला ने मेरी दुआओं को स्वीकृत किया और 20-25 मिनट पश्चात मेरे पिता श्री ने मुझे बुलाया और मेरी इच्छा पूर्ण कर दी। अल्हम्दुलिल्लाह अला ज़ालिक।

एक और घटना का वर्णन करते हुए हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि यदि शुद्ध होकर अल्लाह तआला की इबादत की जाए तो नि:संदेह वह दुआओं को स्वीकृत करता है। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया एक बार विद्यार्थीवस्था के समय मेरे गणित की परीक्षा थी और मैंने इसमें कुछ अच्छा नहीं किया था और परीक्षा कक्ष से बाहर आते हुए मुझे विचार हुआ कि शायद मैं फेल हो जाऊंगा। अत: मैंने बहुत दुआएं कीं ताकि किसी प्रकार पास हो जाऊं। रब्वाह की मस्जिद मुबारक के एक कोने में एक दिन मैंने बहुत दुआ कि वह दुआएं मेरे दिल से निकली थीं और उन दुआओं से मुझे विश्वास हो चुका था कि अल्लाह तआला ने उन्हें स्वीकृत कर लिया है और मैं परीक्षा में सफ़ल हो जाऊंगा और जब परिणाम निकला तो मैं उत्तीर्ण हो गया। कुछ समय पश्चात मुझे ज्ञात हुआ कि एजुकेशन बोर्ड ने यह निर्णय लिया था कि विद्यार्थियों को कुछ अनुग्रहित नंबर दिए जाएँ और यही वह अधिक नम्बर थे जिनके कारण में पास हो गया।

श्रोतागण! हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की दुआओं की स्वीकृति के वृतांत तो बहुत हैं परन्तु समय के अनुकूल कुछ ही घटनाओं का वृतांत किया जा सका है। किन्तु वास्तविकता यह है कि इस युग में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ा-मिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ही वह अस्तित्व हैं जिनकी अल्लाह तआला सबसे अधिक दुआएं सुनता और स्वीकृत करता है।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ जमाअत के लोगों को संबोधित करते हुए फ़रमाते हैं: "अत: याद रखें कि दुआ एक ज़बरदस्त हथियार है और इसकी भव्य बरकते हैं। इसलिए अपने प्रत्येक कार्य में सफ़लता के लिए दुआओं पर बल दें और अपनी दुआओं का वृत्त बढ़ाएं, आप अपनी दुआओं में अपने प्रिय और निकट रिश्तेदारों के लिए दुआएं करें। ख़िलाफ़त की स्थिरता और जमाअत की तरक्की के लिए दुआएं करें। उम्मत के लिए दुआएं दुआ करें अपने मुल्क की सलामती और प्रत्येक प्रकार की खुशहाली के लिए दुआ करें। अपने घर वालों को भी दुआ की बरकतों से सचेत करते रहें। अल्लाह तआला आप सबको स्वीकृत दुआओं की क्षमता प्रदान करे। आमीन (रोज़नामा अल फ़ज़ल तिथि दिसंबर 28 दिसंबर 2015 पृष्ठ 3)

☆ ☆ ☆

# हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई- समय की मांग और ख़ुदाई सहायता के आलोक में

(मन्सूर अहमद मसरूर, एडिटर साप्ताहिक अख़बार बदर)

अनुवादक - इब्नुल मेहदी लईक़ एम् ए

आदरणीय सभापति महोदय तथा सम्मानित श्रोतागण ! अस्स्लामो अलैकुम व रेह्मतुल्लाहे व ब्राकातुहू। जैसा की आपने सुन लिया है विनीत के भाषण का शीर्षक है "सदाक़त हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम युग की आवश्यकता तथा आकाशीय सहायता के आलोक में"

विनीत भाषण के पहले भाग अर्थात् युग की आवश्यकता के बारे में संक्षिप्त रूप से कुछ वर्णन करता है। सम्मानित श्रोतागण ! चौदहवीं शताब्दी का युग इस्लाम के लिए इतनी अधिक आपदाओं तथा मुसीबतों का युग था कि जिसकी उदाहरण पहले कभी नहीं पाई गई। दो प्रकार से इस्लाम को घोर कठिनाइयों का सामना था। आंतरिक रूप से, मुसलमान इस्लाम से बहुत दूर हो चुके थे, और दूसरे बाह्य रूप से कि विभिन्न धर्म बड़ी तीव्रता से इस्लाम पर हमला कर रहे थे। जहाँ तक आंतरिक मुसीबतों का सवाल है, मुसलमानों की व्यावहारिक स्थिति तथा आस्था पूरी तरह से नष्ट हो गई थी। नामज़, रोज़ा, ज़कात तथा हज से दूर का भी संबंध न था। कुरआन को बिलकुल रद्दी की तरह छोड़ दिया है। लाखों हैं जो कलिमा तक को नहीं जानते। आस्था की यह अवस्था है कि अल्लाह और उसके रसूलों, और उसके फ़रिश्तों और कुरआन करीम के बारे में ऐसी-ऐसी मान्यताएं बना ली गई हैं कि इस्लाम की वास्तविकता ही भुला दी गई हैं। उलमा इस्लाम की जड़ों को खोखला करने में लगे हैं, लोग जानवरों सामान हो गए। हाकिम एश्वर्य में तथा अधिकारी विश्वासघात में व्यस्त हो गए। नैतिकता, जो मुसलमानों का एक विशेष गुण होता था, आज उनसे बहुत दूर जा चुका है। "आज यह सवाल नहीं है कि लोगों ने इस्लाम की कौन सी बात छोड़ दी है, अपितु यह सवाल पैदा हो गया है कि इस्लाम की कौन सी बात मुसलमानों में शेष बची है।" (दावतुल अमीर)

जहाँ तक बाह्य मुसीबतों का सवाल है प्रत्येक ओर से इस्लाम आपत्तियों का निशाना बना हुआ है। इस्लाम पर लाखों ऐतराज़ हो रहे हैं और करोड़ों की संख्या में पुस्तकें प्रकाशित की गईं। मुस्लिम देश एक ओर परस्पर शत्रू बने हुए हैं,तो दूसरी ओर प्रत्येक देश आंतरिक उपद्रवों तथा झगड़ों का लक्ष्य स्थान बना हुआ है। लोग सरकार के विरुद्ध तथा सरकार लोगों के रक्त की प्यासी है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: अत: हे सत्याभिलाषियो! सोचकर देखो कि क्या यह समय वही समय नहीं है जिस में इस्लाम के लिए आकाशीय सहायता की आवश्यकता थी। क्या अभी तक तुम पर यह सिद्ध नहीं हुआ कि पिछली सदी में जो तेरहवीं सदी थी इस्लाम को क्या-क्या आघात पहुंच गए, और गुमराही के फैलने से हमें क्या-क्या असहनीय घाव सहन करने पड़े। क्या अभी तक तुम ने मालूम नहीं किया कि इस्लाम को किन-किन आपदाओं ने घेरा हुआ है? क्या इस समय तुम्हें यह ख़बर नहीं मिली कि इस्लाम से कितने लोग निकल गए, कितने लोग ईसाइयों में जा मिले, कितने नास्तिक और भौतिकवादी हो गए और शिर्क एवं बिदअत ने किस सीमा तक तौहीद और सुन्नत का स्थान ले लिया और इस्लाम के खंडन में कितनी पुस्तकें लिखी गईं और संसार में प्रकाशित की गईं। तुम अब सोच कर देखो कि क्या अब आवश्यक न था कि ख़ुदा तआला की तरफ से इस सदी पर कोई ऐसा व्यक्ति भेजा जाता जो बाहरी प्रहारों का मुकाबला करता। यदि आवश्यक था तो तुम जान बूझ कर ख़ुदा की नेमत को अस्वीकार मत करो तथा उस व्यक्ति से विमुख मत हो जाओ जिस का इस सदी पर आना इस सदी की स्थिति के अनुसार आवश्यक था। जिस की प्रारंभ से नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सूचना दी थी और वलियों ने अपने इल्हामों एवं कश्फों से उसके बारे में लिखा था, तनिक दृष्टि डाल कर देखो कि इस्लाम को किस स्तर पर विपत्तियों ने विवश कर दिया है और कैसे चारों ओर से इस्लाम पर विरोधियों के तीर छूट रहे हैं और कैसे करोड़ों लोगों पर इस विष (ज़हर) ने असर कर दिया है। यह जो ज्ञान संबंधी तूफ़ान, षडयंत्र का तूफ़ान, यह दुराचारों का तूफ़ान, यह बौद्धिक तूफ़ान, यह दर्शन शास्त्रीय तूफ़ान, यह छल और यह लोभ और लालच देने का तूफ़ान यह निषेध बातों का वैध करना तथा नास्तिकता का तूफ़ान, यह शिर्क और बिदअत का तूफ़ान है इन सब तूफ़ानों को थोड़ा आंखें खोलकर देखो और यदि शक्ति है तो इन समस्त तूफ़ानों के संग्रह का किसी पूर्व युग में उदाहरण तो वर्णन करो।
(आइना कमालाते इस्लाम, पृष्ठ-252)

सम्मानित श्रोतागण ! ऐसे समय में, गंभीर आवश्यकता के समय, मुसलमानों के मार्गदर्शन के लिए इमाम महदी और मसीह मौऊद का आगमन होना जिसकी खुशखबरी आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन शब्दों में दी थी कि हे मुसलमानों ! जब मसीह इब्ने मरियम तुम में अवतरित होगा तो तुम्हारी ख़ुशी का क्या हाल होगा? और जिसके द्वारा इस्लाम के सार्वभौमिक वर्चस्व की ख़बर अल्लाह और उसके रसूल ने अपनी क़ौम को दी। सभी धार्मिक विद्वान सहमत थे कि मसीह मौऊद चौदहवीं शताब्दी में आएगा। अत: अल्लाह और उसके रसूल की भविष्यवाणी तथा क़ौम के विद्वानों तथा पवित्र लोगों के स्वप्न के अनुसार ठीक चौदहवीं शताब्दी की शुरुआत में और ठीक आवश्यकता के समय, अल्लाह तआला ने उम्मते मोह्मदिया के साथ बहुत दयालुता का व्यवहार फ़रमाते हुए हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम को इमाम मेहदी तथा मसीह मौऊद बना कर भेजा। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"ऐसे समय में मैं प्रकट हुआ हूँ कि इस्लामी आस्थाएँ मतभेदों से भर गई थीं और कोई आस्था मतभेदों से रिक्त न थी..... मेरे लिए आवश्यक नहीं था कि मैं अपनी सच्चाई का कोई सबूत प्रस्तुत करूँ

क्योंकि आवश्यकता स्वयं सबूत है। (ज़रूरतुल इमाम, रूहानी खज़ाइन, जिल्द-13, पृष्ठ-495)

मैं समस्त उन लोगों के लिए भेजा गया हूँ जो ज़मीन पर रहते हैं बेशक वह एशिया के रहने वाले हैं और बेशक यूरोप के और बेशक अमरीका के। (तिर्याकुल क़ुलूब, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 15, पृष्ठ-515) न केवल यह कि मैं इस युग के लोगों को अपनी ओर बुलाता हूँ अपितु स्वयं युग ने मुझे बुलाया है। (पैग़ाम-ए-सुलह, रूहानी खज़ाइन,जिल्द-23, पृष्ठ-486)

यदि तुम ईमानदार हो तो शुक्र करो तथा शुक्र के सजदे करो कि वह युग जिसकी प्रतीक्षा करते-करते तुम्हारे बुज़ुर्ग बाप-दादा गुज़र गए तथा असंख्य रूहें उसके शौक में ही सफ़र कर गईं उसे तुमने प्राप्त कर लिया। अब उसकी क़दर करना अथवा न करना तथा उस से लाभान्वित होना अथवा न होना तुम्हारे हाथ में है। मैं इसका बार बार वर्णन करूँगा तथा इसके प्रदर्शन से मैं रुक नहीं सकता कि मैं वही हूँ जो समय पर लोगों के सुधार के लिए भेजा गया ताकि धर्म को ताज़ा रूप में दिलों में स्थापित कर दिया जाए। (फ़तह इस्लाम, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 3, पृष्ठ-8)

...★...★...★...

सम्मानित श्रोतागण ! अब विनीत अपने शीर्षक के दूसरे भाग की ओर आता है अर्थात सदाक़त हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आकाशीय सहायता के आलोक में। जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की आयु लगभग चालीस वर्ष थी, अल्लाह तआला ने आपको भविष्यवाणी के रूप में फ़रमाया अलैसल्लाहो बेकाफिन अब्दुहु। आकाशीय सहायता का यह प्रथम इल्हाम था। इस के बाद एक के बाद एक सहायता के इल्हाम हुए, विजयी ओर सफ़लता का वचन दिया गया। और फिर पूरा जीवन अल्लाह तआला ने अपने वचन के अनुसार आप की महान सहायता फ़रमाई।

विनीत आकाशीय सहायता में से एक महान सहायता का वर्णन करता है तथा वह है चंद्रमा तथा सूर्य ग्रहण का निशान। सय्यदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने भविष्यवाणी की थी कि जब हमारा महदी, सच्चा महदी दावा करेगा तो उसकी सच्चाई के सबूत में अल्लाह तआला इसके लिए चंद्रमा तथा सूर्य ग्रहण का निशान प्रदर्शित करेगा। जब से पृथ्वी तथा आकाश को अल्लाह ने पैदा किया है कभी किसी नबूवत का दावा करने वाले की सदाक़त के लिए यह निशान प्रदर्शित नहीं हुआ। चंद्रमा को उसके निर्धारित दिनों में से पहली तारीख को ग्रहण लगेगा तथा सूर्य को उसके निर्धारित दिनों में से मध्य तारीख को। सम्मानित श्रोतागण ! सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने 1889 ई० में बैअत आरंभ फ़रमाई तथा जमाअत की स्थापना की। ठीक पांच वर्ष पश्चात अर्थात 1894 ई० में अल्लाह तआला ने आपकी सच्चाई प्रदर्शित करने के लिए चंद्रमा तथा सूर्य ग्रहण का निशान प्रकट फ़रमाया। 1894 ई० को यह ग्रहण एशिया, यूरोप और अफ्रीका में प्रदर्शित हुआ। और अगले वर्ष 1895 ई० में अमरीका में प्रदर्शित हुआ।

सम्मानित श्रोतागण ! उन दिनों लोग कहा करते थे कि मुसलमान नष्ट हो चुके हैं। चौदहवीं सदी आरंभ हो चुकी है, इमाम महदी प्रकट होने वाला है। घर-घर इमाम मेहदी के प्रकटन की चर्चा थी। जब यह निशान प्रदर्शित हुआ तो सैंकड़ों नेक लोग हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में प्रवेश कर गए। एक ओर अहमदियों में तथा क़ादियान में उत्सव का वातावरण था तो दूसरी ओर विरोधी परेशानी और सदमे की अवस्था में थे। उलमा सख्त अपमान तथा बदनामी महसूस कर रहे थे कि मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद मसीह व महदी का दावा करने वाला मैदान में खड़ा है, और इसके लिए चंद्रमा तथा सूर्य ग्रहण का निशान प्रदर्शित हो गया है। एक व्यक्ति ने एक मौलवी से चन्द्र ग्रहण तथा सूर्य ग्रहण की हदीस के बारे में प्रशन किया। मौलवी ने कहा कि हदीस तो ठीक है परन्तु मिर्ज़ा साहिब के फंदे में न फंस जाना। विरोधी उलमा सख्त परेशानी की अवस्था में थे कि अब तो लोगों ने मिर्ज़ा साहिब को मान लेना है।

सम्मानित श्रोतागण ! विरोधी उलमा के पास इसके अतिरिक्त कोई उपाय न था कि वह हदीस को संदेह तथा शक के दायरे में लाएं तथा इस पर ऐतराज़ करें। एक ऐतराज़ उन्होंने यह किया कि हदीस बनावटी है। इसके उत्तर में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया :

"यदि किसी अत्यन्त सम्माननीय मुहद्दिस की किताब से इस हदीस का बनावटी होना सिद्ध कर सको तो हम तुरन्त एक सौ रुपया बतौर इनाम तुम्हें भेंट करेंगे। जिस स्थान पर चाहो अमानत के तौर पर पहले जमा करा लो। अन्यथा ख़ुदा से डरो जो मुझ से बैर के लिए सही हदीसों को जो रब्बानी उलेमा ने लिखी हैं बनावटी ठहराते हो।"

(तुहफ़ा गोलड़वियः,जिल्द 17, पृष्ठ-133,134)

दूसरा ऐतराज़ यह किया गया है कि चन्द्र ग्रहण रमज़ान की पहली रात में नहीं हुआ अपितु तेरहवी रात में हुआ तथा सूर्य ग्रहण रमज़ान की पन्द्रवीं तारीख को नहीं हुआ अपितु 28 तारीख को हुआ। इसके उत्तर में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया :

संसार जब से बना है चन्द्र ग्रहण के लिए तीन रातें ख़ुदा तआला के प्रकृति के कानून में निर्धारित हैं। अर्थात तेहरवीं, चौदहवीं, पन्द्रवीं .... तथा सूर्य ग्रहण के लिए तीन दिन ख़ुदा के प्रकृति के कानून में निर्धारित हैं। अर्थात क़मरी महीने का सत्ताईसवाँ, अठाईसवाँ तथा उनत्तीसवाँ दिन। (हकीक़तुल वह्यी जिल्द-22, पृष्ठ-203) अतः चन्द्र-ग्रहण का पहला दिन हमेशा तेरहवीं तारीख समझा जाता है और सूर्य-ग्रहण का बीच का दिन हमेशा महीने की 28 तारीख। (तुहफ़ा गोलड़वियः,जिल्द 17, पृष्ठ-139)

सम्मानित श्रोतागण ! जिस प्रकार अबुलहिकम अबूजेहल बन गया उसी प्रकार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विरोध में उलमा को अल्लाह तआला ने मुर्ख बना दिया। प्रथम उन्होंने कानुने कुदरत के विरुद्ध मांग की कि प्रथम रात के चांद को ग्रहण लगना चाहिए था। दूसरा उन्होंने हदीस के शब्द क़मर पर विचार नहीं किया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि हदीस में हिलाल (नवचन्द्र) का नहीं अपितु क़मर (पूर्ण चंद्रमा) का शब्द है। और तीन दिन के चांद को हिलाल कहते हैं तथा उसके पश्चात् क़मर बोला जाता है। आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया :

"यह वह बात है जिस पर समस्त अरब वालों की इस युग

तक सहमति है तथा भाषा जानने वाला कोई इसका विरोधी नहीं तथा इनकारी.....यदि तुझे संदेह हो तो कामूस और ताजुल ऊरुस तथा सहाह तथा एक बड़ी पुस्तक जिसका नाम लिसानुल अरब और ऐसा ही समस्त शब्दकोष की पुस्तकें तथा साहित्य तथा कवियों की कविताएँ तथा दोहे ध्यान से देख.....हम हज़ारों रुपया पुरस्कार तुझ को देंगें यदि तू इसके विरुद्ध साबित कर सके। अत: तू सय्यदुल अंबिया के कलाम को तथा विद्वान् इमामों के कलिमों को उनके वास्तविक अर्थों से न फेर तथा हे परहेज़गार ! ख़ुदा तआला से डर तथा उस कामिल की शान में देलेरी न कर जो अज्मों तथा अरबों से अधिक फ़सीह तथा पूर्व और उत्तर में प्रसिद्ध है.....तुम्हें क्या हो गया है जो तुम अल्लाह और रसूल के सम्मान को नहीं देखते। (नुरुल हक़, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द-8, पृष्ठ-197)

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया : जब से संसार बना है किसी नुबूवत का दावा करने वाले के लिए यह निशान प्रकट नहीं हुआ। यदि कोई ऐसा सबूत प्रस्तुत करे तो उसके लिए आप ने एक हज़ार रुपया का पुरस्कार निर्धारित फ़रमाया। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

क्या तुम इसकी उदाहरण पहले युगों में से किसी युग में प्रस्तुत कर सकते हो ? क्या तुम किसी पुस्तक में पढ़ते हो कि किसी व्यक्ति ने दावा किया कि मैं ख़ुदा तआला की ओर से हूँ और फिर उसके युग में रमज़ान में चंद्रमा और सूर्य ग्रहण हुआ जैसा कि अब तुमने देखा। अत: यदि पहचानते हो तो वर्णन करो और तुम्हें हज़ार रुपया पुरस्कार मिलेगा यदि ऐसा कर दिखाओ। अत: साबित करो तथा यह पुरस्कार लेलो.....और यदि तुम साबित न कर सको तथा कदापि साबित नहीं कर सकोगे तो उस आग से डरो जो उपद्रवियों के लिए तैयार की गई है। (नुरुल हक़, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द-8, पृष्ठ-211)

...★...★...★...

सम्मानित श्रोतागण ! विनीत एक ओर महान सहायता का वर्णन करता है तथा वह हैं भविष्यवाणीयां। अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को निशानों और चमत्कारों से पूर्ण भविष्यवाणीयां प्रदान कीं। जो आप अलैहिस्सलाम के सत्यापन के महान निशान हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : नबूवत के निशानों में से महान निशान तथा चमत्कार, पेशगोई को बताया गया है.....पेशगोइयों के समान कोई चमत्कार नहीं है। इसलिए ख़ुदा तआला के नबियों को उनकी पेशगोइयों से पहचानना चाहिए। (लेक्चर लुधियाना, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द-20, पृष्ठ -256)

अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को हज़ारों पेशगोइयां प्रदान कीं। आप अलैहिस्सलाम ने अपनी पुस्तक तिर्याकुल क़ुलूब में 75, नुज़ूलुल मसीह में 150, और हकिक़तुल वह्यी में 208 बतौर निशानों तथा चमत्कारों और आकाशीय उदाहरणों के दर्ज फ़रमाए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"यदि आप मेरी पुस्तक 'नुज़ूलुलमसीह' को देखें तो आप को ज्ञात होगा कि ख़ुदा ने निशानों के दिखाने में कोई अन्तर नहीं किया। जिस प्रकार पृथ्वी का एक बड़ा भाग समुद्र से भरा हुआ है ऐसा ही यह सिलसिला ख़ुदा के निशानों से भर गया। कोई दिन ऐसा नहीं गुज़रता जिसमें कोई न कोई निशान प्रकट न हो।" (तजल्लियात-ए-इलाहिया, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द-20,पृष्ठ-411)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"मैं कहता हूँ कि मोमिन के लिए तो एक शहादत (निशान) भी काफ़ी है। उसी से उसका दिल कांप जाता है। परन्तु यहाँ तो एक नहीं सैंकड़ों निशान मौजूद हैं अपितु मैं दावे से कहता हूँ कि इतने अधिक हैं कि मैं उन्हें गिन नहीं सकता।" (लेक्चर लुधियाना, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द-20, पृष्ठ-257)

सम्मानित श्रोतागण ! हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने नशानों पर निशान दिखाए परन्तु विरोधियों ने इंकार पर इंकार किया। मुबाहिसा मुद्द में मौलवी सनाउल्लाह अमृतसरी ने बड़ी ही बेशर्मी से यह झूठ बोला कि मिर्ज़ा साहिब की समस्त पेशगोईयां झूठी निकलीं। इसके अतिरिक्त और भी कई झूठ बोले जिसके उत्तर में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने पुस्तक एजाज़े अहमदी लिखी। मौलवी सनाउल्लाह के झूठ के उत्तर में आप अलैहिस्सलाम ने लिखा : यदि यह सच्चे हैं तो क़ादियान में आकर किसी पेशगोई को झूठा तो साबित करें तथा प्रत्येक पेशगोई के लिए एक-एक सौ रुपया का पुरस्कार दिया जाएगा तथा आने-जाने का किराया अलग। (एजाज़े अहमदी, रूहानीख़ज़ाइन, जिल्द-19, पृष्ठ-118) फ़रमाया :

स्मरण रहे कि पुस्तक 'नुज़ूलुल मसीह' में डेढ़ सौ भविष्यवाणियां मैंने लिखी हैं तो मानो झूठा होने की स्थिति में पन्द्रह हज़ार रुपया मौलवी सनाउल्लाह साहिब ले जाएंगे और घर-घर भीख मांगने से मुक्ति होगी। बल्कि हम अन्य भविष्यवाणियां भी सबूत के साथ उनके सामने प्रस्तुत कर देंगे और उसी के वादे के अनुसार प्रति भविष्यवाणी एक सौ रुपया देते जाएंगे। इस समय मेरी जमाअत एक लाख से अधिक है। यदि मैं कथित मौलवी साहिब के लिए अपने मुरीदों से एक-एक रुपया भी लूंगा तब भी एक लाख रुपया हो जाएगा वह सब उनको भेंट होगा। जिस हालत में वह दो- दो आना के लिए घर-घर खराब होते फिरते हैं और ख़ुदा का प्रकोप आ चुका है तथा मुर्दों के कफ़न या उपदेश के पैसों पर गुज़ारा है यह एक लाख रुपया प्राप्त हो जाना उनके लिए एक स्वर्ग है परन्तु यदि मेरे इस बयान की ओर ध्यान न दें तथा इस पड़ताल के लिए कथित शर्तों की पाबन्दी जिसमें सत्यापन एवं झुठलाने की दोनों शर्तें हैं, क़ादियान में न आए तो फिर लानत है उस बकवास पर जो उन्होंने मुबाहसा के साथ गांव मुद्द में की और अत्यन्त निर्लज्जतापूर्वक झूठ बोला। (एजाज़े अहमदी, रूहानीख़ज़ाइन, जिल्द-19, पृष्ठ-132)

फ़रमाया : मेरी कोई भविष्यवाणी ऐसी नहीं है जो पूरी नहीं हुई ..... यदि कोई खोजते-खोजते मर भी जाए तो ऐसी कोई भविष्यवाणी जो मेरे मुख से निकली हो उसे नहीं मिलेगी जिसके सन्दर्भ में वह कह सके कि खाली गई..... मैं दावे से कहता हूं कि मेरी हज़ारों खुली और स्पष्ट भविष्यवाणियां हैं जो बड़े प्रत्यक्ष रूप से पूरी हो गईं, लाखों मनुष्य जिनके साक्षी हैं। इसका उदाहरण यदि पहले नबियों में से खोजा जाए तो हज़रत मुहम्मद साहिब के अतिरिक्त किसी और स्थान पर नहीं मिलेगा।

(कश्ती नूह, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द-19, पृष्ठ-6)

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : जितना अधिक ख़ुदा.....ने मुझ से संबोधन तथा बात की है तथा जितने अधिक परोक्ष की बातें मुझ पर प्रकट कीं हैं तेरह सौ वर्ष में किसी व्यक्ति को आज तक सिवाए मेरे यह नेअमत प्रदान नहीं की गई। यदि कोई इनकारी हो तो सबूत देना उसके ऊपर है। (हकीकतुल वह्यी, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द-22, पृष्ठ-406)

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : यदि मेरे मुक़ाबले पर समस्त संसार कि क़ौमें एकत्रित हो जाएँ और इस बात की मुक़ाबले द्वारा परीक्षा हो कि किस को ख़ुदा परोक्ष की ख़बरें देता है.....तथा किस के लिए बड़े-बड़े निशान दिखता है तो मैं ख़ुदा की क़सम खा कर कहता हूँ कि मैं ही विजयी रहूँगा। (हकीकतुल वह्यी, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द-22, पृष्ठ-181)

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : मैं ख़ुदा से यकीनी ज्ञान प्राप्त कर के कहता हूँ कि यदि यह समस्त मौलवी तथा उनके अनुकरण करने वाले तथा उनके मुल्हीम एकत्र हो कर इल्हामी बातों में मुझ से मुक़ाबला करना चाहें तो ख़ुदा उन सब के मुक़ाबले पर मुझे विजयी करेगा क्योंकि मैं ख़ुदा की ओर से हूँ। (अंजामे आथम, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द-11, पृष्ठ-341)

..★...★...★...

सम्मानित श्रोतागण ! विनीत एक और आकाशीय सहायता का वर्णन करता है तथा वह है अल्लाह तआला की ओर से आप अलैहिस्सलाम को कुरआन का ज्ञान प्राप्त होना। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

आज से लगभग 20 वर्ष पहले बराहीने अहमदिया में यह इल्हाम दर्ज है اَلرَّحۡمٰنُ- عَلَّمَ الۡقُرۡاٰن इस इल्हाम के संदर्भ से ख़ुदा ने मुझे कुरआन के ज्ञान प्रदान फ़रमाए हैं.....और संमदर के समान आध्यात्मिकता और वास्तविकता से भर दिया है। और मुझे बार-बार इल्हाम दिया है कि इस युग में कोई ख़ुदाई आध्यात्मिकता तथा ख़ुदाई प्रेम तेरी आध्यात्मिकता और प्रेम के बराबर नहीं। (ज़रुरतुल इमाम, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द-13, पृष्ठ-502)

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : एक और भविष्यवाणी ख़ुदा का निशान है..... वह यह है الرَّحمان عَلَّمَ ٱلقُرآن इस आयत में अल्लाह तआला ने क़ुर्आन के ज्ञान का वादा दिया था तो उस वादे को इस प्रकार से पूरा किया कि अब किसी को क़ुर्आनी मआरिफ़ में मुकाबले की शक्ति नहीं। मैं सच-सच कहता हूं कि यदि कोई मौलवी इस देश के समस्त मौलवियों में से क़ुर्आन के मआरिफ़ में मुझ से मुकाबला करना चाहे और किसी सूरह की एक तफ़्सीर मैं लिखूं तथा एक कोई अन्य विरोधी लिखे तो वह अतयन्त अपमानित होगा और मुकाबला नहीं कर सकेगा। यही कारण है कि आग्रह के बावजूद मौलवियों ने इस ओर मुख नहीं किया अत: यह एक महान निशान है परन्तु उनके लिए जो इन्साफ़ और ईमान रखते हैं।

(अंजामे आथम, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द-11, पृष्ठ-291)

सम्मानित श्रोतागण ! मौलवी मोहम्मद हुसैन बटालवी बहुत अत्याचार तथा अन्याय के मार्ग से लोगों में यह मशहूर करता रहा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अरबी के ज्ञान तथा कुरआन के ज्ञान से बिलकुल बेख़बर हैं। लोगों को गुमराही से बचाने के लिए और मुहम्मद हुसैन बटालवी का झुठ प्रदर्शित करने के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उन्हें तफसीर कुरआन में मुक़बले के लिए बुलाया परन्तु मुहम्मद हुसैन बटालवी ने विभिन्न उपायों,बहानो और बेहूदा शर्तों से भागने का मार्ग अपनाया।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने दूसरी बार फिर उन्हें मुक़ाबले के लिए बुलाया ताकि समझाने का अंतिम प्रयास पूर्ण हो जाए। इसके लिए आप ने पुस्तक करामातुस्सादिकीन कुछ दिनों में लिख कर प्रकाशित की जिस में सूरह फातिहा की तफसीर लिखी और 661 अशआर पर आधारित चार कसीदे आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की प्रशंसा में लिखें हैं तथा उसकी उदाहरण लाने के लिए मुहम्मद हुसैन को विशेष रूप से तथा समस्त मौलिवियों को पुरे एक महीने की मोहलत दी। आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया :

यदि पंचों की गवाही से यह साबित हो जाए कि उनके क़सीदे तथा उनकी तफसीर से.....मेरे क़सीदे तथा मेरी तफसीर से.....बढ़ कर हैं तो मैं हज़ार रुपया नक़द उनमें से ऐसे व्यक्ति को दूंगा जो प्रकाशन के दिन से एक महीने के भीतर ऐसे क़सीदे तथा ऐसी तफसीर पत्रिका के रूप में प्रकाशित करे। (करामातुस्सादिकीन नंबर-4, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द-7, पृष्ठ-49)

आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया : "वह समस्त मौलवी जिनकी बुद्धि में अहंकार का कीड़ा है और जो इस विनीत को बावजूद बार-बार ईमान को प्रदर्शित करने के काफ़िर तथा मुर्तद मानते हैं तथा अपने आप को बहुत कुछ समझते हैं इस मुक़ाबले के लिए आमंत्रित हैं। चाहे वह देहली में रहते हों.....और अथवा लखुखे के.....और अथवा लाहौर में अथवा किसी और शहर में.....अब उनकी शर्म और लज्जा की सीमा यही है कि मुकाबला करें तथा हज़ार रुपया लेलें। (करामातुस्सादिकीन नंबर-4, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द-7, पृष्ठ-63)

सम्मानित श्रोतागण ! इसके पश्चात् आपने पीर मेहर अली शाह गोलडवी को विशेष रूप से तथा समस्त उलमा को लाहौर में एक जलसा करके कुरआने मजीद की चालीस आयात की अरबी में तफसीर के मुक़ाबले के लिए बुलाया। पीर मेहर अली शाह गोलडवी ने विभिन्न बहानों से भागने का मार्ग अपनाया तथा लोगों को धोखा देना चाहा कि वह मुक़ाबले के लिए तैयार है तथा मुक़ाबला कर सकता है।

सम्मानित श्रोतागण ! नबी का कार्य है बार-बार समझाने के अंतिम प्रयास को पूर्ण कर देना ताकि जो हिदायत पाने की शक्ति रखते हैं हिदायत प्राप्त कर लें। अत: दूसरी बार समझाने के अंतिम प्रयास को पूर्ण करने हेतु आप अलैहिस्सलाम ने उन्हें सुरह फातिहा की तफ़सीर लिखने के लिए मुक़ाबले का निमंत्रण दिया। आप अलैहिस्सलाम इसके लिए 70 दिन की अवधि निर्धारित फ़रमाई कि इस अवधि में तुम भी अपने घर बैठ कर सुरह फातिहा की तफ़सीर लिख कर प्रकाशित करो और मैं भी प्रकाशित कर दूंगा। आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया :

"इन्हें आज्ञा है कि वह इस तफ़सीर में समस्त संसार के उलमा से सहायता लें। अरब के विद्वान बुला लें। लाहौर तथा विभिन्न शेहरों

के अरबी विद प्रोफेसरों को भी सहायता के लिए बुला लें। 15 दिसंम्बर 1900 ई० से 70 दिन तक इस कार्य के लिए हम दोनों को मोहलत है.....यदि मुक़ाबले में तफ़सीर लिखने के बाद अरब के तीन मशहूर साहित्यकार इनकी तफ़सीर को सरलता, सुगम्यता और सुबोधता के अलंकारो से परिपूर्ण और सारगर्भित बताएं तो मैं पांच सौ रुपया नक़द इनको पुरस्कार दूंगा। तथा समस्त अपनी पुस्तकें जला दूंगा तथा इनके हाथ पर बैअत कर लुंगा।" (अरबईन नंबर-4, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 17, पृष्ठ- 449 हाशिया)

सम्मानित श्रोतागण ! आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया : अवधि के अन्दर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एजाज़ुल मसीह के नाम से सरल, सुबोध अरबी भाषा में सुरह फातिहा की तफ़सीर प्रकाशित कर दी परन्तु पीर मेहर अली को कुछ भी प्रकाशित करने का सामर्थ्य न हुआ। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"मानो उनका नाम मेहर अली नहीं अपितु मुहर अली है क्योंकि वह अपने पराजित तथा खामोश रहने से पुस्तक एजाज़ुल मसीह की विजयी पर मुहर लगाते हैं।"

(नुज़ूलुल मसीह, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द-18, पृष्ठ-432 हाशिया)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

मुझे उस ख़ुदा की क़सम है जिसके हाथ में मेरी जान है कि मुझे कुरआन के रहस्य तथा ज्ञान को समझने में हर व्यक्ति पर विजयी प्रदान की गई है और अगर कोई मौलवी विरोधी मेरे ख़िलाफ आता है, जैसा कि मैंने पवित्र कुरआन की तफ़सीर के लिए बार-बार उनको बुलाया है अत: ख़ुदा उसे अपमानित और लज्जित करता है। कुरआन की जो समझ मुझे दी गई है वह अल्लाह की निशानी है। (सिराज-ए-मुनीर, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द-12, पृष्ठ-41)

सम्मानित श्रोतागण ! मुंशी इलाही बख्श अकाउनटेंट लाहौर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुरीदों में से था। इख्लास (श्रद्धा) तथा वफ़ा में बहुत बढ़ा हुआ था। सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जब 1889 ई० में बैअत के द्वारा जमाअत की स्थापना की और अपने मुरीदों को बैअत में दाखिल होने के लिए कहा तो अचानक इलाही बख्श बिगड़ गया। क़ादियान आकर उसने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को बड़ी बेबाकी से अपने स्वप्न तथा इल्हाम सुनाए तथा कहा कि एक ख्वाब में मैं आप से कहता हूँ कि मैं आपकी बैअत क्यों करूँ आप मेरी बैअत करें। सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने इस पुराने मित्र को हलाकत से बचने के लिए बहुत महान पुस्तक ज़रुरतुल इमाम लिखी। आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया :

मेरे प्रिय ! हम तो आध्यात्म, सच्चाइयों और आस्मानी बरकतों के भूखे और प्यासे हैं और एक सागर भी पीकर तृप्त नहीं हो सकते। अतएव अगर हमें कोई अपनी दासता में लेना चाहे तो यह बहुत आसान तरीक़ा है कि बैअत के आशय और उसकी वास्तविक फ़िलास्फ़ी को ध्यान में रखकर यह ख़रीद-फ़रोख़्त हम से कर ले और अगर उसके पास ऐसी सच्चाइयाँ, आध्यात्म ज्ञान और आस्मानी बरकतें हों जो हमें नहीं दी गयीं और या उस पर वे क़ुरआनी रहस्यज्ञान खोले गए हों जो हम पर नहीं खोले गए, तो बिस्मिल्लाह वह बुज़ुर्ग (वली, महात्मा) हमारी ग़ुलामी और आज्ञापालन का हाथ लेवे और आध्यात्म ज्ञान और क़ुरआन की रहस्यमयी सच्चाइयाँ और आस्मानी बरकतें हमें दे। मैं तो ज़्यादा कष्ट देना ही नहीं चाहता हमारे मुल्हम (ईश्वाणी पाने वाला) मित्र किसी एक समारोह में सूर: इख़्लास के ही सच्चे रहस्यज्ञान बयान करें। हज़ार गुना बढ़कर हम बयान न कर सकें तो हम उनके ग़ुलाम हैं।

(ज़रुरतुल इमाम, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द-13, पृष्ठ-498)

आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया :

मैं शपथ खाकर कहता हूँ कि हमारे विद्वान मित्र मौलवी अब्दुल करीम साहिब उपदेश के समय जितनी क़ुरआन शरीफ़ की सच्चाइयाँ और रहस्यज्ञान बयान करते हैं मुझे कदापि उम्मीद नहीं कि उनका हज़ारवाँ भाग भी मेरे प्रिय मित्र के मुँह से निकल सके।

(ज़रुरतुल इमाम, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द-13, पृष्ठ-498)

आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया :

हमारी जमाअत में और मेरी बैअत किए हुए सदाचारियों में एक व्यक्ति है जो महान विद्वान हैं और वह मौलवी हकीम हाफ़िज़ हाजी हरमैन नूरुद्दीन साहब हैं जो मानो सारी दुनियाँ की तफ्सीरें अपने पास रखते हैं और इसी तरह उनके दिल में अत्यधिक क़ुरआन करीम के गूढ़ज्ञान का भण्डार है। अगर आपको बैअत लेने की विशेषता दी गयी है तो क़ुरआन का एक सिपारा उन्हीं को सच्चे गूढ़रहस्यों के साथ पढ़ा दें। ये लोग दीवाने तो नहीं कि उन्होंने मुझ से ही बैअत कर ली और दूसरे मुल्हमों को छोड़ दिया। (ज़रूरतुल इमाम, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द-13, पृष्ठ-500)

आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया :

अगर वह अपनी इल्हामी ताक़त दिखलाने से पहले मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहब को क़ुरआन दानी का नमूना दिखला दें और उस विलक्षणता की चमकार से नूरुद्दीन जैसे क़ुरआन के प्रेमी से बैअत लें तो फिर मैं और मेरी सारी जमाअत आप पर न्योछावर है।

(ज़रूरतुल इमाम, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द-13, पृष्ठ-501)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

जो धार्मिक तथा कुरआनी ज्ञान तथा रहस्य सरसता, सुगम्यता तथा सुबोधता के साथ मैं लिख सकता हूँ अन्य कदापि नहीं लिख सकता। यदि एक दुनिया एकत्र हो कर मेरी इस परीक्षा के लिए आए तो मुझे विजयी पाएगी और यदि समस्त लोग मेरे मुक़ाबले के लिए उठें तो ख़ुदा तआला के फ़ज़ल से मेरा ही पल्ला भारी होगा। (अय्यामुस्सुलह, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द-14, पृष्ठ-407)

सम्मानित श्रोतागण ! विनीत अंत में सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आदेशों में से कुछ पंक्तियाँ प्रस्तुत करके अपना भाषण समाप्त करता है। आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया :

क़ुरआन करीम के ज्ञान प्रकट हो रहे हैं। अल्लाह तआला के कलाम के गूढ़ व सूक्ष्म भेद ख़ुल रहे हैं। आसमान के निशान और अद्भुत बातें प्रकट हो रही है और इस्लाम की विशेषताएं और नूरों (प्रकाश) और बरकतों का ख़ुदा तआला नए सिरे से जलवा (दर्शन)

दिखला रहा है। जिसकी आँखें देखने की हैं देखे, और जिसमें सच्चा जोश है वह मांगे और जिसमें थोड़ी सी भी अल्लाह और रसूल की मुहब्बत है वह उठे और परीक्षा ले और ख़ुदा तआला की इस पसंदीदा जमाअत में दाख़िल हो जाए। जिसकी बुनियादी ईंट उसने अपने पवित्र हाथों से रखी है। और यह कहना कि अब वही विलायत के रास्ता में रोक है और निशान प्रकट नहीं हो सकते और दुआएं क़ुबूल नहीं होतीं। यह हलाकत व तबाही का रास्ता है न कि सलामती व अमन का। ख़ुदा तआला की कृपा को मत ठुकराओ, उठो, आज़माओ और परखो। फिर यदि साधारण सूझ-बूझ और साधारण बुद्धि और साधारण बातों का व्यक्ति समझो तो न क़ुबूल करो परन्तु यदि प्रकृति का करिश्मा देखो और उसी हाथ की चमक पाओ जो हक़ (सत्य) बोलने वालों (के समर्थन) में प्रकट होता रहा है तो क़ुबूल कर लो।

(बरकातुद्दुआ, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द-6, पृष्ठ-24)

وَاٰخِرُ دَعْوٰىنَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

☆ ☆ ☆

**पृष्ठ 15 का शेष**

मजीद खत्म होने पर उनकी तकरीबे आमीन आयोजित करने की सुन्नत भी जारी फरमाई। अत: जमाअत में 1897 ईस्वी से यह रिवाज है जब से कि आपके बेटे हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहब ने क़ुरआन मजीद खत्म किया तो हुज़ूर ने उनकी तकरीब आमीन आयोजित करवाई जिसके लिए बाहर से भी लोगों को बुलाया और इस अवसर पर हुज़ूर ने एक दावत का भी प्रबंध किया और उस अवसर के लिए एक नजम भी लिखी जो "महमूद की आमीन" के नाम से प्रसिद्ध है और जिसके दो प्रारंभिक शेर इस प्रकार हैं-

तूने यह दिन दिखाया महमूद पढ़ के आया,
दिल देखकर यह एहसां तेरी सना में गाया।
सद शुक्र है ख़ुदाया सद शुक्र है ख़ुदाया
यह रोज़ कर मुबारक सुबहान मंयरानी।

इस पवित्र सुन्नत के परिणाम स्वरुप हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जमाअत में क़ुरआन मजीद की तालीम और तरबियत का एक द्वार खोल दिया। अल हमदुलिल्ला कि इस प्रकार हर घर में तरबीयत का एक अहम कर्तव्य पूर्ण हो रहा है।

आदरणीय श्रोतागण अब खाकसार अपनी तक़रीर के आखिर में हमारी जिंदगी में तरबियत के हवाले से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का एक महान फरमान हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह खामिस के ख़ुत्बा जुमा 2 जुलाई 2004 से पढ़ कर अपनी तकरीर को समाप्त करता है। हुज़ूर अनवर फरमाते हैं- मर्दों की एक मुखिया होने की हैसियत से यह भी ज़िम्मेदारी है कि मुत्तक़ी बनने और मुत्तक़ी खानदान का मुखिया बनने के लिए स्वयं भी नमाज़ की पाबंदी करें, रात को उठें या कम से कम फजर की नमाज़ के लिए तो ज़रूर उठें। अपने बीवी बच्चों को भी उठाएं जो घर इस तरह इबादत गुज़ार लोगों से भरे हुए होंगे वह अल्लाह तआला के फज़्लों और उसकी बरकतों को समेटने वाले होंगे लेकिन याद रखें कि कोशिश भी उस वक्त फलदार होगी उस समय कामयाबियाँ मिलेंगी कि जब दुआ के साथ यह प्रयत्न कर रहे होंगे। केवल उठाकर टक्कर मार मार के नहीं बल्कि दुआएं भी निरंतर करते रहें अपने लिए अपने बीवी बच्चों के लिए। इसलिए अपनी नमाज़ों में भी अपनी बीवी बच्चों के लिए बहुत दुआएं करें। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि अल्लाह तआला ने क़ुरआन शरीफ में यह दुआ सिखाई है- اصلح لی فی ذُرِیتی कि मेरी बीवी बच्चों की इस्लाह कर। अपनी हालत में पवित्र परिवर्तन और दुआओं के साथ-साथ अपनी औलाद और बीवी के लिए भी दुआ करते रहना चाहिए क्योंकि अधिकतर फ़ित्ना औलाद की वजह से इंसान पर पड़ जाते हैं और अधिकतर बीवी के कारण। अत: उनके कारण भी अक्सर इंसान पर मुसीबतें और कठिनाइयां आ जाया करती हैं तो उनके सुधार की ओर भी पूरी तवज्जो करनी चाहिए और उनके लिए भी दुआएं करते रहना चाहिए। (मलफूज़ात जिल्द 5 पृष्ठ 456-457)

फिर आपने फरमाया कि मेरा तरीका क्या है कि मैं किस तरह दुआएं मांगा करता हूं फरमाया कि मैं नियमित रूप से कुछ दुआएँ हर रोज़ मांगा करता हूं पहली यह कि अपने नफ़्स के लिए दुआ मांगता हूं कि ख़ुदा तआला मुझसे वह काम ले जिससे उसका सम्मान और तेज प्रकट हो और अपनी इच्छा अनुसार काम करने की पूरी-पूरी तौफीक प्रदान करे, दूसरे फिर अपने घर के लोगों के लिए दुआ मांगता हूं कि उनसे आंखों की ठंडक नसीब हो और अल्लाह तआला की प्रशंसा की राह पर चलें अर्थात आंखों की ठंडक बनें और अल्लाह तआला की इच्छा के अनुसार चलने वाले हों। फिर तीसरे फरमाया कि फिर मैं अपने बच्चों के लिए दुआ मांगता हूं यह सब धर्म के सेवक बनें, फिर चौथे फरमाया कि मैं अपने सच्चे दोस्तों के लिए नाम ले लेकर दुआ करता हूं। फिर पांचवें फरमाया उन सब के लिए जो इस जमाअत से जुड़े हैं चाहे हम उन्हें जानते हैं या नहीं जानते। (मलफूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 309, अल हकम 17 जनवरी 1900 ई)

अल्लाह तआला हमें वास्तविक अर्थों में अपने अधिकार और कर्तव्य पूर्ण करने की तौफीक अता फरमाए। हमारे बीवी बच्चों की ओर से हमारे लिए संतुष्टि के सामान प्रदान करे और आंखें ठंडी रखे, अल्लाह की इबादत करने वाले हों और नेकियों पर क़ायम रहने वाले हों। (ख़ुत्बात मसरूर, पृष्ठ 467)

☆ ☆ ☆

# बा-शरह चन्दा और निज़ामे वसीयत का महत्व और बरकतें

(के. तारिक अहमद, सदर मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया भारत)

अनुवादक - सय्यद मोहियुद्दीन फ़रीद एम् ए

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَ لَآ اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ وَ مَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۱۰﴾ وَ اَنْفِقُوْا مِنْ مَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُوْلَ رَبِّ لَوْ لَآ اَخَّرْتَنِيْٓ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ فَاَصَّدَّقَ وَ اَكُنْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۱۱﴾

(अल-मुनाफिकून 10-11)

सय्यदना हज़रत अक्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम फ़रमाते हैं :

"कैसा यह ज़माना बरकत का है किसी से जाने नहीं मांगी जाती और यह ज़माना जान देने का नहीं बल्कि धन को अपनी क्षमता अनुसार खर्च करने का है।" (अल-हकम क़ादियान 10 जुलाई 1903)

इसी प्रकार कश्ती-ए-नूह में आप फ़रमाते हैं :

"प्रत्येक व्यक्ति की सच्चाई उस की खिदमत से पहचानी जाती है प्रियो : यह दीन के लिए और दीन के उद्देश्य के लिए खिदमत का समय है इस समय को ग़नीमत समझो कि फिर कभी हाथ नहीं आएगा।"(कश्ती-ए-नूह, रूहानी ख़ज़ायन भाग 19 पृष्ठ 83)

उपस्थित श्रोताओं को ज्ञात हो चुके हैं कि आज के इस बाबरकत जलसे में विनीत को आदेश हुआ है कि "बा-शराह चन्दा और निज़ामे वसीयत की महत्वता और बरकात" के विषय पर लोगों के समक्ष कुछ अनुरोध करूँ।

हज़रात! अभी विनीत ने सूरह अल-मुनाफिकून की आयत 10 और 11 की तिलावत की है इसका हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रह्महुल्लाह तआला के द्वारा किया गया अनुवाद कुछ इस प्रकार है।

"हे लोगो जो ईमान लाए हो! तुम्हें तुम्हारे धन और तुम्हारी औलाद अल्लाह के ज़िक्र से लापरवाह न कर दे और जो ऐसा करें तो ये हैं जो नुकसान उठाने वाले हैं। और खर्च करो उसमें से जो हमने तुम्हें दिया है इससे पहले कि तुम में से किसी की मृत्यु हो जाए तो वह कहे हे मेरे रब! काश तू ने मुझे थोड़ा समय और दिया होता तो मैं अवश्य सदका देता और पवित्र लोगों में से हो जाता।"

हज़रात! अल्लाह तआला ने इन आयात में एक महत्वपूर्ण पहचानने का बिंदु बयान फ़रमाया है कि इन्सान पर जब इस दुनिया से जाने का समय आता है। तो उस समय उसको अवश्य यह एहसास बेचैन कर देता है कि काश! जिंदगी उसको कुछ ओर मोहलत दे देती और वह अल्लाह तआला के रास्ते में अपनी प्रिय वस्तुओं को निसंकोच खर्च करने को तैयार हो जाता और चाहता कि जो कुछ मेरे पास है उसको मैं अल्लाह की राह में खर्च कर दूँ और किसी प्रकार (अल्लाह की) प्रसन्नता प्राप्त कर लूं।

यहां यह प्रश्न अत्यधिक महत्वपूर्ण है कि क्यों इंसान को उस अंतिम समय में अल्लाह के मार्ग पर खर्च करना याद आता है। और वह क्या भेद है जो अचानक उस पर प्रकट हो जाता है कि अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने का एक उत्तम और सफल नुस्खा अल्लाह तआला के मार्ग में अपने धन को कुर्बान करना ही है। जैसा कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी इंसान की उसी अवस्था का नक्शा इन शब्दों में खींचा है फ़रमाया :

हज़रत अबू हुरेरा रज़ी अल्लाह अन्हु से रिवायत है कि एक व्यक्ति नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में प्रस्तुत हुआ और कहने लगा कि हे रसूल-लुल्लाह! किस प्रकार के सदका में सबसे अधिक सवाब है? आपने फ़रमाया कि " सदका में जिसे तुम सेहत के साथ कमी होने के बावजूद करो, तुम्हें एक ओर तो फ़कीरी का डर हो और दूसरी और मालदार बनने की आशा हो और (उस सदका खेरात) में सुस्ती नहीं होनी चाहिए कि जब जान हलक तक आ जाए तो उस समय तुम कहने लगो कि अमुक के लिए इतना और अमुक के लिए इतना है, जबकि वह तो अमुक का हो चुका होगा। (सही बुखारी, किताब अल-ज़ाकत)

अल्लाह रबुल इज्ज़त जो अपने बन्दों की प्रत्येक अवस्था को जानता है अपने बंदों की अंतिम वक्त की इच्छाओं से निजात दिलाने के लिए ही तो उस ने हमदर्दी के रूप में फ़रमाया है।

وَ مَاذَا عَلَيْهِمْ لَوْ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَ اَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ بِهِمْ عَلِيْمًا ﴿۴۰﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ ۚ وَ اِنْ تَكُ حَسَنَةً يُّضٰعِفْهَا وَ يُؤْتِ مِنْ لَّدُنْهُ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۴۱﴾

(अन-निसा :40-41)

अर्थात : और उन पर क्या मुश्किल थी। यदि वह अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान ले आते और खर्च करते उसमें से जो अल्लाह ने उन्हें प्रदान किया और अल्लाह उन्हें अच्छी तरह जानता है। नि:संदेह अल्लाह थोड़ा सा भी अत्याचार नहीं करता। और यदि कोई नेकी की बात हो तो वह उससे बढ़ाता है और अपनी ओर से भी बहुत बड़ा इनाम प्रदान करता है।

अत: खुशकिस्मत वही व्यक्ति है जो सवाब का अधिकारी भी है। जो उस वक्त जब अल्लाह तआला ने उसे सेहत दी हुई है और शक्ति भी प्रदान की है उसी समय धन संबंधित विषयों में अल्लाह तआला से अपना हिसाब साफ रखता है ताकि उसका अंजाम बिल्खेर (अंत भला) हो सके अन्यथा कुरआन-ए-मजीद ने जिस प्रकार नक्शा खींचा है मौत की अवस्था में जाकर धन की कुर्बानी की चिंता करना नुकसान उठाने वालों की आदत है और अपने आप को हलाकत में डालने का कारण है।

हज़रात! धन की कुर्बानी की महत्वता का अनुमान तो इसी बात से लगाया जा सकता है कि अल्लाह तआला ने स्वयं अपने पवित्र कलाम में सबसे महत्वपूर्ण इबादत नमाज़ के आदेश के साथ ही धन की कुर्बानी के आदेश ज़ाकात को वर्णन फ़रमाया है। मानो जितना नमाज़ की ओर बल दिया उतना ही अल्लाह तआला के मार्ग में धन खर्च करने पर भी बल देते हुए आदेश दिया है। क़ुरआन-करीम में धन की कुर्बानी का वर्णन दो प्रकार के चन्दों की सूरत में है प्रथम फ़र्ज़ और लाज़िम चन्दा द्वितीय तोई चन्दा (अपनी इच्छा से दिया जाने वाला चन्दा)। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि

वसल्लम ने फ़र्ज़ चन्दा अर्थात ज़कात को इस्लाम धर्म की एक मूल वस्तु बताया है। ज़कात के अन्यथा धर्म की आवश्यकताओं के दृष्टिगत ख़ुदा तआला के नबी की आवाज़ पर लब्बैक कहते हुए धन की कुर्बानी में बढ़-चढ़कर भाग लेने वाले लोग ही वास्तव में इबादत का हक अदा करने वाले और अल्लाह तआला की प्रसन्नता को प्राप्त करने वाले होते हैं।

ख़ुदा तआला के मार्ग में अपने धन को प्रस्तुत करने की आवाज़ और तहरीक पर प्रत्येक नबी के समय में उसके मानने वालों ने लब्बैक कहा है। लेकिन आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा ने जिस शान से उस आवाज़ पर लब्बैक कहा है उसकी याद आज भी बल्कि क्यामत तक दिलों को गरमाती रहेगी।

हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों से ज्ञात होता है कि इस्लाम का विश्वव्यापी वैभव इमाम मेहदी, मसीह माऊद के द्वारा होगा। इस महान कार्य के लिए इस युग में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने हम से धन की कुर्बानी करने को कहा है। इसलिए ज़कात के फ़र्ज़ चन्दे देने के साथ आपने वसीयत के निज़ाम के अधीन आमद और जायदाद से धन की कुर्बानी करने की तहरीक फ़रमाइ और इसमें शामिल होने वाले प्रियों को जन्नत की खुशखबरी दी। जो अहमदी वसीयत के निज़ाम में शामिल नहीं वह पुरुष हो या महिला उस के लिए भी ज़रूरी है कि अपनी आमद का सोलवा भाग (अर्थात चन्दा-आम) अस उद्देश्य को पूरा करने के लिए दिया करें और उस के साथ साथ वसीयत के निज़ाम में शामिल होने कि इच्छा भी रखे और दुआ करे ताकि उस कि बरकत से नियम अनुसार वसीयत के निज़ाम में शामिल होने कि तोफीक मिल जाए।

बा-शराह चन्दा (मानक अनुसार) देने की बरकत से अल्लाह तआला निज़ामे वसीयत में शामिल होने की तोफ़ीक देता है। इस लिए मैं अपने भाषण में कर्म अनुसार बा-शराह चन्दा और फिर निज़ामे वसीयत की महत्वता और बरकात के संबंध में कुछ अनुरोध प्रस्तुत करूंगा।

ज़ाकात देने के बाद सिलसिला अहमदिया मे शामिल प्रत्येक पुरुष और महिला को शराह के अनुसार अपनी आमद का सोलवा भाग अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए और सिलसिला के हित में देना अनिवार्य है। हज़रत अक्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने लाज़मी चन्दे के संबंध में फ़रमाया है कि :

"इस महान सिलसिला में दाखिल होने के लिए वही योग्य है जो हिम्मत भी बड़ी रखता हो और भविष्य के लिए एक ताज़ा और सच्चा वादा ख़ुदा तआला से कर ले कि जहां तक संभव होगा निरंतर प्रत्येक महीने में अपने धन से धर्म के सामने आने वाली कठिनाइयों को दूर करने के लिए प्रयास करता रहेगा।"

बा-शराह चन्दा की तहरीक और जुनून दिल में पैदा करने के लिए भेद को समझने की आवश्यकता है और उस को न समझने के नतीजा ही में समस्त कंजूसी और धन की कुर्बानी करने से बचने के बहाने पैदा हो जाते हैं और वह भेद यह है कि अल्लाह तआला कई बार फ़रमाता है कि اَنۡفِقُوۡا مِمَّا رَزَقۡنٰكُمۡ (अल-बक़रह 255) खर्च करो उसमें से जो हमने तुम्हें दीया है। इसका विवरण इस सीमित समय में संभव नहीं केवल वर्तमान युग के अवतार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम के शब्दों में ही वर्णन करता हूं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं।

"यह स्पष्ट है कि तुम दो वस्तुओं से प्रेम नहीं कर सकते और तुम्हारे लिए संभव नहीं कि धन से भी प्रेम करो और ख़ुदा से भी। केवल एक से प्रेम कर सकते हो। अत: खुश-किस्मत वे व्यक्ति है कि ख़ुदा से प्रेम करें और यदि कोई तुम में से ख़ुदा से प्रेम करके उसके मार्ग में धन खर्च करेगा तो मैं विश्वास रखता हूं कि उसके धन में भी दूसरों से अधिक बरकत दी जाएगी क्योंकि धन स्वयं नहीं आता बल्कि ख़ुदा की इच्छा से आता है। (मज्मूआ इश्तेहारात भाग 3, पृष्ठ 497) बस इस बात को समझना समय की महत्वपूर्ण ज़रूरत है।

हज़रात! अल्लाह रब्बुल इज्ज़त का भी अपने बंदों से एक अजीब व्यवहार है कि स्वयं ही कुछ माल, दौलत प्रदान की और स्वयं ही फ़रमाया कि उसी माल से कुछ दो तो तुम्हें उसका अधिक इनाम बढ़ा चढ़ा कर देने का वादा भी फ़रमाया है।

जहां भी ख़ुदा तआला ने अपने बंदों को अपने मार्ग में खर्च करने के लिए कहा है वहां यह कहा है कि

وَ يَسۡـَٔلُوۡنَكَ مَاذَا يُنۡفِقُوۡنَ ؕ قُلِ الۡعَفۡوَ ؕ (अल-बक़रह 220)

वे तुझसे (यह भी) पूछते हैं कि वह क्या खर्च करें। उनसे कह दे कि (आवश्यकताओं में से) जो भी बचता है। और जब अल्लाह तआला ने अपने दी हुई वस्तुओं का वर्णन फ़रमाया है तो

وَ اللّٰهُ يَرۡزُقُ مَنۡ يَّشَآءُ بِغَيۡرِ حِسَابٍ (अल-बक़रह 213)

कि और अल्लाह जिसे चाहे बिना किसी हिसाब के जीविका प्रदान करता है।

मानो अल्लाह तआला देते समय तो असीमित देता है और जब स्वयं अपनी राह में खर्च करने का आदेश देता है तो उसकी एक सीमित सी मात्रा निर्धारित फ़रमा देता है जिसको इस्लाम के माली निज़ाम की परिभाषा में 'शरह' कहते हैं और कोई पाग़ल ही होगा जो अपनी आमद को जिसकी प्राप्ति में उसकी व्यक्तिगत विशेषताओं से कहीं अधिक उस ख़ुदा की कृपा साथ रही है उसके एक छोटे से भाग को लौटाने की मांग पर कुछ आनाकानी करे और ज्ञानी ख़ुदा से अपनी वास्तविक आमद छुपा जाए।

इस विषय पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं।

"यह विचार आ जाए कि यदि मेरा टैक्स इतना बनता है, उसमें इतनी कमी करूं तो मेरे पास इतनी बचत हो जाएगी। विचार आना तो कोई बात नहीं, अल्लाह तआला नहीं पकड़ता परंतु यदि उस पर अमल किया, टैक्स चोरी किया, हुकूमत को नुकसान पहुंचाया या सच नहीं बोला, अपने चंदों में अपनी आमद को कम लिखवाया तो फिर अल्लाह तआला पकड़ता है और बहुत सारे ऐसे तजुर्बे हैं, बहुत सारे लोगों की उदाहरण है जिनकी फिर आमदनी भी इस प्रकार धीरे-धीरे कम हो जाती है और उसी स्थान पर आ जाती है जिस पर वह अपनी आमदनी दिखा रहा होता है, अल्लाह तआला के समक्ष कुर्बानी में भी और हुकूमत का हक अदा करने में भी। फ़रमाया तो फिर ये गुनाह दंडनीय है। अतत: जब दिल निर्णय कर लेता है तो उसके लिए शरारत और धोखा करता है।" (ख़ुत्बा जुमा 26

अक्टूबर 2018)

इस प्रकार हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह तआला फ़रमाते हैं। "मेरे सारे जीवन का तजुर्बा है कि जो लोग माली कुर्बानी में ख़ुदा तआला से साफ मामला नहीं रखते और संयम के साथ अपने माल में से अल्लाह और उसके दीन के लिए हिस्सा अलग नहीं करते उनके अन्य कार्य भी बिगड़ जाते हैं, घरों का सुकून खत्म हो जाता है, कारोबार में नुकसान उठाने लगते हैं औलाद की तरबियत में बिगाड़ आ जाता है और आमतौर पर इंसान के जीवन से बरकत उठ जाती हैं।

( माली-निज़ाम भाग 1 पृष्ठ 96)

हज़रात! समय अनुसार यहाँ एक ईमान को मज़बूत करने वाली घटना का वर्णन करना बहुत दिलचस्प होगा कि अल्लाह तआला किस प्रकार अपने मार्ग में सच्चे दिल के साथ बा-शराह चन्दा देते हैं उनको कैसे प्रगति देता है।

हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाह तआला अपने ख़ुत्बा जुमा दिनांक 26 मार्च 2010 में फ़रमाते हैं- "एवरी कोस्ट के शहर बास्सम (Bassam) के एक नए अहमदी श्रीमान यागो एल्डो (Yago Alido) साहिब को जामाअती माली निज़ाम के अधीन चन्दा की शराह और तरतीब बताई गई तो अगले दिन वह स्वयं अपनी तनख्वाह के हिसाब से शराह के अनुसार चन्दा आम, चन्दा वक्फे जदीद और तहरीके जदीद देने आ गए जो कि 50 पाउंड तक बन रहा था। यह उनके लिए बहुत बड़ी रकम है। यह उनका अहमदीयत कबूल करने के पश्चात पहला चन्दा था। बताने वाले वर्णन करते हैं कि अभी हमारे मोअल्लिम उस चन्दे की रसीद काट रहे थे कि उन साहब को एक दोस्त का फोन आया कि वह कर्ज़ा जो मैंने तुमसे 2 वर्ष पूर्ण लिया था कल आकर मुझसे वसूल कर लो।

यागो एल्डो (Yago Alido) साहिब हैरान होकर बताने लगे कि यह व्यक्ति कर्ज़ लेकर ऐसा व्यवहार करता था कि मुझे उस ओर से कर्ज़ की वसूली की आशा ही नहीं थी और यह केवल और केवल चन्दा देने के कारण से हुआ है। और केवल यही नहीं के यह कर्ज़ प्राप्त हो गया बलकि कुछ दिनों के बाद उनको सरकार की ओर से एक पत्र मिला कि नए वर्ष से न केवल आप की नौकरी में 1 ग्रेड बढ़ाया गया है बल्कि आपकी तनख्वाह में 50 परसेंट की बढ़ोतरी भी हो गई है। इसलिए जब उन्होंने अपने नए वर्ष वाली तनख्वाह प्राप्त की तो तुरंत अपना चन्दा शराह के अनुसार दुगना कर दिया। और अब न केवल वह अपना मासिक चन्दा दे रहे हैं बल्कि मस्जिद की साफ-सफाई खूबसूरती आदि के लिए भी अपनी जेब से काफी खर्च कर रहे हैं। और सब को यह जोश के साथ कहते हैं कि यह सब जो ख़ुदा तआला के उपकारों की बारिश है उसके मार्ग में माली कुर्बानी करने के नतीजा में है। देखें किस प्रकार अल्लाह तआला नए आने वालों को भी مِنۡ حَيۡثُ لَا يَحۡتَسِبُ (अत्तलाक : 4) का न केवल नज़ारा दिखता है बल्कि فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗۤ اَضۡعَافًا كَثِيۡرَةً (अल-बक़रह : 246) का वादा भी है जिसको नकद नकद पूरा कर रहा है।

हज़रात! बा-शराह चन्दा देना वास्तव में अल्लाह और उस के रसूल की इताअत करना है। बा-शराह चन्दा अदा करने के संबंध में कभी-कभी कमज़ोर दिल में यह विचार आता है कि हमने अधिक खर्च किया है। जिसको वास्तव में हम खर्च समझ रहे होते हैं अल्लाह तआला फ़रमाता है कि वास्तव में यह खर्च नहीं है बल्कि मेरी प्रसन्नता चाहने के लिए मेरे कहे उद्देश्य के लिए जो ख़र्च तुमने किया है वह वास्तव में खर्च नहीं बल्कि तुम्हारे अकाउंट में जमा हो गया है और जब तुम्हें उसकी आवश्यकता होगी अल्लाह तआला उसे वापस लौटा देगा।

हदीस कुदसी है जिस में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, अल्लाह तआला के हवाले से फ़रमाते हैं। अल्लाह तआला फ़रमता है। हे आदम के पुत्र! तू अपना खज़ाना मेरे पास जमा करके निश्चिंत हो जा। न आग लगने का भय, और न किसी चोर की चोरी का डर, मेरे पास रखा हुआ खज़ाना मैं पूरा उस दिन तुझे दूंगा जब तू सबसे ज्यादा उसका मोहताज होगा। (कन्ज़ुल आमाल, भाग 6 पृष्ठ 352 हदीस 16021)

हज़रात! हम कितना धन अल्लाह तआला की राह में खर्च कर रहे हैं इस बात की अहमियत नहीं। अहमियत इस बात की है कि क्या हम ख़ुदा तआला के भेजे हुए नबी की इताअत करते हुए शराह के अनुसार अल्लाह तआला की राह में खर्च करते हैं या नहीं। एक अमीर आदमी लाखो रुपये ख़ुदा के मार्ग खर्च करता होगा लेकिन यदि उसका यह चन्दा शराह के अनुसार नहीं होगा तो उससे अधिक सवाब का अधिकारी वह ग़रीब आदमी होगा जिसकी कुर्बानी जबकि धन के हिसाब से कम है लेकिन उसने इताअत का उत्तम मापदंड दिखाते हुए शराह के अनुसार अपनी आमदनी का हिस्सा ख़ुदा तआला की राह में प्रस्तुत किया। ख़ुदा तआला को धन की आवश्यकता नहीं वह तुम्हारे दिलों की अवस्था का निरीक्षण कर लेता है उसकी रूह और कुर्बानी का जज़्बा है जिसे देखकर वह हमें नवाज़ता है।

आज संसार में अमीर और ग़रीब लोग अपने धन को जल्द से जल्द दुगना, तिगुना करने के लिए दिलचस्प और ललचाने वाले विज्ञापनों को देखकर अपनी कमाई को फाइनेंस कंपनियों में लगा देते हैं और अधिकतर अपनी असल पूंजी भी खो बैठते हैं। परंतु ख़ुदाई जमाअतें सदा अपनी कमाई को अल्लाह के आदेश के अधीन खर्च करते हुए अल्लाह की प्रसन्नता की आशा रखती हैं। हज़रत मुस्लेह मौऊद राज़ी अल्लाह अन्हु फ़रमते हैं-

"हम सदा अपनी जमाअत के लोगों से यह मांग किया करते हैं और सदा मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम भी यही मांग फ़रमाया करते थे कि ख़ुदा के लिए अपनी जानो और धन को वक्फ कर दो। परंतु प्रतियेक ज़माना में यह मापदंड बदलता चला गया। पहले दिन जब लोगों ने उस आवाज़ को सुना तो वह आ गए और उन्होंने कहा हमारी जान और हमारा धन प्रस्तुत है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने उनके उत्तर को सुना और फ़रमाया तुम नमाज़े पढ़ा करो, रोज़े रखा करो, और अहमदीयत को फैलाया करो, और अपने धन में से कुछ न कुछ दीन की खिदमत के लिए दे दिया करो चाहे रुपया का धेला ही क्यों न हो। लोगों ने यह सुना तो उनके दिलों में आश्चर्य पैदा हुआ कि यह काम तो बहुत मामूली था। फिर हमें यह क्यों कहा गया था कि आओ और अपनी जाने और अपने धन कुर्बान कर दो। कुछ समय गुज़रा तो लोगों को फिर आवाज़ दी गई कि जान और धन की कुर्बानी का समय आ गया है। लोग फिर अपनी जाने और अपने धन लेकर प्रस्तुत हुए तो उन्हें कहा गया कि तुम रुपए में से एक पैसा चन्दा दे दिया करो। इस पर कुछ समय बीता तो मरकज़ की

और से फिर आवाज़ बुलंद हुई कि आओ अपनी जाने और अपने धन दीन की खिदमत के लिए वक्फ कर दो। यह हालत इसी प्रकार बढ़ती चली गई। धेले से आवाज़ शुरू हुई थी फिर पैसे पर पहुंची। फिर दो पैसे पर पहुंची। फिर कहा गया अब तो पैसों का प्रश्न नहीं तीन पैसे दिया करो। तीन पैसे देते रहे तो कहा गया अब चार पैसे दिया करो। फिर समय आया तो कहा गया अपनी संपत्तियों और अपनी आमदनीयों की वसीयत कर दो उस वसीयत में भी कम से कम दसवें भाग की मांग की गई। फिर कहा गया के दसवां भाग बहुत कम है तुम्हें नोवां भाग देने का प्रयास करना चाहिए। और जिन को ख़ुदा तआला ने सामर्थ्य प्रदान किया है वह इससे भी बढ़कर कुर्बानी करें। वह लोग जिनको ख़ुदा ने समझने वाला दिल और गौर करने वाली बुद्धि दी है वह तो जानते हैं कि हमको कदम कदम इस उद्देश्य के करीब किया जा रहा है जिसके बिना कौमें क़भी जिंदा नहीं रह सकती... जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम के इरशाद का वास्तविक प्रकटन हो तो उस लापरवाही पर जो समय व्यतीत होने की कारण से तुम से हो चुकी हो तुम में बहुत से लोग यह सोचने लग जाएंगे कि अभी जान और धन की कुर्बानी का अर्थ रुपया पर एक आना चन्दा देना या डेढ़ आना चन्दा देना है। और जान की कुर्बानी का अर्थ सप्ताह या महीने में से एक डेढ़ घंटा समय देने से है। जबकि वह समय एक आना या डेढ़ आना चंदा देने का नहीं होगा। न अपने समय में से घंटा डेढ़ घंटा समय देने का होगा बल्कि सारे का सारा धन और सारी की सारी जान ख़ुदा ताआला के मार्ग में कुर्बान कर देने का वक्त होगा... उस समय आना डेढ़ आना चंदा देने का प्रश्न नहीं होगा। बल्कि अपने सारे माल और सारी संपत्ति से एक क्षण के अंदर अलग होने का प्रश्न होगा।"

(अल-फ़ज़ल 10 अप्रैल 1962 खिताब 1946 की मजलिस मुशावरत के अवसर पर)

अत: जैसे-जैसे समय माली कुर्बानी की मांग करेगा और खुलफ़ा का इरशाद होगा हमें लब्बैक कहते हुए अपनी जान और धन की कुर्बानी ख़ुदा तआला के मार्ग में प्रस्तुत करते चले जाना होगा।

अब विनीत अपने भाषण के दूसरे भाग निज़ामे-वसीयत की बरकात की और आता है।

हज़रात! यह ख़ुदा तआला की तकदीर है कि अब दुनिया का भविष्य अहमदीयत से जोड़ दिया गया है और जिस निज़ाम ने विश्वव्यापी दर्जा प्राप्त करना हो उसमें दुनिया के निज़ाम को चलाने के लिए एक पूर्ण कार्य पद्धती का भी मौजूद होना आवश्यक है। इसी नए-निज़ाम का नाम आज" निज़ाम-ए-वसीयत" है।

इसीलिए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़िअल्लाह अन्हु इसकी वास्तविक व्याख्या करते हुए फ़रमाते हैं।

"अत: वर्तमान युग की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए खातामुल-खुलफा का कर्तव्य था कि वह इस्लामी सिद्धांतों के अनुसार कोई स्कीम तैयार करता और संसार से उस मुसीबत का अंत कर देता। इस्लामी स्कीम का महत्वपूर्ण सिद्धांत यह हैं सब लोगों की आवश्यकताओं को पूरा किया जाए। परंतु इस कार्य को पूरा करते समय व्यक्तिगत और परिवारिक जीवन की उत्तम भावनाओं को नष्ट न होने दिया जाए। यह कार्य मालदारों से स्वैच्छिक सेवा के रूप में लिया जाए ज़बरदस्ती कार्य न लिया जाए। यह निज़ाम राष्ट्रीय न हो बल्कि अंतरराष्ट्रीय हो। ख़ुदा तआला के नबी ने नए निज़ाम की बुनियाद 1905 ई में रख दी थी। और वह अल-वसीयत के द्वारा रखी थी। यदि इस्लामी हुकूमत ने समस्त संसार को खाना खिलाना है समस्त संसार को कपड़े पहनाने हैं समस्त संसार के रहने के लिए घरों की व्यवस्था करनी है। समस्त संसार के रोगियों के इलाज की व्यवस्था करनी है। समस्त संसार के अंधकार को दूर करने के लिए शिक्षा की व्यवस्था करनी है। तो ज़रूरी है की हकूमत के हाथ में इससे अधिक धन होना चाहिए। जितना पहले समय में हुआ करता था। इसलिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने अल्लाह तआला के आदेश के अधीन घोषणा फ़रमाई कि इस समय में ख़ुदा तआला ने उन लोगों के लिए जो वास्तविक जन्नत प्राप्त करना चाहते हैं यह व्यवस्था फ़रमाई है कि वह अपनी प्रसंता से अपने धन का कम से कम दसवां भाग और अधिक से अधिक तीसरा भाग की वसीयत कर दें। तात्पर्य नए निज़ाम का आधार 1910 में रूस में नहीं रखा गया। न वह भविष्य में किसी वर्ष में मौजूदा युद्ध के पश्चात यूरोप में रखी जाएगी बल्कि संसार को आराम देने वाले प्रत्येक व्यक्ति के जीवन को बेहतर बनाने वाली और साथ ही दीन की रक्षा करने वाले नए-निज़ाम कि बुनियाद1905 में का क़ादियान में रखी जा चुकी है। अब दुनिया को किसी नए-निज़ाम की आवश्यकता नहीं है।"

(माली निज़ाम पृष्ठ 40 और 41)

हज़ारात! यह हमारी खुशकिस्मती है कि ऐसे बा-बरकत निज़ाम का भाग बनने का अवसर अल्लाह तआला ने केवल अपनी कृपा से हमको दिया है। और यह कितनी दुर्भाग्यपूर्ण बात होगी कि हम दावा नह्नो अन्सरुल्लाह (कि हम अल्लाह के दीन के मददगार हैं) का करें और एक उत्तम तहरीक़ में शामिल न हो कर अपने दावा को ग़लत साबित करें। निज़ामे-वसीयत में शामिल होने का कितना बल दिया गया है इसका अनुमान आपको हज़रत मुस्लेह मौऊद राज़ी अल्लाह अन्हु के इन शब्दों से पता चल जाएगा। आप फ़रमाते हैं :

"मोमिन के ईमान की परीक्षा इसमें है कि वह उस निज़ाम में दाखिल हो और ख़ुदा तआला की विशेष कृपा प्राप्त करें कि केवल मुनाफिक़ ही इस निज़ाम से बाहर रहेगा। जैसा कि किसी पर ज़बरदस्ती नहीं परंतु साथ ही यह भी फ़रमाया कि उसमें तुम्हारे इमानों की परीक्षा है। यदि तुम जन्नत लेना चाहते हो तो तुम्हारे लिए आवश्यक है कि तुम यह कुर्बानी करो। हां यदि जन्नत का मूल्य तुम्हारे दिल में नहीं तो अपने धन अपने पास रखो हमें तुम्हारे धन की आवश्यकता नहीं।

(माली-निज़ाम पृष्ठ 42)

अत: जमाअत के लोगों को नसीहत करते हुए फ़रमाते हैं: "जब वसीयत का निज़ाम मुकम्मल होगा तो केवल तबलीग़ ही उससे न होगी बल्के इस्लाम के उद्देश्य के लिए प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकताओं को उससे पूरा किया जाएगा और कष्ट और तंगी को दुनिया से मिटा दिया जाएगा। इंशाल्लाह। अनाथ भीख नहीं मांगेगा। विधवा लोगों के आगे हाथ नहीं फैल आएगी। बे-सामान परेशान नहीं फिरेंगे। क्योंकि वसीयत बच्चों की मां होगी, युवाओं का पिता होगी, महिलाओं का सुहाग होगी, और बिना किसी ज़बरदस्ती के मोहब्बत और दिल्ली प्रसंता के साथ भाई भाई की उसके द्वारा सहायता करेगा और उसका देना बिना किसी बदला के

होगा। बल्कि प्रत्येक देने वाला ख़ुदा तआला से बेहतर बदला पाएगा। न अमीर घाटे में रहेगा न ग़रीब, न राष्ट्र, राष्ट्र से लड़ेगा बल्कि उसका एहसान सब संसार पर फैला होगा अत: तुम जल्दी से जल्दी वसीयत करो ताकि जल्दी से जल्दी नया निज़ाम बने और वह मुबारक दिन आ जाए जबकि चारों और इस्लाम और अहमदीयत का झंडा लहराने लगे। इसके साथ ही मैं उन सब दोस्तों को मुबारकबाद देता हूं जिन्हें वसीयत करने की तौफ़ीक हासिल हुई और मैं दुआ करता हूं कि अल्लाह तआला उन लोगों को भी जो अभी तक इस निज़ाम में शामिल नहीं हुए तौफ़ीक दे कि वह भी इस में भाग लेकर दीन की और दुनिया की भी बरकात से मालामाल हो सकें।" (माली-निज़ाम, पृष्ठ 42)

हज़रत अक्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम फ़रमाते हैं कि : "यह मत विचार करो कि यह केवल अकल्पनीय बातें हैं। यह उस ख़ुदा का इरादा है जो ज़मीन और आसमान का बादशाह है।" इन ज़ोरदार शब्दों से निज़ामे वसीयत का नक्शा आंखों के सामने आ जाता है। इस पवित्र निज़ाम की बुनियाद रखते समय यह शब्द हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम के पवित्र कलम से निकले और आज 113 वर्ष पूरे होने पर विशेषकर खिलाफ़्ते-ख़ामिसा के बा-बरकत समय में निज़ामे वसीयत की अंतरराष्ट्रीयता को देख कर दिल अल्लाह तआला के इस्तुती और प्रशंसा से भर जाता है अत: हम जो हिंदुस्तान में रहने वाले हैं जहां इस उच्च कोटि के निज़ामे-वसीयत की बुनियाद पड़ी हमें अपना मुहासबा करने की आवश्यकता है कि हमने किस सीमा तक अपने वादा को निभाया है और ख़लीफा की आवाज़ पर लब्बैक कहते हुए उस भविष्यवाणी को पूर्ण करने का हिस्सा बने और आपने फ़रमाया कि : इस वसीयत को लिखने में जिसका धन सदा सहायता देने वाला होगा उसको सदा सवाब होगा और खेअरात-जारिया (निरंतर दिया जाने वाला दान) के आदेश में होगा।

इस अवसर से लाभ उठाते हुए विनीत लोगों का ध्यान इस बात की ओर भी आकर्षित करवाना चाहता है कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस इच्छा को प्रकट करके अंतरराष्ट्रीय जमआत को अपने पैग़ाम के द्वारा निज़ामे-वसीयत की ओर धयान दिलाते हुए निज़ामे-वसीयत पर 100 वर्ष पूरे होने के अवसर पर 2005 ई में फ़रमाया कि :

"अत: जैसा कि मैंने कहा है इस निज़ाम में पूरे जोश के साथ शामिल हों। जो स्वयं शामिल है वह अपनी बीवी बच्चों को और दूसरे भाइयों को भी इसमें शामिल करने का प्रयास करें और ख़ुदा के मसीह की आवाज़ पर लब्बैक कहते हुए कुर्बानीयों के उत्तम मापदंड स्थापित करें। मैं अपनी इच्छा को पहले भी एक अवसर पर प्रकट कर चुका हूं के 2008 ई में जब ख़िलाफत अहमदिया को कायम हुए इंशाल्लाह 100 वर्ष पूरे हो जाएगे तो दुनिया के प्रत्येक देश में प्रत्येक जमाअत में जो कमाने वाले लोग हैं जो चन्दा देते हैं उनमें से कम से कम पचास परसेंट ऐसे होंगे जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम के उस महान निज़ाम में शामिल हो चुके हों और यह जमाअत के लोगों की ओर से अल्लाह तआला के समक्ष एक तुच्छ भेंट होगी जो जमाअत ख़िलाफत के 100 वर्ष पूरे होने पर शुकराना के रूप में अल्लाह तआला के समक्ष प्रस्तुत कर रही होगी।"

और फ़रमाया "यह भी याद रखें कि निज़ामे-वसीयत का निज़ामे-ख़िलाफत के साथ एक गहरा संबंध है क्योंकि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम को अपनी वफात की खबरों पर जहां जमाअत की तरबियत की चिंता हुई और आपने माली कुर्बानी के निज़ाम को आरंभ फ़रमाया वहां आपने जमाअत को यह खुशखबरी भी दी कि मेरी वफात की खबरों से दुखी मत हों क्योंकि ख़ुदा ताअला इस सिलसिला को बर्बाद नहीं करेगा बल्कि एक दूसरी कुदरत का हाथ सब को थाम लेगा अत: पत्रिका अल-वसीयत में निज़ामे ख़िलाफत की भविष्यवाणी करना यह प्रमाणित करता है कि उन दो निज़ामों का आपस में गहरा संबंध है और जिस प्रकार निज़ामे वसीयत में शामिल होकर इंसान संयम के उत्तम मापदंड अपने अंदर पैदा कर सकता है उसी प्रकार ख़िलाफते अहमदिया की आज्ञाकारिता का जुआ गर्द पर रखने से उसकी रूहानी जिंदगी का अस्तित्व है। माली कुर्बानी का निज़ाम भी ख़िलाफत के साये में ही मज़बूत हो सकती है अत: जब तक ख़िलाफत कायम रहेगी जमाअत के माली कुर्बानियां के मापदंड बढ़ते रहेंगे और दीन भी तरक्की करता चला जाएगा। अत: मेरी दुआ है कि अल्लाह तआला आपको इन दोनों निज़ामों से जोड़े रखे। जो अभी तक निज़ामे-वसीयत में शामिल नहीं हुए अल्लाह तआला उनको तोफ़ीक दे कि वह इसमें भाग लेकर दीनी और दुनियावी बरकात से मालामाल हो सके और अल्लाह करे कि प्रत्येक अहमदी सदा निज़ामे-खिलाफत से श्रद्धा और प्रेम का संबंध कायम रखें और खिलाफत के लिए सदा प्रयास करता रहे और अपनी संपूर्ण प्रगतियों के लिए ख़िलाफत की रस्सी को मज़बूती से थामे रखें। अल्लाह तआला प्रत्येक अहमदी को अपनी ज़िम्मेदारियां समझने और उनको पूरा करने की तौफ़ीक दे और सब को अपनी प्रसन्नता के मार्गों पर चलाते हुए हम सबका अंत भला करें। आमीन।

( अल-फ़जल इंटरनेशनल, 29 जुलाई से 11 अगस्त 2005)

इस निज़ाम में शामिल होने की बरकात का बहुत ही संक्षेप शब्दों में ज़िक्र करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम फ़रमाते हैं "बहिशती जीवन पाओगे" यद्यपि यह शब्द आखिरत में बहिशत पाने या दिए जाने का वादा और सौदा नहीं है। बल्कि निज़ाम में शमूलियत के द्वारा इसी संसार में तुरंत बहिशती जीवन उन लोगों को मिल जाएगा और कुरआन-ए-मजीद हम लोगों को बताता है कि यदि किसी को इसी जीवन में जन्नत का स्वाद प्राप्त न हुआ हो तो वह आख़रत में भी इस नेअमत से वंचित उठाया जाएगा। क्या कोई ऐसा व्यक्ति हो सकता है जो सब कुछ जानने के बावजूद इस संसार में ही बहिशती जीवन पाने का इच्छुक न हो। कौन ऐसा दुर्भाग्यशाली होगा जो इस नेअमत से वंचित रहना पसंद करेगा। ख़ुदा करे कि कोई भी ऐसा न हो।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने हर संभव रूप में निज़ामे-वसीयत की बरकात और अहमियत को स्पष्ट करने के साथ-साथ उसमें शामिल होने पर बल दिया और उस नसीहत का पूरा पूरा हक अदा कर दिया। आपने यह सब कुछ अत्यधिक दर्द और प्रेम से वर्णन फ़रमाया और पत्रिका अल-वसीयत के अंतिम वाक्य लिखे।

"बहुत से ऐसे हैं कि वह संसार से प्रेम करके मेरे आदेश को टाल

देंगे हम तो बहुत जल्द संसार से जुदा किए जाएंगे तब अंतिम समय में कहेंगे

هذا ما وعد الرحمٰن وصدق المرسلون والسلام علیٰ من التبع الهدیٰ۔

(यह वह है जिसका रहमान ख़ुदा ने वादा किया था और नबियों ने जिस का सत्यापन किया। सलामती हो जिस ने हिदायत की पैरवी की।)

कितनी कष्ट और पीड़ा का प्रकटन है कि उन लोगों पर जो नबी के हाथ पर बेअत का अहद करने के बावजूद उसके इस ताकीदी आदेश को टाल देंगे। ख़ुदा करे कि कोई अहमदी ऐसा बदकिस्मत न निकले।

निज़ामे वसीयत के लिए बनाये जाने वाले बहिशती-मक़बरे को यह विशेषता प्राप्त है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने तीन बार बड़ी ही सारगर्भित और दर्द भरी दुआओं के साथ दिल से इसके लिए दुआए कीं हैं।

"मैं दुआ करता हूं कि ख़ुदा इस में बरकत दे और इसी को बहिशती मक़बरा बना दे और यह इस जमाअत के पवित्र दिल लोगों का स्वप्न-गृह हो जिन्होंने वास्तव में धर्म को दुनिया पर श्रेष्ठ कर लिया तथा संसार का प्रेम त्याग दिया और ख़ुदा के हो गए। तथा पवित्र परिवर्तन अपने अंदर पैदा कर लिया तथा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा की तरह वफादारी तथा सच्चाई का नमूना दिखलाया। आमीन या रब्बुल आलमीन।

फिर मैं तीसरी बार दुआ करता हूं। कि हे मेरे कादिर करीम! हे ग़फ्फार, ग़फूरु-रहीम ! (क्षमावन एवं दयावान) तू केवल उन लोगों को इस जगह कब्रों की जगह दे जो तेरे इस फ़रिस्तादा (प्रेषित) पर सच्चा इमान रखते हैं तथा कोई निफाक़ (शंका) एवं व्यक्तिगत स्वार्थ एवं कुधारणा, संदेह अपने अंदर नहीं रखते। जैसा कि हक़, इमान एवं आज्ञाकारी का है बजा लाते हैं तथा तेरे लिए तेरे मार्ग में अपने हृदय से जान समर्पित कर चुके हैं। जिन से तू संतुष्ट है तथा जिनको तू जानता है कि वह पूर्णत: तेरे प्रेम में खोए गए, सदा तेरे प्रेषित से निष्ठा एवं पूर्ण सत्कार एवं स्पष्ट ईमान के साथ प्रेम तथा जीवन बलिदान का संबंध रखते हैं। आमीन या रब्बुल-आलमीन !

(अल-वसीयत पृष्ठ 17 से 19)

अल्लाह तआला हम सब को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम की अपेक्षाओं के अनुसार इमान और इताअत के उच्च मापदंड प्रस्तुत करने की तौफ़ीक प्रदान करें ताकि हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम की दुआओं के वास्तविक वारिस बन सकें। आमीन।

☆ ☆ ☆

**पृष्ठ 4 का शेष**

पूर्व रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दि थी वह मैं ही हूं। अल्लाह तआला के वार्तआलाप और रहमान ख़ुदा के सम्बोधन इस स्पष्टता और निरन्तरता से इस बारे में हुए कि संदेह का कोई स्थान न रहा। प्रत्येक वह्यी जो होती थी वह फौलादी कील के सामान दिल में धंसती थी और अल्लाह तआला के यह समस्त वार्तआलाप ऐसी महान भविष्यवाणियों से भरे हुए थे कि प्रकाशमान दिन के सामान वह पूरे होते थे। उन की निरन्तरता, अधिकता तथा विलक्षण शक्तियों के चमत्कार ने मुझे इस बात के इक़रार के लिए विवश कर दिया कि यह उसी एक ख़ुदा का कलाम है जिस का कलाम क़ुरआन करीम है और मैं यहां तौरात और इंजील का नाम नहीं लेता क्योंकि तौरात और इंजील तहरीफ (धार्मिक पुस्तकों में परिवर्तन) करने वालों के हाथों से इतनी परिवर्तित हो चुकी हैं कि अब उन पुस्तकों को ख़ुदा का कलाम नहीं कह सकते। अत: ख़ुदा की वह वह्यी जो मुझ पर उतरी ऐसी विश्वसनीय और अकाट्य है कि जिस के द्वारा मैंने अपने ख़ुदा को पाया और वह वह्यी न केवल आसमानी निशानों के द्वारा विश्वास के स्तर तक पंहुची बल्कि उस का प्रत्येक भाग जब ख़ुदा तआला के कलाम क़ुरआन करीम के सम्मुख रखा गया तो उस के अनुसाार सिद्ध हुआ। और उस को साबित करने के लिए बारिश की तरह आसमानी निशान बरसे। उन्हीं दिनों में रमज़ान के महीने में सूरज और चाँद को ग्रहण भी लगा जैसा कि लिखा था कि उस महदी के समय में रमज़ान के महीने में सूरज और चाँद को ग्रहण होगा और उन्हीं दिनों पंजाब में बहुत ताऊन (प्लेग) फैली जैसा कि क़ुरआन करीम में यह ख़बर मौजूद है और पूर्व नबियों ने भी यह ख़बर दी है कि उन दिनों में बहुत मरी पड़ेगी। ऐसा होगा कि कोई गाँव और शहर उस मरी से बाहर नहीं रहेगा। अत: ऐसा ही हुआ और हो रहा है।" (तज़्किरतुश्शहादतैन, रूहानी ख़ज़ाइन भाग 20 पृ० 3-4)

☆ ☆ ☆

**पृष्ठ 1 का शेष**

है तो हम से पहले मरेगा और अवश्य ही हम से पहले मरेगा क्योंकि झूठा है। किन्तु जब इन पुस्तकों को संसार में प्रकाशित कर चुके तो फिर अति शीघ्र स्वयं ही मर गए और इस प्रकार उनकी मृत्यु ने फ़ैसला कर दिया कि झूठा कौन था, परन्तु फिर भी यह लोग नसीहत ग्रहण नहीं करते। अत: क्या यह बहुत बड़ा चमत्कार नहीं है कि मुहियुद्दीन लखूके वाले ने मेरे बारे में मृत्यु का इल्हाम प्रकाशित किया वह स्वयं मर गया। मौलवी इस्माईल ने प्रकाशित किया, वह मर गया, मौलवी ग़ुलाम दस्तगीर ने एक पुस्तक लिख कर अपनी मृत्यु से पहले मेरी मृत्यु हो जाने को बड़ी धूम धाम से प्रकाशित किया वह मर गया, पादरी हमीदुल्लाह पेशावरी ने मेरी मृत्यु के बारे में दस महीने का समय रख कर भविष्यवाणी प्रकाशित की वह मर गया, लेखराम ने मेरी मृत्यु के बारे में तीन साल की अवधि की भविष्यवाणी प्रकाशित की वह मर गया।

(तोहफा गोलड़विया, रूहानी ख़ज़ाइन जिल्द 17 पृष्ठ 45)

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 9 का शेष

दिखावे के तौर पर इबादत और अरकान-ए-इस्लाम नहीं अदा करना चाहिए बल्कि यथार्थ रूप से उन्हें अदा करना चाहिए) "इसलिए यह बातें और ये भ्रम जादू की तरह काम करते हैं। वे ऐसे समय यह नहीं सोचते कि हम वह सच्चा और यथार्थ ईमान पैदा करना चाहते हैं जो इन्सान को गुनाह की मौत से बचा लेता है और इन रस्मोरिवाज के पाबन्द लोगों में वह बात नहीं। उनकी नज़र ज़ाहिर पर है और वास्तविकता से अनभिज्ञ हैं। उनके हाथ में छिलका है सार नहीं " (मल्फ़ूज़ात जिल्द-6 पृ.237-239) अत: मुसलमान ज़ाहिरी अमल तो करते हैं लेकिन यथार्थ सार उनमें नहीं है। तक़्वा नहीं है।

इस बात को बयान करते हुए कि अगर मुसलमान कहलाने वालों के कर्म नेक कर्म हैं तो फिर उनके पाक और नेक परिणाम क्यों नहीं निकलते।

आप फ़रमाते हैं कि:- यह लोग (अर्थात् मुसलमान) समझते नहीं कि हम में कौन सी बात इस्लाम के ख़िलाफ़ है। हम 'ला इलाहा इल्लल्लाहो' कहते हैं और नमाज़ें भी पढ़ते हैं और रमज़ान के दौरान रोज़े भी रखते हैं और ज़कात भी देते हैं" (अर्थात् यह कि जो ग़ैर अज़ जमाअत मुसलमान कहते हैं कि हर बात तो हम इस्लाम के अनुसार कर रहे हैं, कोई ऐसी बात तो है नहीं कि तुम्हारे साथ जुड़ के हम ज़्यादा अच्छी तरह इस्लाम की हक़ीक़त को समझ जाएँ, क्योंकि 'ला इलाहा इल्लल्लाहो' हम भी कहते हैं, नमाज़ें हम भी पढ़ते हैं, रोज़े हम भी रखते हैं, ज़कात भी हम देते हैं। आप फ़रमाते हैं कि केवल यही कुछ नहीं) फ़रमाया कि "मगर मैं कहता हूँ कि इनके सारे काम नेक कामों के रंग में नहीं हैं केवल एक छिलका की तरह हैं जिनके अन्दर कोई यथार्थ सार नहीं। अन्यथा अगर ये आमाले सालिहा (अर्थात् नेक काम) हैं तो फिर इनके अच्छे और नेक परिणाम क्यों नहीं निकलते। नेक काम तो तब हो सकते हैं कि वे हर प्रकार के फ़साद और मिलावट से पाक हों। लेकिन उनमें यह बातें कहाँ हैं " मैं कभी विश्वास नहीं सकता कि एक आदमी मोमिन और मुत्तक़ी हो, नेक काम करने वाला हो और वह सच्चों का दुश्मन हो। हालाँकि यह लोग हम को काफ़िर और नास्तिक कहते हैं और ख़ुदा तआला से नहीं डरते। मैंने अल्लाह तआला का क़सम खाकर बयान किया कि मुझको अल्लाह तआला ने मुझे अवतार बनाकर भेजा है। यदि अल्लाह तआला की कुछ महानता उनके दिल में होती तो वे इन्कार न करते और इससे डर जाते कि हम ख़ुदा तआला के नाम को बदनाम करने वाला ठहरें। लेकिन यह तब होता जब उनमें ख़ुदा तआला पर सच्चा और असल ईमान होता और वे क़यामत(अर्थात् व्यापक हिसाब-किताब के दिन) से डरते और لَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ (ला तक़्फ़ु मा लैसा लका बिही इल्म) पर उनका व्यवहार होता। "(मल्फ़ूज़ात जिल्द-1 पृ. 343) अर्थात् वह बात न करो जिसका तुम्हें ज्ञान नहीं।

इस बात को स्पष्ट करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि मसीह मौऊद के आने का उद्देश्य आन्तरिक और बाह्य फ़ित्नों से इस्लाम को बचाना है और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी इसी बात की भविष्यवाणी की थी।

आप फ़रमाते हैं कि:-

"आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आख़िरी युग के बारे में यह भविष्यवाणी की थी कि उस समय दो प्रकार के फ़ित्ने होंगे, एक आन्तरिक दूसरा बाह्य। आन्तरिक फ़ित्ना यह होगा कि मुसलमान सच्ची हिदायत पर क़ायम न रहेंगे और शैतानी अमल-दख़ल के नीचे आ जाएँगे जुआ, व्यभिचार, मद्यपान और हर प्रकार के दुराचार में पड़कर क़ुरआन की शिक्षाओं को छोड़ देंगे और ख़ुदा तआला द्वारा ठहराए गए निषिद्ध कामों की परवाह न करेंगे, नमाज़ रोज़ा छोड़ देंगे और ख़ुदाई आदेशों का अपमान किया जाएगा और क़ुरआन के आदेशों के साथ हँसी ठट्ठा किया जाएगा "(ये तो अन्दरूनी फ़ित्ना है कि मुसलमानों की अमली हालत बिगड़ गयी है, ज़्यादातर मुसलमानों की यही हालत है, आप देख लें मुसलमान दुनिया में किस तरह एक-दूसरे पर अत्याचार कर रहे हैं) और बाह्य फ़ित्ना यह होगा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पवित्र चरित्र पर झूठे आरोप लगाए जाएँगे "(और यह भी आजकल बहुत बढ़कर हो रहा है) और हर प्रकार के दिल दु:खाने वाले हमलों से इस्लाम की तौहीन और उसे मिटाने की कोशिश की जाएगी। मसीह की ख़ुदाई मनवाने के लिए और उसकी सलीबी लानत पर ईमान लाने के लिए हर प्रकार के षड़यन्त्र और बहाने किए जाएँगे। अत: चोटी के इन दोनों आन्तरिक एवं बाह्य फ़ित्नों को दूर करने के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को साथ ही ख़ुदा की ओर से यह ख़ुशख़बरी मिली कि आप की उम्मत में से एक महापुरुष पैदा किया जाएगा जो बाह्य फ़ित्ना और सलीबी मज़हब की वास्तविकता को तोड़ देने वाला होगा और इसी दृष्टि से वह मसीह इब्नि मरियम होगा और आन्तरिक फूटों और गुमराहियों को दूर करके हिदायत की सच्ची राह पर क़ायम करेगा इसलिए महदी कहलाएगा। इसी ख़ुशख़बरी की ओर आयत "व आख़रीना मिनहुम" में भी संकेत है।" (मल्फ़ूज़ात जिल्द-1 पृ. 444-445)

अत: हमने जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को माना है तो हमारे अल्लाह तआला से सम्बन्ध और तक़्वा के स्तर ऊँचे दूसरे मुसलमानों से ऊँचे होने चाहिएँ। आपने जो आमतौर पर दूसरे मुसलमानों का नक़्शा खींचा है वह हमारा नक़्शा नहीं होना चाहिए। हमारी अमली हालत दूसरों से अच्छी होनी चाहि। हमारे काम हमेशा नेक और अल्लाह तआला की इच्छानुसार होने चाहिएँ। अत: इस बात को बयान करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:-

"आदमी को बैअत करके केवल यही न मानना चाहिए कि यह सिलसिला हक़ है (अर्थात् यह कि सच्चाई को मान लिया बस काफ़ी हो गया) और इतना मानने से उसे बरकत होती है।"

फ़रमाते हैं कि:- केवल मानने से अल्लाह तआला ख़ुश नहीं होता जब तक अच्छे अमल न हों। कोशिश करो कि जब इस सिलसिला में दाख़िल हुए तो नेक बनो, मुत्तक़ी बनो, हर एक बुराई

से बचो, यह समय दुआओं से गुज़ारो, रात और दिन ख़ुदा के समक्ष गिड़गिड़ाने में लगे रहो। जब आज़माइश का समय होता है तो ख़ुदा तआला का क्रोध भी भड़का हुआ होता है। ऐसे समय में दुआ करो और ख़ुदा के हुज़ूर गिड़गिड़ाओ और सदक़: ख़ैरात करो, ज़बानों को नम्र रखो, इस्तिग़फ़ार में लगे रहो, नमाज़ों में दुआएँ करो। कहावत मशहूर है कि मिन्नतें करता हुआ कोई नहीं मरता। केवल मानना इन्सान के काम नहीं आता। यदि इन्सान मानकर फिर उसकी परवाह न करे तो उसे कोई फ़ायदा नहीं होता। फिर इसके बाद यह शिकायत करनी कि बैअत से फ़ायदा नहीं हुआ व्यर्थ है। ख़ुदा तआला केवल बातों से ख़ुश नहीं होता।"

अमले सालेह (नेक काम) क्या है, इसकी परिभाषा करते हुए फ़रमाया कि:-

"क़ुरआन शरीफ़ में अल्लाह तआला ने ईमान के साथ अमले सालेह भी रखा है। अमले सालेह उसे कहते हैं जिसमें थोड़ा सा भी फ़साद न हो। याद रखो कि इन्सान के अमल पर हमेशा चोर पड़ा करते हैं। वे (चोर) क्या हैं" (अमल पर किस तरह के चोर पड़ते हैं) दिखावा। (जब इन्सान दिखावे के लिए कोई काम करता है तो उजब यह है कि वह अमल करके अपने आप में ख़ुस होता है) इसको उजब कहते हैं) और तरह-तरह के दुराचार और गुनाह जो उससे होते हैं उनसे कर्म ख़राब हो जाते हैं। फ़रमाया कि "अमल-ए-सालेह" वह है जिसमें अत्याचार, अहंकार, दिखावा, घमंड और मानवजाति के अधिकारों का हनन करने का विचार तक न हो जैसे परलोक में इंसान नेक कर्म के द्वारा बचता है वैसे ही दुनिया में भी बचता है (अर्थात परलोक में भी अच्छे कर्म जो हैं उन्हीं के कारण बचाव का सामान होगा) अच्छे नेक कर्म होंगे तो अल्लाह तआला प्रसन्न होगा और इनाम देगा इसी प्रकार दुनिया में भी अगर नेक कर्म होंगे तो बहुत सी दुनिया की परेशानियों और कष्टों से इंसान बच जाता है। फरमाया कि अगर एक आदमी भी घर भर में नेक कर्म करने वाला हो तो सब घर बजता रहता है। समझ लो कि जब तक तुम में अच्छे कर्म न हो केवल स्वीकार करना फायदा नहीं करता। एक डॉक्टर नुस्खा लिख कर देता है तो उससे यह अर्थ होता है कि जो कुछ इसमें लिखा है वह लेकर उसे पिए, (प्रयोग करे) अगर वह इन दवाओं का प्रयोग न करे और नुस्खा लेकर रख छोड़े तो उसे क्या लाभ होगा। अब इस समय तुमने तौबा की है अब भविष्य में ख़ुदा तआला देखना चाहता है कि इस तोबा से अपने आप को तुमने कितना साफ किया। अब ज़माना है कि ख़ुदा तआला संयम के द्वारा फर्क करना चाहता है। बहुत लोग हैं जो ख़ुदा पर आरोप लगाते हैं और अपने आप को नहीं देखते। इंसान के अपने दिल के अत्याचार ही होते हैं अन्यथा अल्लाह तआला रहीम और करीम है। फरमाया कि कुछ लोग ऐसे हैं कि उनको गुनाह की खबर होती है और कुछ ऐसे कि उनको गुनाह की खबर भी नहीं होती इसीलिए अल्लाह तआला ने हमेशा के लिए इस्तग़फ़ार को अनिवार्य ठहराया है हमेशा इस्तग़फ़ार करते रहना चाहिए कि इंसान हर एक गुनाह के लिए चाहे वह स्पष्ट हो या छुपा हुआ चाहे उसे ज्ञान हो या न हो और हाथ और पांव और ज़वान और नाक और कान और आंख और सब प्रकार के गुनाहों से इस्तग़फ़ार करता रहे, अर्थात कोई भी ऐसी चीज़ न हो ऐसा कर्म न हो या शरीर का उस प्रकार प्रयोग न हो जिससे गुनाह होता हो। इसलिए इस्तग़फ़ार करो ताकि शरीर का हर भाग गुनाहों से बचा रहे।

फरमाया- आजकल आदम अलैहिस्सलाम की दुआ पढ़नी चाहिए और वह क्या दुआ है कि-

رَبَّنَا ظَلَمْنَا أَنْفُسَنَا وَإِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ

(अल आराफ़ 24) यह दुआ पहले ही स्वीकार हो चुकी है। लापरवाही से जीवन व्यतीत मत करो जो व्यक्ति लापरवाही से जीवन नहीं गुज़ारता कदापि उम्मीद नहीं कि वह किसी बड़ी कठिनाई में गिरफ्तार हो जाए (अर्थात अल्लाह तआला के भय से जीवन गुज़ारने वाला कभी बहुत बड़ी मुश्किल और मुसीबत में गिरफ्तार नहीं होता।) फरमाया कि कोई आपदा बगैर हुकुम के नहीं आती जैसे मुझे यह दुआ इलहाम हुई- رَبِّ كُلُّ شَيْءٍ خَادِمُكَ رَبِّ فَاحْفَظْنِيْ وَانْصُرْنِيْ وَارْحَمْنِيْ फरमाते हैं कि "हमारा ईमान है कि सब उस (ख़ुदा) के हाथ में है चाहे किसी माध्यम से करे चाहे बिना माध्यमों के।" (मल्फ़ूज़ात जिल्द-4 पृष्ठ 274-276 एडिशन 1985 प्रकाशित बर्तानिया) अल्लाह तआला कोई माध्यम बनाता है या नहीं बनाता अल्लाह तआला के हाथ में सब कुछ है इसलिए यह दोनों दुआएं पढ़नी चाहिए इसकी और तवज्जो दें और समझें।

अत: हर अहमदी को, हम में से हर एक को अपना निरीक्षण करना चाहिए कि अगर हमने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को माना है तो क्या इस मानने और बैअत का हक़ अदा करने वाले भी हैं? अधिकतर मेरे निरीक्षण में यह बात सामने आती है मैंने देखा है कि हम में से कई ऐसे हैं जो नमाज़ भी पूरी तरह से नहीं पढ़ते, नमाज़ों की ओर ध्यान नहीं देते, इस्तग़फ़ार की ओर तो कुछ को बिल्कुल ध्यान नहीं, एक दूसरे के अधिकारों को पूरा करने की ओर ध्यान नहीं, अगर यह हालत है तो हम किस प्रकार कह सकते हैं कि हम नेक कर्म करने वाले हैं, हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत का हक अदा करने वाले हैं। दूसरे न मानकर गुनाहगार हो रहे हैं जिन्होंने नहीं माना और इन्कार किया वह गुनहगार हो रहे हैं और हम मानकर भी अपने अंदर परिवर्तन पैदा न करके, एक वादा करके फिर उसे पूरा न करने के कारण गुनहगार हो रहे हैं। अत: बड़ी फिक्र से हम में से हर एक को अपना निरीक्षण करने की आवश्यकता है। अल्लाह करे कि हम केवल रस्म के तौर पर मसीह मौऊद दिवस मनाने वाले न हों बल्कि मसीह मौऊद को स्वीकार करने का हक अदा करने वाले हों और हर प्रकार के आंतरिक एवं बाह्य फ़ित्नों से बचने वाले हों। अल्लाह तआला हमेशा हमें अपनी सुरक्षा में रखे और हर बला और मुश्किल से बचाए।

☆ ☆ ☆